उपन्यास

रजनी एक कथा अनकही

चन्द्र शेखर कपूर

BlueRoseONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Chander Shekhar Kapoor 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7825-945-6

Cover Design: Ajay Dhyani
Typesetting: Sagar

First Edition: May 2026

प्रस्तुत उपन्यास ''रजनी'' एक कथा अनकही अपनी आदरणीय बहन श्रीमती रजनी कक्कड़ के सादर चरण कमलों में समर्पित करता हूँ।

चन्द्र शेखर कपूर

अपनी बात

रजनी – एक कथा अनकही

जिस तरह उर्दू भाषा के लिए कहावत है कि यह भाषा दिल्ली में जन्मी, अलीगढ़ में खेली–कूदी और लखनऊ में जवान हुई। इसी वक्तव्य को लेकर यह उपन्यास रजनी भी उपरोक्त उर्दू भाषा से मिलता–जुलता इतिहास है।

रज्जो यानी रजनी का जन्म दिनांक–05–05–2022 को इलाहाबाद में हुआ। जब मैं अपनी पुत्री दीप्ती के यहाँ गया हुआ था। वहाँ पर यकायक रज्जो का जन्म हुआ। कहानी तो किसी और रूप में थी परन्तु लिखते–लिखते इस कहानी ने एक नया मोड़ ले लिया। एक तरफ तो मैं कैंसर रोग से ग्रस्त था, इस पर प्रयागराज में मेरे को वर्टिगो बीमारी होने से, जो दिनांक 12–05–2022 को इस बीमारी से ग्रस्त हो गया। जिसके कारणवश रज्जो को लिखना रोकना पड़ा। इसके पश्चात रज्जो फिर से उर्दू भाषा की तरह जैसे वो दिल्ली से अलीगढ़ आई। उसी प्रकार से ठीक दो वर्ष के अन्तराल के बाद दिनांक 26–10–2024 को फिर से लखनऊ आकर अपना स्थान बना लिया क्योंकि अब मैं वर्टिगो से स्वस्थ हो चला था।

पूर्णरूप से रज्जो ने पुनः जन्म ले लिया। दिनांक 17–07–2025 में पलेनो (टेक्सास) यू0एस0ए0 जब मैं अपने पुत्र पुनीत के यहाँ चार महीने के लिए गया। वहाँ पर रज्जो ने प्रतिदिन अपना अभ्यास करते हुए दिनांक 07–09–2025 को विश्राम लखनऊ में किया।

रज्जो से 'रजनी' कैसे पड़ा, यह भी एक रोचक कथा है। अगस्त, 2024 में जब मेरी बहन, जिसका नाम 'रजनी' है। उन्होंने मेरे इस लेखन को रज्जो के पात्र को सहारा और मुझे अपना वक्तव्य दिया कि 'रज्जो' को नया नाम दे दिया 'रजनी– एक कथा'। इस प्रकार से 'रजनी– एक कथा' का पुनः जन्म हो गया।

लेखक

चन्द्र शेखर कपूर

(श्रद्धांजलि)

स्वर्गीय अशोक कुमार कक्कड़, प्रोफेसर

(02.12.1942 – 27.09.2023)

डी0ए0वी0 कॉलेज,

श्रीनिवासपुरी, दिल्ली विश्वविद्यालय

नई दिल्ली।

लेखक परिचय

मेरा जन्म 31.12.1951 में छीपीवाड़ा, चांदनी चौक, दिल्ली में अपने नाना के यहां हुआ था। मुझे बचपन से ही साहित्य पढ़ना और लेखन कार्य में रूचि थी जिसका कारण था जो कि मुझे अपने पिता से प्राप्त हुआ था। मेरे आदरणीय पिता जी स्व0 श्री मोतीलाल कपूर जी, जो कि एक माने–जाने परिवार कटरा नील, चांदनी चौक दिल्ली के रहने वाले थे। पिता साहित्य से तो ताया जी स्व0 श्री शंकर लाल कपूर रंगमंच से जुड़े रहे। चाचा स्व0 श्री राधे लाल कपूर, कवि के रूप में एक प्रतिष्ठित कवि हुये। परिवार की यशस्वी सांस्कृतिक परंपराओं को आगे बढ़ाना मेरी विशेषता रही। इस पारिवारिक सांस्कृति पृष्ठभूमि में मैंने बचपन से रंगमंच में कहानी लेखन का जो सिलसिला शुरू किया, वह बैंकिग सेवा के जिम्मेदार पदों पर रहते हुए कभी बाधित और अबाधित भले ही रहा हो, इन सांस्कृतिक क्षेत्रों के प्रति मेरी आत्मीयता में कोई

भी कमी, कभी नही आयी इसी पारिवारिक संस्कृति में मेरे छोटे भाई श्री राकेश कपूर कवि के रूप में एक उभरता सितारा है। रजनी, एक कथा अनकही मेरा पहला उपन्यास है। मेरी प्रकाशित कहानी संग्रह नई दिशा एवं राय साहब के कपड़े प्रकाशित हुये है। आशा है कि आपको यह पसंद आयेगा।

लेखक

चन्द्र शेखर कपूर

निवास– गोमती नगर, लखनऊ

उत्तर प्रदेश– 226010

मो0नं0 9415014903

पात्र–परिचय

क्र0सं0	पात्र	परिचय
1–	श्री गुलाबराय जी (जमींदार)	ग्राम–बछरावा, तहसील–रायबरेली।
2–	श्रीमती सावित्री देवी	गुलाबराय जी की पत्नी।
3–	सूरज, साकेत, सागर	गुलाबराय जी के पुत्र।
4–	श्री गणेश प्रसाद (गणेश)	किसान बछरावां।
5–	श्रीमती रुकमणी देवी	पत्नी श्री गणेश प्रसाद।
6–	रज्जो (रजनी)	पुत्री गणेश प्रसाद।
7–	रज्जन	पुत्र गणेश प्रसाद।
8–	पण्डित रमाशंकर मिश्रा (शास्त्री जी)	शिक्षक संगीत एवं नृत्य (बछरावां)।
9–	श्रीमती लक्ष्मी देवी	शास्त्री जी के पन्ती
10–	सारिका	शास्त्री जी की पुत्री।
11–	समर	शास्त्री जी का पुत्र।
12–	रामअवतार	जमींदार जी का अर्दली।
13–	मुन्शी जी	जमींदार जी के मुन्शी।

14—	श्रीमती आरती देवी	बछरावां।
15—	माया	पुत्री श्रीमती आरती देवी
16—	श्री फूलचन्द जी	जमींदार, कुन्दनगंज।
17—	श्रीमती रतना	फूलचन्द जी की पत्नी।
18—	सुश्री सुमन	फूलचन्द जी की पुत्री।
19—	सुखराम	कुन्दनगंज का पटवारी।
20—	राकेश	सुखराम जी का पुत्र।
21—	दादा—दादी	फूलचन्द जी के माता—पिता।
22—	पण्डित विष्णुदत्त शर्मा	शास्त्री जी के मित्र।
23—	श्री रामचन्द्र वर्मा	गुलाबराय जी के मित्र (शिक्षक, लखनऊ विश्वविद्यालय)।
24—	रमानाथ	सूरज का सहपाठी।
25—	छाया	रजनी की सहपाठिन।
26—	भास्कर, प्रभाकर	रजनी के सहपाठी।
27—	श्री कृष्ण मुरारी शुक्ला	शिक्षक, भातखण्डे।
28—	श्री कृष्ण प्रसाद गुप्ता	छाया के पिता।
29—	श्रीमती राधिका देवी	प्रभाकर की माँ।

30–	डाक्टर श्री दीनबन्धु पाण्डेय	माया के ससुर।
31–	डाक्टर श्रीमती शीलवती	माया की सास।
32–	डाक्टर संकल्प पाण्डेय	माया के पति।

भाग—1

रज्जो के पिता गणेश प्रसाद, गांव बछरावां, जिला रायबरेली, उत्तर प्रदेश के रहने वाले थे। उनकी पुत्री रज्जो बहुत ही सुशील एवं समझदार व्यक्तित्व की थी। शुरू से ही चंचल स्वभाव की थी। छोटी—छोटी बातें या दिल को चुभने वाली बातें, वो दिल पर लगा लेती थी। जब तक उस बात का निवारण नहीं हो जाता था, वो व्याकुल ही रहती। वैसे उसका नाम रजनी रखा गया था परन्तु सब उसे प्यार से रज्जो ही कहकर पुकारते।

नाचने और संगीत का शौक बचपन से ही रज्जो को था। गाँव भर में इसके लिए बहुत चर्चा होती। इसलिए उसके पिता गणेश प्रसाद ने रज्जो को नृत्य और संगीत की शिक्षा के लिए गाँव में ही पण्डित रमाशंकर मिश्रा जी के यहाँ नृत्य के लिए शिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रवेश करवा दिया, जिससे वो अपनी पढ़ाई के साथ—साथ यह शिक्षा भी ग्रहण कर लेगी। पण्डित रमाशंकर मिश्रा को सभी गाँव में शास्त्री जी कह कर पुकारते थे। यह गाँव के अन्य बच्चों को भी यह शिक्षा

देते। अपनी शिक्षा के साथ–साथ रज्जो नृत्य और संगीत में भी निपुण हो चली थी।

उसी गाँव का जमींदार गुलाब राय जी का ज्येष्ठ पुत्र सूरज भी संगीत की शिक्षा ग्रहण करने के लिए आता। शास्त्री जी ने उसे तबला, मृदंग, हारमोनियम और अन्य वाद्य यन्त्रों की शिक्षा देनी शुरू कर दी। सूरज भी रज्जो के समय ही संगीत की शिक्षा के लिए प्रतिदिन आता। धीरे–धीरे उन दोनों में मित्रता सी हो चली थी। दोनों की उम्र अभी मात्र 14 वर्ष ही थी। इस आयु में प्रत्येक मनुष्य के मन और भाव विचलित हो जाते हैं। वे दोनों भी अब घनिष्ठ मित्र हो चले थे। दोनों के हृदय में एक अजीब सा आकर्षण पैदा हो चला था। दोनों एक ही वक्त आते और एक ही वक्त बाते करते हुए घर की ओर जाते। सूरज ने जबसे रज्जो को देखा तब से उसके मन में यह आकर्षण धीरे–धीरे प्रेम में बदलता नजर आने लगा। दोनों परस्पर अब एक–दूसरे को चाहने लगे थे। उनकी गतिविधियों को शास्त्री जी और उनकी पत्नी श्रीमती लक्ष्मी देवी को भी कई दिनों से अनुभूति हो चली थी।

रज्जो के पिता के पास चार बिस्वा जमीन थी, उसी पर वो खेती करके घर का गुजारा करते। घर के चार सदस्यों का गुजारा कर लेते। रज्जो का छोटा भाई रज्जन, जो उससे करीब दो वर्ष छोटा था, वो स्कूल के साथ–साथ पिता का खेत में हाथ बंटाता। रज्जो की माँ सारा दिन घर के कार्य में ही व्यस्त रहती। वो सोचती उसका ब्याह कब और कैसे होगा। कौन उस नचनियां

के साथ शादी करेगा। रज्जो ने अपने गुरू जी के साथ सारे कथकली, भारतनाट्यम आदि नृत्य शिक्षा ग्रहण करके उसमें निपुण हो चली थी।

उधर दूसरी ओर सूरज भी हारमोनियम, तबला, मृदंग एवं सितार में पारंगत हो हो चला था। दोनों की आस–पास के गाँव में उनके नृत्य और संगीत की चर्चा होने लगी थी। जो भी शास्त्री जी से मिलता, वो गर्व से सिर ऊँचा करके उनका अभिनन्दन स्वीकार करके आभार व्यक्त करते। सूरज के पिता जमींदार गुलाब राय जी एवं माता श्रीमती सावित्री देवी चाहते थे कि उनके तीनों बेटे पिता का व्यापार और खेतों के कार्य को सम्भालें। सूरज के दोनो छोटे भाई सागर और साकेत अभी छोटे थे। वो अभी छठी एवं सातवीं कक्षा में ही थे। परन्तु सूरज तो किसी और दिशा में जा रहा था। उसकी माँ सावित्री देवी एक अत्यन्त ही सुशील और समझदार औरत थी। वो भी पास ही के गाँव में जमींदार की बेटी थी। शुरू से ही उनके अन्दर अच्छे संस्कार की वजह से अच्छे विचारों ने जन्म ले रखा था। जमींदार साहब अगर कोई क्रोध में या आवेश में कुछ कह देते थे, तो वो अपनी सूझ–बूझ से उस समय बात को ढ़क लेती और बात सुलझ जाती। परन्तु वो यह जानती थी कि जमींदार जी सूरज के संगीत से अत्याधिक नाखुश थे। जब सूरज छोटा था तो उसका संगीत सीखना उनको अच्छा लगता परन्तु जैसे–जैसे वो बड़ा होने लगा, उसका यह संगीत उनको खटकने लगा। वो चाहते थे कि अब सूरज बारहवीं कक्षा पास कर चुका है और वो

व्यापार, जमीन, जायदाद और खेती–बाड़ी में सहयोग करे। जमींदार जी भी अब धीरे–धीरे उम्रदराज के होने लगे थे। परन्तु सूरज की तो दिशा ही कुछ और थी।

सूरज और रज्जो ने अब सोच लिया था कि वो जिस राह पर चल रहें हैं, वहीं पर स्थिर रह कर गुरू जी के बताये आदर्शों पर चल कर आगे के जीवन को राह देंगें। वो दोनों इसी उलझन में रहते कि कैसे वो अपने–अपने घर में माँ–बाप को यह बताएँ कि वो एक दूसरे को चाहते हैं। इसके लिए उनके पास मात्र दो विकल्प थे कि या तो वह अपने गुरू जी को कह कर उनके द्वारा कहलवा दें या वो किसी को भी बताए बगैर घर को छोड़ कर कहीं दूसरे शहर में जाकर रहने लगें। क्योंकि वो यह जानते थे कि उनको किसी न किसी नाटक कम्पनी या नौटंकी में काम मिल जायेगा।

इन्हीं सब विचारों में वे आपस में सहमत हो गए कि उनका यह दूसरा विकल्प उचित नहीं हैं, क्योंकि इस कदम से उन दोनों के परिवारों की गाँव में बदनामी और नाम खराब होगा। रज्जो यह जानती थी कि उसके पिता एक छोटे से किसान हैं। वो शायद यह सदमा सहन नहीं कर पायेंगें। माँ तो रो–रो कर अपनी जान दे देगी।

उधर सूरज था कि उसके पिताजी एक प्रतिष्ठित जमींदार हैं। आस–पास के गाँव में एक नाम है। उनकी इस प्रतिष्ठा पर एक बदनुमा कलंक लग जाएगा। वह पिता के क्रोध से अच्छी तरह से परिचित था। माँ के चंचल स्वभाव को वह जानता था। माँ तो

एक बार शायद मान भी जाएगी, परन्तु पिता को मनवाना बहुत कठिन है।

एक दिन उन दोनों ने हिम्मत करके अपने गुरूजी को स्पष्ट रूप से अपने स्नेह के बारे में बता दिया। गुरूजी ने उन दोनों को पहले बहुत समझाया कि उन दोनों का विवाह सम्पन्न नहीं हो सकता। सूरज ब्राह्मण वर्ण में आता है, तो रज्जो वैश्य समाज से आती है। सूरज के पिता एक धनी व्यक्ति हैं, उनको किसी भी धनी एवं प्रतिष्ठित परिवार से कन्या मिल सकती है।

लेकिन वो दोनों अपनी–अपनी राय पर गुरूजी से बार–बार आग्रह करने लगे और अपने निश्चय पर अडिग रहे। गुरूजी (शास्त्री जी) ने स्थिति की गम्भीरता को देखते हुए, उन्हें इस विषय पर सोचने के लिए वक्त मांगा और दोनों को समझाते हुए, यह कह कर विदा कर दिया, कहा कि आज से वे दोनों गाँव में एक–दूसरे के साथ नहीं रहेंगें और न ही किसी और से गाँव में इस विषय पर बात करेंगें। अन्यथा वो दोनों एक बहुत बड़ी मुसीबत में पड़ सकते हैं।

उन दोनों के चले जाने के पश्चात शास्त्री जी इस गम्भीर स्थिति को सोच कर उनकी मनोस्थिति उन्हें परेशान करने लगी। वो रात–दिन इसी विषय में सोचने पर मजबूर हो गए। वो दोनों को उचित सुझाव देना चाहते थे। बचपन से ही उन दोनों को संगीत और नृत्य की शिक्षा प्रदान की है। कोई भी अनुचित कदम यदि वे बच्चे उठाते हैं तो गाँव में बस एक ही चर्चा होगी कि पण्डित उमाशंकर मिश्र के ही शिष्य थे। दिन–प्रतिदिन

इस सोच ने एक विकराल रूप धारण कर लिया था। न ही वो ठीक प्रकार से खा–पी रहे थे और न ही गाँव में किसी से ठीक प्रकार से बात कर पाते। कोई जान–पहचान का मिलता तो उसको ''हाल–चाल ठीक है।'' कह कर आगे की ओर बढ़ जाते। एक बार तो जमींदार साहब का उनसे मुँह सामना हो गया। शास्त्री जी अपनी आँखें नीचीं किए आगे की ओर बढ़ने लगे, परन्तु जमींदार साहब ने उन्हें रोक कर पूछ ही लिया ''कहो, गुरूजी क्या हाल–चाल है। लड़के की संगीत शिक्षा अच्छी तरह से चल रही है।''

शास्त्री जी ने उसी वक्त उनको प्रणाम करके कहा ''अच्छा है वो।'' अब तो उसकी संगीत की शिक्षा भी समाप्त होने वाली है। उसके बारे में अब आगे की ओर सोचिएगा।''

यकायक इतनी सी बात शास्त्री जी के मुँह से अचानक से निकल गई। जमींदार जी भी शास्त्री जी के कन्धे पर हाथ रख कर ''अच्छा है, शास्त्री जी, आप अपना पारिश्रमिक घर आकर कल लेते जाना।'' और वो आगे की ओर बढ़ गए।

शास्त्री जी के मन में आया कि जमींदार जी को सूचित कर दें लेकिन डर के मारे कुछ भी कह नहीं पाए। वो आगे की ओर चल पड़े। अभी कुछ ही दूर गए थे कि रज्जो के पिता जी अपने लड़के के साथ खेत से लौटते हुए मिले। अब गुरू जी विस्मय में पड़ गए कि अब इनसे क्या कहें। खुद ही रज्जो के पिता श्री गणेश प्रसाद गुप्ता जी को रोक कर हाल–चाल लिया

और रज्जो को कल से भेजने के लिए मना किया कि अब उसकी नृत्य शिक्षा समाप्त हो गई है। गणेश जो सभी गाँव के लोग पुकारते, उन्होंने हाथ जोड़कर यह स्वीकार किया और आगे की ओर बढ़ गए।

शास्त्री जी के पांव वहीं पर रुक गए, वो वहीं पर पेड़ के नीचे बैठ गए। सोचने–समझने की शक्ति यकायक क्षीण एवं शून्य हो चली थी। दो मिनट के बाद पेड़ के नीचे विश्राम करके, उनकी मनोस्थिति अब यथासम्भव कार्य करने लगी। उन्होंने सूझ–बूझ द्वारा दोनों के पिताओं को यह कह कर टाल दिया कि उनकी शिक्षा अब समाप्त हो गई है। अब कल से आने की आवश्यकता नहीं है। जिससे अब दोनों का कल से घर से निकलना नहीं होगा और वो शायद अब शास्त्री जी के घर नहीं आयेंगें। शास्त्री जी ने पास ही के नल से पानी पिया और ठण्डी सांस लेते हुए वापस घर की ओर चल पड़े। वो सोच रहे थे कि अब उनके ऊपर से इस समस्या का निवारण हो गया।

घर में प्रवेश करते ही, अपनी पत्नी से छांछ बना कर लाने को कहा। पत्नी भी उनके चेहरे को देख कर कुछ भांप गई कि शास्त्री जी में अचानक यह बदलाव कैसा। वैसे तो कुछ दिनों से परेशान से दिखाई दे रहे थे। शास्त्री जी आंगन में चारपाई पर लेट गए। कुछ क्षणों में पत्नी एक गिलास छांछ को लेकर आई और गिलास पकड़ाते हुए पूछने लगी; क्या हुआ है, आज कोई खुशी की बात है। शास्त्री जी ने लक्ष्मी को अपने पास बैठा कर कुछ दिन पहले से आज तक की सारी घटना

को विस्तारपूर्वक पत्नी को बताया। इस पर लक्ष्मी अचम्भित हो उठी और शास्त्री जी को समझाते हुए कहा कि बला अभी टली नहीं है। अभी तो शुरू हुई है। आप उन दोनों को तो घर से आने के लिए मना करवा दिया। परन्तु वो दोनों बच्चे अभी आप पर विश्वास करते हैं और वो आगे भी आपको इस विषय पर तंग करते रहेंगें, जब तक उनकी समस्या का हल नहीं हो जाता। कहीं ऊँच–नीच हो गई तो सारा गाँव आप ही को कहेगा कि दोनों बचपन से शास्त्री जी ही के घर आते–जाते थे और इसलिए आपका नाम अलग से बदनाम होगा। हमारे बच्चों का गाँव में खेलना–कूदना बन्द हो जाएगा। ''इस पर शास्त्री जी गम्भीर हो गए और माथे पर से पसीने की बूँदे गिरने लगी।'' लक्ष्मी ने अपने पल्लू से उनके माथे को पोंछते हुए बोली ''परेशान मत होइए। अब तक जो भी आपने करा और किया है, जो आपको उचित लगा। परन्तु अब यह समस्या आप किसी तरह से अपने पल्लू से हटा कर उनके घर में डाल दीजिए; जिससे उनके घर वाले यह नहीं कहेंगे कि आपने उन्हें आगाह नहीं किया था।''

लक्ष्मी ने अपना सुझाव देते हुए कहा कि अगर बच्चे आपके पास आते भी हैं तो आप उन्हें किसी तरह से आत्मविश्वास से उनको टालते रहिए कि उचित समय आने पर इसका समाधान निकाल लेंगें और आप दोनों को उचित सुझाव देंगें। जब तक मैं सावित्री जी ओर रज्जो की माँ रुकमणी से मिल कर टटोलती हूँ।

शास्त्री जी सोचे बैठे थे कि उन दोनों बच्चों के घर न आने से समस्या हल हो जाएगी। आगे जो भी वो दोनों कदम उठायेंगें, खुद ही जिम्मेदार होंगें। परन्तु पत्नी के सुझाव ने उन्हें सोचने से मजबूर कर दिया कि समस्या का अन्त अभी नहीं हुआ है। इनको जमींदार जी की बात याद हो आई कि शास्त्री जी अपना पारिश्रमिक कल लेते जाना। बस उनको अब आगे का रास्ता निकल आया। इन्होंने अपनी पत्नी को कल जमींदार जी और गणेश जी के यहाँ चलने को कहा। शास्त्री जी और उनकी पत्नी निश्चिन्त होकर रात को सो गए कि सुबह उनको समस्या के समाधान की अगली सीढ़ी मिल जाएगी।

सुबह ही से लक्ष्मी ने घर के सारे कार्य जल्दी से समाप्त कर लिए। दोनों बच्चों सारिका और समर को स्कूल के लिए तैयार करके भेज दिया। इतने में शास्त्री जी नहा–धोकर निर्वत होकर पूजा–पाठ करके सरस्वती जी की वन्दना करते समय उन्होंने वन्दना की कि हे देवी भगवती उन्हें उचित मार्गदर्शन करें। दोनों पति–पत्नी भोजन करके जमींदार जी के घर की ओर चलने लगे। रास्ते में सूरज को आते देखा। पहले तो उन्होंने अनदेखा किया परन्तु सूरज के पूछने पर उन्होंने उससे पूछा ''क्या जमींदार जी घर पर हैं।'' इस पर पहले तो सूरज अवाक रह गया। उसे लगा जैसे आसमान सिर पर फटने वाला है। उसने 'हाँ' कह कर जल्दी से अपने खेतों की ओर चलने लगा। उसने सोचा अब वो सारा दिन खेत ही पर रहेगा और संध्या को घर

आयेगा। उसने शास्त्री जी से कहा कि वो घर पर इतला कर दें कि वह खेत गया है। संध्या को ही लौटेगा। वो नहीं चाहता था कि जब शास्त्री जी घर पर हो, तो वो भी घर हो, तो कहीं जमींदार जी उस पर क्रोध से बज्रपात न कर दें। शास्त्री जी से सूरज की मनःस्थिति की गम्भीरता को समझते हुए लक्ष्मी के साथ जमींदार जी के घर पहुँच गए। बाहर उनका अर्दली राम अवतार मिल गया। शास्त्री जी को प्रणाम करके आने का कारण पूछा। शास्त्री जी ने कहा, जमींदार को इतला कर दें उनके बारे में। राम अवतार अन्दर गया और थोड़ी देर में बाहर आकर शास्त्री जी और उनकी पत्नी को आदरपूर्वक घर के अन्दर ले गया। शास्त्री जी को बैठक में बिठा कर आदरपूर्वक लक्ष्मी को सावित्री के पास अन्दर कमरे में ले गया।

शास्त्री जी बैठक में बैठे–बैठे जमींदार जी का इन्तजार करने लगे। उनकी स्थिति उस समय ऐसी प्रतीत हो रही थी, जैसे किसी सजा के प्रार्थी हो और उनके सिर पर थानेदार का डण्डा पड़ने वाला है। वो जल्दी से सारा पानी, जो राम अवतार रख गया था, घटा–घट पी गए। माथे पर पसीने की बूँदे पोछने लगे। उनकी टांगों में कम्पन्न सा हो रहा था। डर के कारण उनको लघुशंका की सी स्थिति उत्पन्न हो गई। इसी सोच विचार में जमींदार जी अपने मुंशी जी के साथ बैठक में आए और शास्त्री जी को खुशी–खुशी अभिनन्दन करते हुए मुंशी जी को शास्त्री जी को पारिश्रमिक देने को कहा। इतने में आगे बढ़ते हुए,

उन्होंने शास्त्री से हाथ जोड़ते हुए कहा कि वो समय के अभाव के कारण इनके साथ बैठ नहीं सकते। उन्हें दूसरे गाँव को जाना है और वो अर्दली राम अवतार के साथ बाहर को निकल गए। शास्त्री जी ने उन्हें प्रणाम किया और वो ऐसी मुद्रा में हाथ जोड़े वहीं पर यथा सम्भव एक क्षण को खड़े रह गए। उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ कि जैसे थानेदार ने उनकी सजा माफ कर दी। इतने में मुंशी जी ने शास्त्री जी को कुछ क्षण बैठने को कहा। मुंशी जी कुछ देर बाद आए और शास्त्री जी को रुपये का लिफाफा पकड़ाते हुए बोले ''आपने भइया के संगीत की बहुत अच्छी शिक्षा दी है। जरूर उसका भी नाम दूर–दूर तक होगा। जैसा आपका भी है।'' शास्त्री जी ने लिफाफा कुर्ते की जेब में डाल लिया। उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ कि जैसे एक चोर की सजा समाप्त होने पर जेलर उसको कुछ पारिश्रमिक देता है और मुंशी जी से बतियाने लगे।

उधर सावित्री ने लक्ष्मी को देख कर उसको गले लगा कर अपने पास ही बैठा लिया। कुशल मंगल पूछते हुए उन्होंने सूरज की संगीत की शिक्षा के बारे में पूछा। लक्ष्मी ने सूरज की संगीत की शिक्षा के बारे में विस्तारपूर्वक बताया और कहा कि अब उसकी शिक्षा पूर्ण हो चुकी है। सावित्री जी को उत्साहित करते हुए कहा कि सूरज एक दिन बड़ा संगीत शास्त्री बनेगा, बहुत नाम कमायेगा। बहुत सी बात हुई। करीब एक घण्टा बीत गया था। लक्ष्मी ठीक मौके की तलाश में थी कि कैसे सूरज के बारे में कहे, परन्तु इससे पहले ही सावित्री ने

सूरज के विवाह के बारे में कहा कि अब सूरज बड़ा हो गया है, विवाह लायक हो गया है, जल्दी ही उसका विवाह करना पड़ेगा। लक्ष्मी ने अवसर देखते हुए तुरन्त बोली ''ठकुराईन लड़कियां तो उसको बहुत मिल जायेंगी, परन्तु सूरज की भी पहले पसन्द जान लेना आवश्यक है कि वह कैसी लड़की को पसन्द करता है।'' सावित्री ने लक्ष्मी को कहा ''लक्ष्मी तुम तो गुरू माँ हो, तुम ही पूछ कर मुझे बताना।'' इन शब्दों को सुन कर लक्ष्मी को महसूस हुआ कि जैसे बला उन्हीं के सिर पर आ गई है। लेकिन लक्ष्मी ने अपनी सूझ–बूझ और चतुराई से सावित्री को कहा कि उसे तो ऐसी लड़की चाहिए जो संगीत में रुचि रखती हो। तभी उन दोनों में आपस में प्रेम का समन्वय बना रहेगा। सावित्री जी ने लक्ष्मी की बात से सहमति दर्शाते हुए कहा कि आज सूरज जब आयेगा तो उससे जरूर पूछेगी।

लक्ष्मी शीघ्र ही जाने के लिए खड़ी होकर सावित्री जी से जाने के लिए आग्रह करने लगी और आज्ञा मांगते हुए कहा कि अच्छा चलती हूँ। सावित्री ने नौकरानी से ताजे बेसन के लड्डू लाने को कहा। सावित्री जी ने बेसन का लड्डू का डिब्बा देते हुए लक्ष्मी को फिर आने को कहा।

लक्ष्मी और शास्त्री जी एक बहुत बड़ा बोझ सिर से हल्का महसूस करते हुए घर की ओर बढ़ रहे थे। दोनों उहापोह की स्थिति लिए अपनी मनःस्थिति को टटोलने में लग गए कि शायद जो हो रहा है, वो ठीक है कि नहीं। दोनों इस आई हुई उलझन से अपने को

दूर निकालना चाहते थे। लक्ष्मी सोच रही थी कि कैसे आज उसने सावित्री जी से चतुराई से सूरज के ब्याह के बारे में बात करी। उसने सूरज के लिए संगीत से जुड़ी हुई ही उचित कन्या का विचार ठकुराईन के मन में डाल दिया था। यह सोच कर वो अपने मन को हल्का महसूस कर रही थी। शास्त्री जी भी अपनी पत्नी की सूझबूझ पर गर्व महसूस करके मन ही मन मुस्करा रहे थे।

घर आकर दोनों ने एक ठण्डी सी सांस ली। शास्त्री जी पलंग पर बैठते हुए लक्ष्मी को छांछ लाने को कहा। वो अब सोचने लगे कि अब रज्जो के घर वालों को कैसे कहें। इस पर लक्ष्मी रुकमणी के घर खुद ही जाने को कहा और शास्त्री जी को निश्चिन्त रहने को कहा। वैसे भी आप भूल मत जाना क्योंकि गणेश जी सुबह–सुबह खेत को चले जाते है। इस पर गहरी सांस लेते हुए शास्त्री जी एक ही घूंट में छांछ पी गए।

अगले दिन लक्ष्मी सुबह से ही हर काम जल्दी–जल्दी करने लगी। बच्चों को भी स्कूल के लिए तैयार कर दिया। कुछ सोच विचार में ही थी कि एकाएक शास्त्री जी ने टोक दिया ‘‘मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ।’’ इस पर लक्ष्मी जी ने शास्त्री जी को आश्वासन दिया कि वह सब कुछ सम्भाल लेगी। रुकमणी के पास जब वो जायेगी तो उससे खुल कर बात कर लेगी।

लक्ष्मी के पग जल्दी–जल्दी गणेश जी के घर की ओर चल पड़े। रास्ते में उहापोह की स्थिति मन में लिए लक्ष्मी सोच रही थी कि वो क्या और कैसे जिक्र करेगी।

रज्जो के घर पहुँच कर लक्ष्मी को दिल और दिमाग में आपस में द्वन्द सा मच रहा था तभी उसने अपने सीने पर हाथ रख कर एक गहरी सांस ली और उसने देखा गणेश जी अपने लड़के रज्जन के साथ निकल पड़े हैं। लक्ष्मी अब रुकमणी से सरलता से बात कर सकेगी। लक्ष्मी रुकमणी को आवाज देते हुए आ गई। जैसे ही रुकमणी ने लक्ष्मी की आवाज सुनी, वो अन्दर कमरे से बाहर आई और लक्ष्मी से लिपट गई। वो लक्ष्मी के आने से बहुत प्रभावित हुई। जब से रज्जो संगीत सीखने जाने लगी थी, तब से लक्ष्मी और रुकमणी में काफी घनिष्ठता हो चली थी। आंगन में बैठ गईं और बातों ही बातों में रुकमणी ने ही बात छेड़ी। अब तो रज्जो का स्कूल और संगीत की शिक्षा भी समाप्त हो गई है। अब उसके विवाह के बारे में सोचो। लक्ष्मी ने तुरन्त ही बात काटी। रुकमणी ने इस पर सहमति प्रकट करी। ''लेकिन अच्छा लड़का कहा मिलता है।'' इसके बाबू जी से कहा भी है। एक दिन खेत पर न जाकर आस–पास के गाँव जाकर रज्जो के लिए उचित लड़का ढूढ़ लाओ।''

लक्ष्मी ने तुरन्त अपनी राय दी, ''ऐसा घर का लड़का खोजो, जो नृत्य और संगीत में निपुण हो और वो ऐसी ही कन्या चाहता हो।'' लक्ष्मी ने एकाएक अपनी बात रुकमणी से कह डाली। अब तो रुकमणी भी

उसकी बात से सहमत हो चली थी। बहुत सोच–विचार करके रुकमणी ने लक्ष्मी से आहः भरते हुए कहा ''कहां मिलेगा ऐसा लड़का।'' तभी लक्ष्मी के मुँह से अचानक निकल पड़ा ''अरे अपनी सावित्री जी का लड़का सूरज, वो भी तो संगीत की शिक्षा लिए हुए है।''

बात अब निकल चुकी थी। लक्ष्मी अपने को हल्का महसूस कर रही थी। तभी घर की महाराजिन चाय–नाश्ता लेकर आई। शुक्र है, उसने कुछ भी नहीं सुना। लक्ष्मी ने संतोष की सांस ली और चाय पीकर घर जाने के लिए उठ खड़ी हुई। लक्ष्मी और रुकमणी के चेहरे पर एक नई मुस्कराहट थी।

भाग—2

सूरज और रज्जो को मिले एक महीने से ज्यादा हो गए थे। जब से शास्त्री जी के यहाँ संगीत शिक्षा में जाना बन्द हुआ था। दोनों की बेचैनी बढ़ती जा रही थी। इसका क्या हल होगा, दोनों के मन में एक ही प्रश्न आता रहता। किसी तरह से रज्जो ने अपनी माँ से आज्ञा लेकर अपनी सहेली माया से मिलने जाने को कहा। माँ ने भी सोचा, चलो बहुत दिनों से घर पर ही है, कुछ बाहर चली जाएगी तो मन लग जाएगा।

रज्जो अगले ही दिन माँ से कह कर माया के घर की ओर चल दी। वो जानती थी कि सूरज का घर रास्ते में ही पड़ता है, वो रोज सुबह खेत में जाता है। अगर मिल गया तो उसको भी शास्त्री जी के घर जाने को कहेगी। वो यह सब सोचती हुई माया के घर की ओर निकल पड़ी। रास्ते में ही सूरज अपने घर के आँगन में खड़ा अपनी माँ से कुछ कह रहा था। उसी क्षण उसकी नजर बाहर की ओर रज्जो को आते हुए दिखाई पड़ी। अचानक उसके मुँह से निकल गया, ''माँ,

रज्जो।'' माँ ने तुरन्त रज्जो की ओर देखा और उसको राम अवतार द्वारा बुलवाया।

राम अवतार को अपनी ओर आता देख रज्जो सकपका गई। उसके मन में तरह–तरह के प्रश्नों का अम्बार लग गया। वो घबरा गई कि कहीं सूरज की माँ उसे कुछ ऐसा न कह दे। तभी राम अवतार रज्जो के नजदीक आया और कहा ''बिटिया माँ जी ने आपको बुलवाया है।'' रज्जो का दिल जोर से धक–धक करने लगा और कुछ सोचे–समझे बगैर उसके पग राम अवतार के पीछे चल दिए।

माँ जी के समीप पहुँच कर रज्जो की नजरें सूरज की ओर गई और माँ जी के चरण स्पर्श किए। माँ जी उसकी नजरों को भांप गई और पूछ बैठी, ''रज्जो कैसी हो, कहाँ जा रही हो, क्या यहीं आ रही थी। (कटाक्ष करते हुए) क्या सूरज से मिलने?

इतने सारे प्रश्नों की बौछारों का आक्रमण होते हुए वो सकपका गई परन्तु उसने कहा ''नहीं माँ जी, मैं तो माया से मिलने उसके घर पर जा रही थी। उसको लेकर शास्त्री जी के घर पर जाना है, कुछ काम है, माँ ने कहलवाया है।''

यह सब कुछ रज्जो ने एक ही सांस में माँ जी से कह दिया। सूरज यह सुन कर समझ गया कि आज रज्जो ने उससे शास्त्री जी के घर पर मिलने की भूमिका बनाई है। सूरज के चेहरे पर अनुमोदन सा प्रकट हुआ और रज्जो को अपनी स्वीकारोक्ति प्राप्त हो गई थी।

माँ जी ने रज्जो को अपने पास कुर्सी पर बैठाया और उससे इधर–उधर की बाते करने लगी। माँ जी ने उसे छांछ और घर के बने लड्डू खिलाए। माँ जी उसकी सुरीली और सौम्य आवास सुनकर मोहित हो गई। माँ जी को रज्जो में नारी में पाये जाने वाले सभी गुण जैसे– कला, लज्जा, समर्पण, सहनशीलता, कर्तव्यनिष्ठा, चरित्र सृजन किए हुए थी। यह सब नारी का आभूषण तो हैं। यही सोच–विचार कर उन्होंने रज्जो के सिर पर ''प्यार भरा हाथ फेरा'', ''सदा सुखी रहो'' का आर्शीवाद दिया।

रज्जो माया के घर न जाकर सीधे शास्त्री जी के घर की ओर चल पड़ी, परन्तु तभी उसे माया अपनी ओर आती हुई दिखाई दी। उसने माया को सब कुछ बताया और उसको शास्त्री जी के घर चलने को कहा। इस पर माया ने उसे मना कर दिया क्योंकि वो कुछ सामान पंसारी की दुकान से लेने आई हुई है। माया से मिल कर रज्जो सीधे शास्त्री जी के घर की ओर चल पड़ी। लक्ष्मी ने रज्जो को गले से लगा लिया और महीने भर की बहुत सी बाते करने लगी। रज्जो ने बातों–बातों में उन्हें कुरेदा, परन्तु लक्ष्मी ने सुनी–अनसुनी करके बात को टालते हुए कोई दूसरी बातों में उलझा दिया। तभी सूरज भी वहाँ पर आ गया। लक्ष्मी के पाँव छूते हुए वो रज्जो की तरफ देख कर मुस्कराया। लक्ष्मी भांप गई कि जरूर दाल में कुछ काला है। तभी ये दोनों आज यहाँ आएँ हैं। लक्ष्मी ने सूरज से आने का कारण पूछा। इस पर सूरज ने ''बस यूं हीं गुरू माँ,

आपसे मिलने का मन कर रहा था।'' सूरज ने स्पष्ट रूप से गुरू माँ से पूछा कि गुरू जी ने उनके बारे में क्या सोचा है। इस पर लक्ष्मी अन्दर की ओर चली गई, जैसे कुछ सुना ही न हो। थोड़ी देर में वो दोनों के लिए छांछ और बेसन के लड्डू लेकर आई। वह यह जानती थी, इन दोनों को गुरू माँ के हाथ के बने बेसन के लड्डू बहुत अच्छे लगते हैं।

कुछ क्षणों के लिए सब चुप रहे और एक दूसरे का इन्तजार करने लगे कि गुरू माँ क्या प्रतिक्रिया देती है। लक्ष्मी उन दोनों को टालना चाह रही थी। वो नहीं चाहती थी कि शास्त्री जी की अनुपस्थिति में इस विषय पर कुछ चर्चा हो। उन दोनों के बहुत आग्रह करने पर लक्ष्मी ने दोनों को आश्वासन दिया कि शास्त्री जी उन्हें कोई न कोई मागदर्शन जरूर निकाल देंगें। तुम दोनों उनको अपने बच्चों की तरह प्रिय लगते हो। ईश्वर जरूर अच्छा सोचता है और सब्र का फल हमेशा मीठा होता है, उस पर भरोसा रखो। गुरू माँ का आर्शीवाद लेकर दोनों अपने–अपने घर की ओर चल दिए।

शास्त्री जी घर की ओर लौटते हुए विचारमग्न थे कि गन्तव्य तक पहुँचने के लिए अभी अत्याधिक भू–भाग से गुजरना पड़ेगा। शास्त्री जी आज गणेश से मिल कर आ रहे थे। गणेश से उन्होंने साफ स्पष्ट शब्दों में रज्जो और सूरज के बारे में बतलाया और अपनी राय दी कि दोनों बचपन से एक दूसरे से परिचित है और उन दोनों में परस्पर स्नेह भी है। शास्त्री जी की राय सुन कर पहले तो गणेश भौचक्का रह गए। परन्तु एक क्षण रुके

कि यह राय केवल आपकी है या किसी और की। शास्त्री जी ने आई बला अपने ऊपर लेते हुए स्पष्ट कर दिया कि यह उनकी राय है और दोनों बच्चों की सहमति है। उनकी यह जिज्ञासा देखते हुए मैंने आपको अपनी राय दी है। इस पर गणेश जी ने उन्हें कुछ दिनों की मोहलत देने को कहा और शास्त्री जी से कहा कि हमको तो कोई आपत्ति नहीं है परन्तु जमींदार जी की राय लेना पहले आवश्यक है, वो नहीं मानेंगें। शास्त्री जी गणेश की यह बात सुनकर आश्वस्त हो गये थे कि गणेश और पत्नी को मना लिया जाएगा।

यहीं सब विचारमग्न में शास्त्री जी घर पर आए और आंगन में पलंग पर लेटते हुए पत्नी से छांछ लाने को कहा। लक्ष्मी समझ गई कि आज जरूर किसी बात का निवारण हुआ है। उसने शास्त्री जी को छांछ पकड़ाते हुए सूरज और रज्जो के आने के बारे में बतलाया। शास्त्री जी ने भी रज्जो के पिता से जो कुछ भी सारी बात हुई थी, बतलाई। इस पर दोनों के मन में यह धारणा बैठ गई कि चलो रज्जो के माँ–बाप तो मान जायेंगें, अगर जमींदार जी और सावित्री मान जाए। यही सब सोच कर वो आगे की रणनीति सोचने लगे कि अगले गन्तव्य के लिए क्या उचित कार्यवाही की जाए।

अगले दिन लक्ष्मी सुबह उठीं और अपने नए विचार के बारे में शास्त्री जी को बतलाया। इस पर उन्होंने अपनी सहमति नहीं दी। कहा कि पहले वो एक बार फिर सूरज की माँ के पास जाकर स्पष्ट रूप से कह

दें। अगर उसकी सहमति हो जाएगी तो अवश्य ही जमींदार जी भी मान जाएंगें।

लक्ष्मी आज सुबह ही से जल्दी–जल्दी घर का सारा काम निपटाने लगीं, क्योंकि आज उसे सावित्री जी से मिलने जाना है। वो दिनचर्या से निवृत होकर, जमींदार जी के घर की ओर निकल पड़ी। वहाँ सावित्री उसे आंगन में ही मिल गई। आते ही सावित्री ने उससे कुशलक्षेम पूछते हुए, उसे अपने पास कुर्सी पर बिठा लिया। सावित्री ने लक्ष्मी से आने का कारण पूछा, कहा, ''सब ठीक से तो है।'' लक्ष्मी ने हंस कर उत्तर दिया, नहीं, सब कुछ ठीक–ठाक से है।'' बस आपसे मिलने का मन कर रहा था, इसलिए मैं आपके पास चली आई।'' लक्ष्मी ने पहले कई बाते इधर–उधर की कहीं और बातों–बातों में ''सूरज नहीं दिखाई दे रहा है।'' वो सुबह हर रोज खेत में चला जाता है। आजकल उसके बाऊ जी ने उसे खेतों का काम सौंप रखा है। सावित्री ने कहा ''अब तो काम–काज सम्भालने लग गया है, उसकी जिम्मेदारियां भी बढ़ गई हैं। अब उसके सहारे के लिए योग्य कन्या से उसका विवाह कर दीजिए।'' लक्ष्मी ने मौके से अपनी बात रखी।

यह प्रश्न लक्ष्मी ने यकायक साफ और स्पष्ट शब्दों में सावित्री के समक्ष प्रस्तुत कर दिया। सावित्री भी कुछ भांप गई कि लक्ष्मी जरूर रज्जो की ही बात करने आई है। सावित्री बोल पड़ी ''अगर आपके निगाह में कोई है, तो बताओ, वैसे जमींदार जी की बेटी से

रिश्ते की बात चल रही है। जमींदार जी शायद राजी भी हैं इस रिश्ते से।''

लक्ष्मी यह सुन कर यकायक चुप सी हो गई। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वो अब आगे क्या कहे। इसी उलझन में उसके मुँह से अचानक निकल पड़ा, ''तो फिर रज्जो का क्या होगा।''

यह सुनते ही सावित्री जो सोच रही थी, वह सामने आ गया। समय की परिस्थिति को देखते हुए सावित्री ने रज्जो के बारे में साफ कह दिया कि इसके लिए जमींदार जी नहीं मानेंगें। वो सूरज का विवाह ब्राह्मण वर्ण में ही करेंगें और किसी वर्ण में नहीं। रज्जो तो वैश्य समाज से आती है।

''लेकिन वो दोनों एक दूसरे को अत्याधिक पसन्द करते हैं और उनकी सहमति को देख कर ही तो आज आपसे उनके विवाह की बात करने आई हूँ।'' लक्ष्मी ने कहा। सावित्री चुप सी हो गई। उसने प्रतिक्रिया दी कि न तो रज्जो के माँ–बाप इसके लिए राजी होंगें और न ही जमींदार जी। ''रज्जो के माँ–बाप की तो वह सहमति ले लेगी।'' लक्ष्मी ने आश्वासन दिया।

इतने में राम अवतार दोनों के लिए छांछ और लड्डू ले आया। सावित्री इन सब बातों से अपने मन के अन्तर्द्वन्द को रोक नहीं पा रही थी। वो जब से रज्जो से मिली थी, तभी से उसके मन ने रज्जो के लिए सोचने पर मजबूर कर दिया था। सूरज के लिए वो रज्जो जैसी ही लड़की को चाहती थी। उसकी मीठी वाणी ने

उसको हृदय स्पर्शी बना डाला था। उसकी मनःस्थिति इतनी व्याकुल हो गई कि उसने हृदय से आई आवाज में लक्ष्मी को अपनी सहमति रज्जो के लिए दे दी।

कुछ दिनों के पश्चात सावित्री ने जमींदार जी को प्रसन्न मुद्रा में देखा। उसने भी मौके का फायदा देख कर जमींदार जी से सूरज के विवाह की बात छेड़ दी। इस पर जमींदार जी ने कहा, ''अभी क्या जल्दी है। पहले उसे सब काम–काज तो सीखने दो। विवाह भी हो जाएगा।''

''पर विवाह के लिए योग्य कन्या की भी जरूरत है।'' सावित्री बोली।

''हाँ मेरे पास ही के गाँव कुन्दनगंज के जमींदार मिले थे। वो अपनी कन्या के लिए सूरज का हाथ मांग रहे थे। वो भी ब्राह्मण वर्ण के ही हैं। तुम कहो तो मैं एक दिन हो आऊँ और कन्या को भी देख लूँगा। जमींदार जी बोले।

इस पर सावित्री ने अपनी राय देते हुए कहा ''पहले सूरज की भी तो राय ले लेनी आवश्यक है कि उसे कैसी कन्या की जरूरत है। वो तो खेतों से आने के बाद अपने संगीत को लेकर बैठ जाता है।''

जमींदार जी ''तो क्या सारा दिन घर पर नौटंकी करेगा तो जमींदारी का काम कैसे सम्भालेगा।''

सावित्री – सब सम्भाल लेगा, अभी तो उसकी स्कूल और संगीत की शिक्षा समाप्त हुई है। समय के साथ–साथ सब कुछ सीख लेगा।

जमींदार जी – तो फिर मैं कल जमींदार फूलचन्द जी के गाँव कुन्दनगंज जाकर कन्या को देख कर आता हूँ। क्या वो हमारे सूरज के लायक भी है।

सावित्री ने सूरज का पक्ष लेते हुए कहा ''सूरज के लिए तो वो कन्या सुखी रहेगी जो संगीत में रुचि रखती हो। तभी उन दोनों की जोड़ी सही रहेगी।''

सावित्री ने भी जमींदार जी को अपनी बात रख दी और बात को आगे बढ़ाते हुए कहा, ''विवाह के पश्चात प्रत्येक स्त्री को अपने पति के सानिध्य की जरूरत होती है। तो अगर सूरज को संगीत प्रेमी कन्या मिलती है तो उसके जीवन में भी सहजता आ जाएगी।''

जमींदार जी ने सावित्री की इस बात पर विशेष ध्यान न देते हुए, कल को फूलचन्द जी से मिलने को कह कर ''भृकुटी तानते'' हुए चले गए।

सुबह ही से जमींदार जी तैयार होकर अपने अर्दली को घोड़ा–गाड़ी तैयार करने को कहा। अर्दली समझ गया कि आज जमींदार जी कहीं दूसरे गाँव पर जा रहे हैं। जमींदार के गाँव बछरावाँ से कुन्दनगंज करीब तीन मील की दूरी पर है और वहाँ घोड़ा–गाड़ी पर से जाने में करीब 30 मिनट लगते हैं। वहाँ पहुँच कर उनकी भेंट फूलचन्द जी और उनके परिवारीगण, उनके माता–पिता, पत्नी रतना और पुत्री सुमन से हुई। फूलचन्द जी ने जमींदारी जी का स्वागत बहुत ही आदरपूर्वक से किया। उनका परिचय अपनी पत्नी और सुमन से करवाया। सुमन तो सुन्दरता की पराकाष्ठा से

ओत–प्रोत नजर आई। उसमें आत्मविश्वास, सादगी, दयालुता आदि आंतरिक गुणों का संगम लिए हुए थी। सुमन उन्हें एक ही नजर में पसन्द आ गई और उन्होंने फूलचन्द जी को अपने गाँव बछरावां आने का निमंत्रण दिया। वो चाहते थे कि सावित्री भी रतना से मिल कर विचार–विमर्श कर ले।

जमींदार जी खुशी–खुशी अपने गाँव को लौट आए और सावित्री को फूलचन्द जी के आने के बारे में बताया।

:———:———:———:

गुलाब राय जी के जाने के पश्चात फूलचन्द जी ने अपने परिवारीजन से राय लेनी उचित समझी। उन्होंने अपने माता–पिता और पत्नी एवं पुत्री को अपने पास बुला कर राय मांगी। उन्होंने सूरज के बारे में सब कुछ विस्तार से बताया, जो कि गुलाब राय जी उन्हें बता कर गये थे। इस पर उनके माता–पिता तो परिवार अच्छा देख कर राजी हो गए। परन्तु उनकी पत्नी रतना की 'हाँ' नहीं हो पा रही थी क्योंकि जबसे उसने सुना कि सूरज संगीत प्रेमी है, तो वह क्या जमींदारी करेगा। इस पर उनकी पुत्री भी अपनी माँ का अनुसरण करने लगी। उसे भी यही लगा कि जब वो संगीत में रुचि रखता है तब वो काम–काज क्या देखेगा। उसे अपने परिवार से क्या लगाव रहेगा, जमींदारी भी सम्भाल नहीं पाएगा। बात की गम्भीरता और परिस्थिति को देखते हुए फूलचन्द जी ने पत्नी और पुत्री को समझाने की कोशिश की और कहा कि वो समय के साथ–साथ जब

काम का बोझ पड़ेगा तो जमींदारी के आगे संगीत को भूल जायेगा। इसलिए घर में आया रिश्ता तो ईश्वर की देन होती है, इसे अस्वीकार नहीं करना चाहिए। पत्नी रतना फूलचन्द जी की बात से सहमत हो गई परन्तु सुमन अभी भी जिद पर अड़ी हुई थी और कोशिश करती रही कि किसी कारणवश यह सम्बन्ध निरस्त हो जाए। वह तो अपना मन गाँव के पटवारी सुखराम के पुत्र राकेश से सम्बन्ध बनाए हुए थी। वो दोनों परस्पर मिलते रहते थे। उन दोनों में तो अपने घनिष्ठ सम्बन्ध होने पर वो विवाह सूत्र में बंधना चाहते थे। बस दोनों के परिवार वालों को इस बात का कुछ भी पता नहीं था। सुमन ने जब देखा कि घर के सारे सदस्य सूरज के लिए सहमत हो गए हैं तो उसने सबको राकेश के बारे में बताना उचित समझा।

कुछ देर में फूलचन्द जी ने ही चुप्पी तोड़ी और पुत्री की सहमति मांगी परन्तु इस पर उसने बड़े साहस के साथ सब कुछ राकेश के बारे में बता दिया और निर्णय दिया कि विवाह करेगी तो राकेश के साथ ही। फूलचन्द जी के माता–पिता ने समय की स्थिति को समझते हुए अपना प्रस्ताव राकेश के पक्ष में दे दिया। माता–पिता के समर्थन को देखते हुए फूलचन्द जी सोच–विचार में पड़ गए। हालांकि वो पटवारी सुखराम को बचपन से जानते हैं। वो उनका बहुत ही प्रिय मित्र है। साथ–साथ स्कूल जाना, बचपन में साथ खेलना और दुख–सुख बाँटना। सुखराम भी ब्राह्मण वर्ण से आता है। यह सोच कर वो अपने विचारों को फिर से

सोचने लगा। एक तरफ जमींदार गुलाब राय जी तो दूसरी और उनका मित्र सुखराम। बहुत सोच–विचार के बाद उसको सुखराम का पलड़ा भारी लगने लगा। उन्होंने अपनी पुत्री को प्यार से सिर पर हाथ फेरते हुए कहा ''बेटी जो तेरी इच्छा है, हम कल ही सुखराम जी से बात करते हैं।''

कुछ दिनों के इन्तजार करने के पश्चात जमींदार गुलाब राय जी ने अपने अर्दली को फूलचन्द जी की राय पूछने भेजा परन्तु अर्दली वापस लौट आया और उनका प्रस्ताव विवाह के लिए अभी नहीं है, कह कर टाल दिया। उनकी पुत्री अभी विवाह नहीं करना चाहती।

भाग—3

जब से अर्दली फूलचन्द जी के घर से आया, तबसे गुलाब राय जी बहुत चिन्तित हो चले। दिन—रात बस अपने पुत्र सूरज के विवाह की ही चिन्ता लगी रहती। वो सारा दिन यही विचार करते रहते कि जब फूलचन्द जी ने यह रिश्ता ठुकरा दिया है तो अब यह बात आस—पास के गाँव में फैल जाएगी और इस पर बदनामी अलग से होगी। अपनी इस चिन्ता को उन्होंने अपनी पत्नी सावित्री से विचार—विमर्श करना उचित समझा। सावित्री ने अपना विचार प्रकट करते हुए जमींदार जी को सलाह दी कि वो स्वयं ही एक दिन फूलचन्द जी के यहाँ पर जाए और स्थिति का अवलोकन करें। सावित्री की यह बात उनके मन में भा गई और अगले दिन फूलचन्द जी के यहाँ जाने के लिए उचित समझा।

सुबह—सुबह अगले दिन वो तैयार होकर फूलचन्द जी के यहाँ चल दिए। अपनी घोड़ा—गाड़ी में बैठे—बैठे वो यही विचारते रहे कि क्या जमाना (समय) आ गया है कि वो लड़के वाले होकर भी लड़की का हाथ मांगने

उसके घर जा रहे हैं। उन्हें याद आया कि जब सावित्री के पिता और बड़े भाई उनका हाथ मांगने आए थे, तो बगैर विचार–विमर्श करे उनके पिता जी ने परिवार देखते हुए उन्हें सहमति दे दी थी। इस पर घर में कोई सदस्य ने विचार प्रकट नहीं किया था। बस जो घर के बड़े सदस्य ने कह दिया, वो ही सबने स्वीकार कर लिया। सावित्री जब शादी के बाद घर आई तो सबने उसकी बलैइया ली और नजर उतारी क्योंकि अत्याधिक सुन्दर और सुशील कन्या थी। परिवार के सब सदस्यों ने इस पर गुलाब राय को आशीष देते हुए ''तेरे तो भाग्य खुल गये, ऐसी सुन्दर, गुणवती कन्या मिली है।'' दादी और माँ ने तो सावित्री को अपने पास से हटने ही नहीं दिया। बस नजर ही उतारती रही।

गुलाब राय जी यही सब सोच–विचार करते हुए अन्दर ही अन्दर मुस्करा रहे थे। इतने में फूलचन्द का गाँव आ चला था। उन्होंने अर्दली से घोड़ा–गाड़ी को रुकवा कर फूलचन्द जी को आवाज लगाई। जमींदार जी की आवाज सुन कर फूलचन्द जी तो बस अचानक सकपका गये और जल्दी से बाहर आकर प्रणाम करके उन्हें आदरपूर्वक अन्दर ले आए। फूलचन्द जी ने स्थिति की गम्भीरता को समझते हुए अपनी पत्नी को बुलवाया, जिससे स्त्रियां बात को सुलझाने में निपुण होती हैं।

कुछ देर चुप्पी के पश्चात जमींदार जी ने पुत्री सुमन के बारे में जानकारी ली और अपने आने का कारण बताया। रतना ने ही समझदारी के साथ उन्हें सुमन के बारे में कहा कि वो अभी विवाह नहीं करना

चाहती, वो तो आगे की शिक्षा के लिए लखनऊ जाकर शिक्षा ग्रहण करने की सोच रही है और आप लोग तीन–चार साल रुक नहीं पाओगे। इसी वजह से आपसे क्षमा याचना करते हैं। गुलाब राय जी चुपचाप अपनी प्रतिक्रिया दिए बगैर वहाँ से चल दिए। रास्ते में उन्हें उसी गाँव का परिचित सुखराम मिला। उसने जमींदार जी को देखते हुए प्रणाम किया। घोड़ा–गाड़ी रुकवाते हुए वो सुखराम का हाल–चाल लेने लगे। बातों–बातों में सुखराम ने अपने लड़के का विवाह फूलचन्द जी की पुत्री के साथ तय होने के बारे में बतलाया और जमींदार जी को विवाह में आने का निमंत्रण दिया। जमींदार जी को अब सारी स्थिति का पता चल गया। वो एक मन से अपने घर की ओर चल दिए।

फूलचन्द जी के यहाँ से आए हुए कई दिन बीत गए थे। जमींदार जी एक उहापोह स्थिति में आ गए थे। बस उनको यही बात खटकती रहती कि क्या मेरा जमींदारी का रुतबा इतना कमजोर हो गया है कि लोग उनके लड़के का रिश्ता भी ठुकराने लगे हैं। उनका सूरज अब बारहवीं कक्षा उत्तीर्ण कर चुका है और साथ में संगीत की भी शिक्षा। एक बार उनके मन में आया कि क्यों न सूरज को भी उच्च शिक्षा के लिए लखनऊ भेज दें क्योंकि वह जानते थे कि आजकल शिक्षा का ही महत्व है। उनके छोटे लड़के तो लिखने–पढ़ने में कमजोर हैं। अतः दोनों को खेत और जमींदारी का काम लगा देंगें। सावित्री ने भी बात के लिए सहमति दे दी।

कुछ दिनों पश्चात सावित्री ने सूरज को अपने पास बुलाया और जमींदार जी का विचार उसके प्रति उच्च शिक्षा के लिए कहा। इस पर सूरज ने अपनी असहमति दिखाई कि वो उच्च शिक्षा के लिए शहर नहीं जाएगा क्योंकि वो जानता था कि अगर वो गाँव के बाहर शहर चला जाता है, तो रज्जो का क्या होगा। वो यहाँ अकेली रह जाएगी और उसका विवाह किसी अन्य के साथ कर दिया जाएगा। उसने अपनी माँ को अस्वीकृति देते हुए माँ को आश्वस्त किया कि वो पिता जी के कार्य में हाथ बटाएगा। अब तो वह खेतों में काम भी सम्भालने लगा है।

सावित्री सूरज के विचारों से सहमत थी क्योंकि प्रत्येक माँ यही

चाहती है कि उसका बेटा उसी के पास रहे। सूरज से उसे कुछ ज्यादा ही लगाव है। बाकी दोनों बेटे सागर और साकेत उसका कहा अभी से नहीं मानते हैं। इसलिए वो सूरज को ज्यादा प्रेम करती है।

इसी तरह कई दिन बीत गए। अब तो जमींदार जी ने सावित्री से इस विषय में कुछ कहना–सुनना भी बन्द कर दिया था।

गेहूँ की कटाई का वक्त आ चला था। चैत्र माह की समाप्ति होने को आ रही थी। बैशाख का आगमन आ रहा था। जमींदार जी ने सोचा कि अबकी बार गेंहूँ की कटाई का सारा जिम्मा सूरज को ही दे दें, जिससे वो इस कार्य में भी निपुण हो जाएगा। उन्होंने सूरज

को बुलवाया और उसको गेहूँ की कटाई का कार्य सौंपते हुए कहा कि बैशाख में ही कटाई का सारा कार्य पूरा करवा लेना और छटाई करवा कर बोरों में भरवा कर गोदाम में समय से पहले रखवा देना क्योंकि आषाढ़ के अन्त में आँधी, वर्षा के साथ ओले गिर कर खड़ी गेहूँ खेतों में पड़े रहने से खराब हो जाती है। जिससे गेंहूँ का उचित मूल्य नहीं मिल पाता है।

सूरज ने पिता जी की सारी बात को समझते हुए सहर्ष स्वीकार किया और पिता जी को आश्वस्त करते हुए कार्य को समय से पहले पूरा कर देने का वादा किया। आज सूरज का अन्तर्मन प्रसन्नचित हो चला था, वो अपने पर गर्व महसूस कर रहा था कि चलो पिता जी ने उसे इस कार्य के लिए उचित समझा और यदि वो इस कार्य को भलीभाँति कर देगा तो पिता जी उसको उच्च शिक्षा के लिए शहर नहीं भेजेंगें। उसने शीघ्र ही पिता के चरण स्पर्श करते हुए आर्शीवाद लिया और माँ के पास चला गया। सावित्री जी यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुई कि चलो सूरज अब उसी के पास रहेगा।

:———:———:———:

आषाढ़ का एक दिन सूरज अपने खेतों में आराम से पेड़ की छाया में बैठा हुआ था। पिता का बताया सारा कार्य उसने समय से पूरा कर लिया था। जमींदार जी उससे काफी प्रसन्न थे। वो पेड़ की छांव में बैठे—बैठे ध्यान मग्न हो चला था। उसे आज रज्जो की बहुत याद आ रही थी। पिछले कुछ दिनों से कार्य की व्यस्तता के कारण वो रज्जो से नहीं मिल सका था और

न ही उसका हालचाल भी नहीं ले सका था। उसकी नजर आसमान पर गई। मेघों का झुण्ड उसके ठीक सिर के ऊपर उसको देख कर हठखेलियां कर रहा था। उसका मन मौसम की यह छटा देख कर विचलित सा हो चला था। कुछ ही क्षणों में काले मेघों ने पृथ्वी पर अपनी चादर सी बिछा दी। सूरज को शास्त्री जी के घर कालीदास की मेघदूत की रचना पुस्तक का विवरण स्मरण हो आया कि एक दिन शास्त्री जी के घर पर न होने पर उसके और रज्जो ने मेघदूत के कुछ अंश पढ़े थे। तब वो दोनों विचलित से हो चले थे। उसने खेतों में आस–पास नजर दौड़ाई तो उसने पाया कि उसके सामने प्रकृति रूपी रज्जो उसके समीप आकर बैठ गई है और आस–पास के पेड़–पौधे, जीव–जन्तु भी इस प्रकृति में भागीदार हो चले हैं।

तभी मेघा की घड़घड़ाहट ने उसके ध्यान को भटका दिया। वो अपने बीते हुए क्षण में बाहर आ गया और अपने को पेड़ के नीचे बैठा पाया। वर्षा का आगमन हो चला था। उसके पांव शीघ्र ही घर की ओर बढ़ने लगे। परन्तु उसका ह्रदय तो रज्जो से मिलने के लिए व्याकुल हो चला था। इसी उहापोह की स्थिति में वो घर पहुँच गया और सीधे अपनी माँ के कमरे में गया और अपने ह्रदय की सारी व्यथा कह डाली।

:———:———:

भाग–4

रज्जो से मिले कई दिन हो चले थे, सूरज ने सोचा किसी तरह से उसकी भेंट हो जाए। यही सोच–विचार करते हुए वो अपने खेत की ओर बढ़ने लगा। रास्ते में उसकी भेंट माया से हो गई। बस उसने रुक कर माया के हाल–चाल लिए और बातों–बातों में रज्जो के बारे में जानकारी प्राप्त करनी चाही। माया को उसने बताया कि वो इस वक्त खेतों में जा रहा है और तीसरे पहर वो शास्त्री जी से मिलने उनके घर पर जाएगा। माया सूरज का अभिप्राय समझ गई थी। वो मुस्करा दी और सूरज आगे की ओर बढ़ चला।

माया रज्जो के घर पर मिलने गई। रज्जो उसे देख कर बहुत खुश हुई। उसने सूरज का संदेश उसको दिया। यह सुन कर रज्जो अन्दर ही अन्दर से प्रसन्नचित हुई और चेहरे पर लालिमा आ गई। वो तीसरे पहर का इन्तजार करने लगी। माया ने वहाँ से जाना ही उचित समझा। तीसरे पहर होते ही वह माँ से कह कर शास्त्री जी के घर की ओर चल दी। रज्जो

को मिल कर लक्ष्मी प्रसन्नचित होते हुए अपने पास ही बैठा लिया। लक्ष्मी रज्जो को बहुत चाहती थी। तभी अचानक से बाहर दरवाजे पर किसी के आने की आहट हुई। सूरज घर के अन्दर प्रवेश करके गुरू माँ के चरण स्पर्श करते हुए, उनका आर्शीवाद लिया। उसने रज्जो को एक नजर देख कर मुस्करा दिया। गुरू माँ समझ गई कि आज जरूर कुछ बात है, जो ये दोनों एक साथ यहाँ आए हैं। गुरू माँ ने दोनों को अपने बनाए हुए बेसन के लड्डू और छांछ दी। वो गुरू माँ के इस आदर सत्कार से आत्मविभोर हो चलें, तभी सूरज के मुँह से अचानक निकल गया ''गुरू माँ ये लड्डू मुझे बहुत याद आयेंगें क्योकि पिता जी मुझे उच्च शिक्षा के लिए लखनऊ भेज रहे हैं।''

इतना सुन कर रज्जो के मुँह पर उदासी आ गई। गुरू माँ अचम्भित होते हुए, उसने इस बात को गम्भीरता से लेते हुए सोचा, चलो इस बहाने से सूरज गाँव के बाहर चला जाएगा। सूरज को अपनी प्रतिक्रिया ''हाँ'' में देते हुए उसको शिक्षा के लिए प्रेरित किया। उसके मस्तिष्क में उसी क्षण आया कि इसी तरह रज्जो भी शिक्षा के लिए चली जाए। जिससे मनःस्थिति जो उन पर आ गई, उसका निवारण भी हो जाएगा। अपनी प्रतिक्रिया देते हुए लक्ष्मी ने अपना वक्तव्य दिया कि अच्छा है जमींदार जी अगर उच्च शिक्षा के लिए लखनऊ के लिए भेज रहे हैं तो यह तुम्हारे भविष्य के लिए अच्छा है। उच्च शिक्षा प्राप्त करके तुम ऊँचे पद पर आसित हो जाओगे।

गुरू माँ का यह वक्तव्य सुन कर सूरज भी एक क्षण के लिए सोच में पड़ गया और उसकी निगाहें रज्जो की ओर बढ़ गई जो अभी तक गम्भीर मुद्रा में एक टक दोनों को सुन रही थी। वह विचार कर रही थी कि सूरज के चले जाने से फिर उसका क्या होगा। उसी क्षण सूरज ने रज्जो को भी उच्च शिक्षा के लिए लखनऊ चलने का अपना फैसला दिया।

गुरू माँ सूरज की यह बात सुन कर सोचने लगी कि अगर ऐसा हो जाता है तो शास्त्री जी पर जो समस्या आ पड़ी है, उसका निवारण सही रूप में हो जाएगा। सूरज को जाने के लिए गुरू माँ ने प्रोत्साहित करते हुए रज्जो का भी विचार जानना चाहा। रज्जो ने इस विषय पर अपना समर्थन न देते हुए कहा कि इसके लिए बहुत रुपया पैसा चाहिए, वो पिता जी के पास नहीं हैं।

इसी उहापोह की स्थिति में वो दोनों गुरू माँ के घर से अपने–अपने घर की ओर चल दिए।

चौथा पहर बीत जाने के पश्चात शास्त्री जी ने घर पर प्रवेश किया। लक्ष्मी जी अभी तक उनका शीघ्रता से इन्तजार कर रहीं थी। उसने शास्त्री जी से सब कुछ कह डाला। शास्त्री जी प्रसन्नचित होते हुए बोले कि चलो हमारे सिर पर से एक बहुत बड़ा भार उतरने वाला है। अगर यह दोनों लखनऊ चले जाते हैं, तो सारी समस्या का निवारण हो जाएगा और हम पर कोई आंच नहीं आएगी। लक्ष्मी ने उन्हें बताया कि सूरज का तो उच्च शिक्षा का खर्चा जमींदार जी सहन कर लेंगें

परन्तु गणेश बाबू रज्जो को भेजने में असमर्थ होंगें, वो इतना खर्च नहीं उठा पायेंगें। शास्त्री जी यह सुन कर कुछ सोच में पड़ गए और कुछ देर सोचते हुए बोले कि ईश्वर ने चाहा तो इसका भी निवारण हो जायेगा और विचारते हुए आराम करने चले गए।

प्रतिदिन की भाँति शास्त्री जी नहा–धोकर पूजा–घर की ओर चले। पूजा में बैठ कर ईश्वर से प्रार्थना करने लगे कि हे ईश्वर कुछ ऐसा करें कि रज्जो बिटिया का भी कुछ रास्ता निकल पड़े। पूजा करते समय शास्त्री जी को किसी की बाहर से आवाज आई, जो शास्त्री जी को पुकार रहा था। लक्ष्मी तुरन्त ही आवाज सुन कर आंगन में जाकर आगन्तुक को अन्दर ले आई। लक्ष्मी ने उन्हें बैठाते हुए उनके लिए लस्सी और लड्डू ले आई। कुछ देर पश्चात शास्त्री जी पूजा से निवृत्त होकर कमरे में आए। अपने बचपन के मित्र विष्णु दत्त शर्मा को देखा तो उन्होंने उन्हें गले से लगा लिया। पण्डित विष्णु दत्त शर्मा और शास्त्री जी ने संगीत की शिक्षा एक ही गुरू से प्राप्त करी थी। शास्त्री जी ने अपना जीवन–यापन गाँव में ही रह कर संगीत स्कूल खोल कर गुजर–बसर कर रहे थे परन्तु पण्डित विष्णु दत्त शर्मा कई साल पहले लखनऊ चले गए थे। शास्त्री जी ने उन्हें देख कर, उनके मन में प्रसन्नता का भाव आ गया। दोनों को अपने बचपन के दिन याद हो आए। वो एक दूसरे को बचपन की कई बाते याद दिलवाने लगे कि कैसे उन्होंने एक दिन अपनी गुरू माँ के लड्डू का डिब्बा सारा खत्म कर दिया और उनकी

यह चोरी बाद में पकड़ी गई। इस पर उन दोनों को दण्ड भी मिला था।

यही सब में काफी समय बीत गया, बातों–बातों में शास्त्री जी को पता चला कि पण्डित जी भातखण्डे संगीत विद्यालय लखनऊ में प्रधानाचार्य हैं। बस फिर क्या था, शास्त्री जी ने झट से रज्जो के बारे में बतलाया और कहा कि वो उच्च शिक्षा के लिए जाना चाहती है। अगर उसे कुछ मदद मिल जाए, उसने संगीत और नृत्य की भी शिक्षा भी यहीं उनके पास ही ली है और इसी सत्र में बारहवीं कक्षा उत्तीर्ण भी करी है।

पण्डित जी ने शास्त्री जी की बात का समर्थन करते हुए कहा कि अगर वो नृत्य में अव्वल है, तब उसको उनके पास लखनऊ लेकर आओ। अगर वो परीक्षा में उत्तीर्ण हो गई तो उसको प्रवेश के साथ छात्रवृत्ति भी उपलब्ध हो जाएगी।

शास्त्री जी ने पण्डित जी से विदा लेते हुए रज्जो को लखनऊ लेकर जरूर आने को कहा।

पण्डित विष्णु दत्त शर्मा के जाने के पश्चात शास्त्री जी ने एक लम्बी सांस लेते हुए लक्ष्मी से सारा वार्तालाप बतलाया। लक्ष्मी ने प्रतिक्रिया देते हुए रज्जो की माँ रुकमणी के पास जाकर उससे बात करके उसकी राय लेगी और अगर वो नहीं मानती तो उसे समझाने की कोशिश करेगी। शास्त्री जी ने अपना मत दिया कि अगर वो दोनों बच्चे उच्च शिक्षा के लिए लखनऊ चले

जाते है, तो उनके सिर से बहुत सारा बोझ उतर जाएगा और उनका नाम भी बदनाम नहीं होगा।

लक्ष्मी अगले दिन रुकमणी के घर गई। उसे देख कर बहुत प्रसन्न हुई। वो भी दिन भर का कार्य समाप्त करके आंगन में बैठी हुई थी। लक्ष्मी वहीं पर बैठते हुए इधर–उधर की बातें होती रहीं। उसी बीच लक्ष्मी ने पण्डित जी की बात का जिक्र किया और बतलाया कि पण्डित विष्णु दत्त शर्मा जी शास्त्री जी के बचपन के घनिष्ठ मित्र हैं और लखनऊ में भातखण्डे संगीत विद्यालय में प्रधानाचार्य के पद पर हैं। अगर रज्जो को नृत्य ओर संगीत में उच्च शिक्षा के लिए भेज दोगे तो उसका जीवन सुधर जाएगा। वो संगीत एवं नृत्य की उच्च कोटि की कलाकार हो जाएगी। इस पर रुकमणी ने अपनी सहमति देते हुए कहा ''वो सब तो ठीक है पर अकेली लड़की को परदेश में कैसे भेजें और इस पर उच्च शिक्षा का खर्चा भी बहुत होता है।''

इस पर लक्ष्मी ने बताया कि वहाँ पर रहने और खाने–पीने के लिए छात्रवृत्ति भी मिलती है, उसमें शिक्षा का सारा खर्चा निकल जाएगा और आपका पता भी नहीं चलेगा। रुकमणी ने सारी बातों पर गौर से सुना और शाम को गणेश जी के घर आने पर उनसे परामर्श करके लक्ष्मी को बताने के लिए कहा।

जबसे लक्ष्मी रज्जो के घर से आई थी, उसकी मनोस्थिति एक ही विषय पर लगी हुई थी कि किसी तरह से दोनों के माँ–बाप उच्च शिक्षा के लिए अपनी सहमति दे दें। जिससे दोनों पक्षों के लिए उचित

रहेगा। वहाँ जाकर वे दोनों अपना–अपना सोच लेंगें। वो दोनों वहाँ पर क्या कर रहे हैं, किसी को इसका गाँव वालों को कानो–कान खबर भी नहीं होगी। इसी उहापोह स्थिति में वो एक दिन सावित्री से फिर मिलने चली गई।

सावित्री के घर जाकर लक्ष्मी बहुत देर तक इधर–उधर की बाते करने लगी। सूरज के विषय में पूछने पर सावित्री ने जमींदार जी की इच्छा बतलाई कि वो सूरज को उच्च शिक्षा के लिए लखनऊ भेजना चाहते हैं और उन्होंने अपने मित्र श्री राम चन्द्र वर्मा जी से, जो लखनऊ विश्वविद्यालय में शिक्षक के पद पर हैं, इस विषय में बात कर ली है। परन्तु सूरज अभी जाने को सहमत नहीं हैं। बोलता है खेतो का काम देखेगा। इस पर सावित्री ने सूरज को प्रोत्साहित करने के लिए लक्ष्मी से कहा, ''आप तो गुरू माँ हैं, आपका तो कहा वो जरूर मानेगा। लक्ष्मी ने सावित्री को आश्वासन देते हुए कहा कि सूरज को एक दिन उसके पास भेजना, वो उसे समझा देगी। शायद उसके कहने से मान जाए। यह कह कर लक्ष्मी अपने घर की ओर चल दी, एक नई उम्मीद लेकर।

उधर शास्त्री जी भी गणेश जी से मिलने एक दिन उनके घर पर पहुँच गए। शास्त्री जी को आया देख गणेश जी समझ गए कि वो किस विषय पर बात करने आए हैं क्योंकि रुकमणी ने उन्हें लक्ष्मी से जो बात हुई थी, विस्तारपूर्वक अवगत करा दिया था। शास्त्री जी ने आंगन में बैठते ही गणेश जी को अपने आने का

कारण बताया। इस पर गणेश जी ने अपना विचार रखते हुए कहा ‘‘वो सब ठीक है शास्त्री जी, परन्तु अकेली लड़की कैसे रहेगी और इस पर खर्चा भी बहुत हो जाएगा।’’

शास्त्री जी ने आश्वासन दिया कि पण्डित विष्णु दत्त शर्मा जी उनके बचपन के मित्र हैं और रज्जो बिटिया उनकी ही देख–रेख में रहेगी। आपका भी मन करेगा तो आप वहाँ जाकर रज्जो बिटिया से मिल सकते हैं। वो भी छुट्टियों में घर आ जाया करेगी। बीच–बीच में मैं भी लखनऊ चक्कर लगा आया करूंगा। खर्च की चिन्ता आप न करिए, वो छात्रवृत्ति से ही निकल आएगा। शास्त्री जी ने अपनी तरफ से आश्वस्त करते हुए गणेश जी की पीठ पर हाथ फेरते हुए ढांढ़स बंधाया।

गणेश जी ने शास्त्री जी के वक्तव्य को ध्यानपूर्वक सुनते हुए सहमति के लिए कुछ दिनों की अनुमति मांगी क्योंकि इसके लिए रज्जो की भी सहमति की जरूरत पहले होनी आवश्यक है। इस पर शास्त्री जी ने रज्जो को अपने घर भेजने को कहा कि वो उसको समझा देंगें।

शास्त्री जी घर वापस आकर आंगन में आकर पलंग पर लेटते हुए लक्ष्मी से छांछ लाने को कहा। लक्ष्मी उनका यह अभिप्राय समझ गई और छांछ देते हुए उसे शास्त्री जी से गणेश जी से जो वार्तालाप हुआ, उसके विषय में जानकारी ली। इस पर उन्होंने वक्तव्य दिया कि रज्जो को समझाना पड़ेगा। उसी वक्त लक्ष्मी

ने सावित्री जी से हुई सारी वार्तालाप शास्त्री जी को बतलाई कि हमें सूरज को भी समझाना पड़ेगा। दोनों अगर मान जाते हैं तो भविष्य के लिए सबके लिए उचित होगा।

:——:——:——:

इसी तरह से कई दिन चिन्तन में ही बीत गए। शास्त्री जी और लक्ष्मी यही सोचते रहे कि सूरज और रज्जो को किस बहाने से अपने घर बुलाएं। यही सोच विचार करके एक दिन शास्त्री जी को सुबह–सुबह सूरज को खेत की ओर जाते हुए दिखाई दिया। वे तत्काल ही अपने आंगन से निकल कर सूरज की ओर उत्तेजित होते हुए जोर से उसे आवाज लगाई। सूरज ने भी गुरू जी को अपनी ओर आते देखा तो शीघ्र ही उनके समीप आकर चरण स्पर्श की। शास्त्री जी ने सूरज को कहा कि गुरू माँ ने तुम्हे आज संध्या को याद किया है। उसने तुम्हारे मन पसन्द की खीर और बेसन के लड्डू बनाएंगी। अगर रज्जो बिटिया भी आ जाती तो बहुत अच्छा होता। बहुत दिन हो गए हैं, हम सबको एक साथ मिले बैठे। सूरज ने शास्त्री जी के अभिप्राय को समर्थन करते हुए संध्या को आने का वचन दिया। रज्जो को भी कहलवा देगा।

शास्त्री जी के जाने के पश्चात सूरज असमंजस में पड़ गया कि रज्जो के लिए गुरू जी से कह दिया पर उसको कहलवायेगा कैसे। उसी क्षण उसे माया की याद हो आई। समय–समय पर माया ही उनकी सहपाठी बन जाती है। वो माया के घर की ओर चल

दिया और उसके घर के आंगन के पास जाकर माया को आवाज लगाई। माया के बाहर आने पर उसने गुरू जी की कही बात दोहराई कि उन्होंने आज संध्या को रज्जो को बुलाया है। माया ने सूरज को आश्वस्त किया कि वो रज्जो को कह देगी। सूरज के जाने के पश्चात माया थोड़ी सी मुस्करा दी और मन में सोचा कि आज दाल में काला जरूर है। वो पहले ही से सूरज ओर रज्जो के बारे में सब कुछ जानती थी। माया ने रज्जो को बताना ही उचित समझा।

जिस समय का इन्तजार शास्त्री जी और लक्ष्मी को था, वह समय आज आ ही गया। लक्ष्मी ने बेसन के लड्डू और खीर बनाई। संध्या हो चली थी। पहले सूरज आया और कुछ समय बाद रज्जो भी पहुँच गई। शास्त्री जी ने दोनों को अपने पास बिठाते हुए बड़े प्यार से उनको कहा कि तुम दोनों का वक्त अब गाँव से बाहर जाने का हो गया है और इसके लिए तुम दोनों की सहमति की आवश्यकता है। ताकि तुम दोनों के जीवन एक दूसरे पर निर्भर रहेगा। लक्ष्मी तभी खीर और लड्डू लेकर आई, सबने मिल कर उनका स्वाद लिया। सूरज को समझाया कि तुम अपने पिता की आज्ञा मान लो और उच्च शिक्षा के लिए लखनऊ जाने की सहमति दे दो। इस पर रज्जो को भी भातखण्डे संगीत विद्यालय लखनऊ में नृत्य और संगीत की उच्च शिक्षा के लिए प्रोत्साहित किया। इसके लिए उन्होंने अपने मित्र पण्डित विष्णु दत्त शर्मा जी से विस्तार से बात कर ली है। वहाँ पर उसे छात्रवृत्ति भी मिल जाएगी। इस प्रकार तुम

दोनों वहाँ पर स्वतन्त्र रूप से परस्पर एक दूसरे से मिल सकोगे और अपने जीवन की राह पर चल सकोगे। शास्त्री जी का प्रस्ताव सुन कर दोनों ने अपनी सहमति दे दी। शास्त्री जी ने एक लम्बी सांस लेते हुए लक्ष्मी को बच्चों के लिए लड्डू और छांछ लाने को कहा। लक्ष्मी अब प्रसन्न नजर आ रही थी। शास्त्री जी उसे घूर रहे थे।

भाग–5

लक्ष्मी और शास्त्री जी के समझाने पर सूरज और रज्जो ने अपने–अपने माता–पिता को उच्च शिक्षा के लिए जाने पर सहमति दे दी। जमींदार जी तो अत्यन्त प्रसन्न हो गये। निश्चित समय और दिन देख कर सूरज को लखनऊ लेकर चल दिए। वहाँ पहुँच कर वे अपने मित्र श्री राम चन्द्र वर्मा से मिल कर उचित पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए कहा। वर्मा जी ने सूरज से कक्षा–12 के विषयों के बारे में पूछा और उसकी रुचि को ध्यान में रखते हुए उसे बी0काम के लिए प्रोत्साहित किया। जिससे वे अपने पिता के व्यापार में अपना सहयोग दे सकेगा। जमींदार जी को वर्मा जी का यह प्रस्ताव बहुत प्रभावित लगा और उन्होंने भी अपनी सहमति दे दी। इस प्रकार सूरज का प्रवेश लखनऊ विश्वविद्यालय में हो गया। वहाँ उसे लड़कों का छात्रावास भी मिल गया। सूरज अब एक नए जीवन की पगडण्डी में प्रवेश कर रहा था। वह सर्व प्रथम अपने माता–पिता और गाँव से दूर एक अन्जान शहर में, जिसमें उसका कोई साथी नहीं था, गया।

उधर दूसरी ओर रज्जो भी अपने पिता और शास्त्री जी के साथ भातखण्डे संगीत विश्वविद्यालय में प्रवेश के लिए आई। शास्त्री जी ने विष्णु दत्त शर्मा जी से मिल कर रज्जो का भी बी0पी0ए0 (बेचलर आफ परफॉर्मिंग आर्टस) में प्रवेश दिला दिया। रज्जो भी अब भातखण्डे के छात्रावास में प्रवेश कर लिया। छात्रवृत्ति मिलने से उसे केवल कुछ ही शुल्क देना पड़ा क्योंकि नियम के अनुसार उसके पिता की सालाना आय दो लाख रुपये से कम थी।

सूरज और रज्जो अब अपने एक नए जीवन की पगडण्डी पर चल दिए थे, वो नहीं जानते थे कि यह पगडण्डी उन दोनों को जीवन के किस मोड़ पर लेकर जायेगी। दोनों अपने–अपने विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने लगे। दोनों के सहपाठी भी अब मित्र बन गए। गाँव का शुद्ध वातावरण से अब वो वंचित से हो चले थे। परन्तु अब इस अनुकूल वातावरण में अब नई परिस्थिति में व्यवस्थित करने लगे।

:———:———:———:

छात्रावास में सूरज अपने नए सहपाठियों के साथ रहने लगा। शुरू–शुरू में उसे इस वातावरण में अपने को समायोजित करना कठिन सा हो गया था। अब उसे गाँव का शुद्ध वातावरण से वंचित होना पड़ा। यहाँ पर उसे एक कमरे में अपने सहपाठी रमानाथ के साथ रहना पड़ रहा था। पर अब तो इसमें रहने का अभ्यस्त हो गया।

दूसरी ओर रज्जो भी अपनी सहपाठिन छाया के साथ घुल–मिल गई थी। छाया भी नृत्य और संगीत की शिक्षा ग्रहण करने आई हुई थी।

पण्डित विष्णु दत्त शर्मा ने जब से रज्जो के नृत्य संगीत की परीक्षा ली थी। तब ही से रज्जो उनके मन में भा गई थी। वो यह जानते थे कि यदि रज्जो को थोड़ी सी भी नृत्य में प्रशिक्षण दिया जाए तो वह अवश्य ही एक उच्च कोटि की कलाकार बन जाएगी। वे अपने कार्यालय में बैठे–बैठे रज्जो के बारे में ही सोच रहे थे। अचानक उनके मन में ऐसे भाव आये कि उनके चेहरे पर हल्की सी मुस्कराहट सी आ गई। उन्होंने तुरन्त रज्जो को अपने पास बुलवाया। रज्जो के कमरे में प्रवेश करते ही वो अचानक पूछ बैठे ''रज्जो क्या तुम्हारा और भी नाम हैं।'' रज्जो भी इस प्रश्न को सुन कर थोड़ी देर के लिए विस्मय में पड़ गई। इस पर उसने कहा ''बचपन में माँ ने 'रजनी' नाम रखा था।''

''बस आज से तुम्हारा नाम रजनी ही होगा। सब तुम्हें रजनी ही पुकारेंगें, तुम्हें इस नाम से कोई आपत्ति तो नहीं है।''

नहीं आचार्य जी। ''(पण्डित जी को सब विद्यार्थी आचार्य जी ही पुकारते हैं।)

यह बात भातखण्डे के सब शिक्षक और विद्यार्थियों को पता चल गई। सब रज्जो को रजनी के नाम से पुकारने लग गए। रजनी नृत्य और संगीत की शिक्षा बहुत लगन के साथ ग्रहण करने लगी। अब तो

नृत्य का अभ्यास प्रतिदिन करती है और वो अब तो शास्त्रीय नृत्य जैसे भारत नाट्यम, कथक, कथकली आदि नृत्यों को भली भाँति से करने लगी थी। आचार्य जी सब विद्यार्थियों को बड़ी लगन से नृत्य की शिक्षा और अभ्यास कराते। विशेषकर उनका ध्यान रजनी भातखण्डे का नाम एक दिन ही अवश्य उज्ज्वल करेगी।

समय बीतता गया, रजनी अब अपनी ही दिनचर्या में व्यस्त रहने लगी। एक दिन सुबह ही से न जाने उसे अपना गाँव और सब सगे–सम्बन्धियों की याद आई। माँ के लड्डुओं का डिब्बा खोला, जो चलते समय माँ ने दिया था। अब इस डिब्बे में लड्डू का चूरा ही शेष रह गया था। वो उस सुगन्ध को सूंघने लगी, जो उसमें से आ रही थी। इस बीच उसके आँखों में से आँसू बह निकले। आँसुओं के साथ उसे सूरज की भी याद हो आई। वो भूल ही गई थी कि सूरज ने भी लखनऊ विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया है। उसने सोचा कि वो इस रविवार छाया को साथ लेकर सूरज से मिलने अवश्य जाएगी। छाया ने कमरे में प्रवेश किया और पाया कि रजनी की आँखों में अश्रु बह रहे थे। वो रजनी से जानने लगी। रजनी ने भावुक होकर उसे अपनी और सूरज के बारे में सब कुछ बताया। छाया यह सुन कर हंस दी और उसको इस रविवार सूरज से मिलने के लिए कहा।

उधर सूरज अपने नए सहपाठियों के साथ इतना व्यस्त हो गया कि उसे रज्जो के बारे में याद ही नहीं आया। बस विद्यालय से छात्रावास, छात्रावास से

विद्यालय यही प्रतिदिन की क्रिया हो गई थी। ज्यादा से ज्यादा रमानाथ के साथ सुबह शाम छात्रावास के पार्क में थोड़ा टहल कदमी करने चला जाता। रात को भोजन के पश्चात अपने नये पाठ्यक्रम में लगन से पढ़ने लग जाता। बस यही दिनचर्या के अन्तर्गत बंध सा गया था। इसी बीच एक दिन सुबह उठा तो उसे अपना स्वप्न याद हो आया, जो उसने रात्रि को देखा था कि वो और रज्जो शास्त्री जी के घर आये हुए हैं और गुरू माँ के लड्डू खा रहे हैं। तो झट से उठा और उसने अपना लड्डुओ का डिब्बा उठाया तो देखा कि वो खाली हो चुका है। कुछ लड्डू तो रमानाथ ने भी खा लिए थे। रमानाथ ने उसके चेहरे के भाव देखे तो पूछ बैठा। इस पर रमानाथ से अपने और रज्जो के बारे में सब कुछ बतलाया। रमानाथ ने कहा, बस यह बात है। भातखण्डे यहाँ से नजदीक है, आज संध्या होने का इन्तजार करने लगा।

संध्या हो चली थी। सूरज और रमानाथ अपने छात्रावास से भातखण्डे, जो केवल एक मील पर था, पैदल ही चलने लगे और आधा घण्टे में भातखण्डे के छात्रावास में पहुँच गये। वहाँ पहुँचकर सूरज ने अन्दर जाकर कुछ विद्यार्थियों से रज्जो के बारे में पूछा। उन्होंने असमर्थता दिखाते हुए कहा कि रज्जो नाम की कोई भी लड़की यहाँ पर नहीं है। सूरज विस्मय में पड़ गया और रमानाथ के साथ वापस अपने छात्रावास आ गया।

:———:———:———:

छाया के साथ रजनी सूरज के छात्रावास पर गई। वहाँ पर उसने सूरज को अपने मित्रों के साथ छात्रावास के पार्क में घूमते देखा। इससे पहले कि वो सूरज के समीप जाती, सूरज ने ही उसे अपनी ओर आते देखा। उसके चेहरे पर प्रसन्नता आ गई और उसकी अन्तर्रात्मा प्रफुल्लित हो उठी। उसी क्षण वो तेज कदमों से रज्जो की ओर भाग गया। रज्जो ने छाया से परिचय करवाया। सूरज के पूछने पर क्या तुम भातखण्डे में नहीं पढ़ती। इस पर रज्जो ने आचार्य जी के द्वारा उसका नाम रजनी हो गया। यह नाम उसकी माँ द्वारा बचपन में दिया गया था। छाया इस पर हंस दी और सूरज को बताया कि वे दोनों आचार्य जी द्वारा नृत्य और संगीत की शिक्षा भातखण्डे में ही ले रहीं हैं। सूरज ने इसकी पुष्टि करते हुए बताया कि वो वहाँ पर गया था परन्तु रज्जो नाम की कोई भी लड़की यहाँ नहीं पढ़ती है, यह बताया गया और वो वापस लौट आया।

सूरज इस नये नाम से परिचित होने पर विस्मय में पड़ गया और विचारने लगा कि कभी रज्जो ने उसे इस नाम से परिचय नहीं कराया। रमानाथ के समीप आने पर सूरज ने उसका परिचय दोनों से कराया कि वे दोनों छात्रावास में एक ही कमरे में रहते हैं। छाया भी इस पर रमानाथ को कनखनियों से देख कर मुस्करा रही थी। एक–दूसरे से वार्तालाप करते हुए सूरज सभी को छात्रावास की कैन्टीन में ले गया। सब अपनी–अपनी बातों में व्यस्त रहते हुए समय का उपयोग करते हुए आनन्दित हो रहे थे। अब तो छाया भी रमानाथ से

अच्छी तरह से परिचित हो गई थी, जैसे वे दोनों एक–दूसरे को काफी दिनों से जानते हैं। काफी देर बाद छाया ही ने सूरज से अनुमति लेते हुए रजनी के साथ अपने छात्रावास खुशी–खुशी से आई।

गाँव से जबसे सूरज और रजनी शहर आए थे, वे दोनों एक–दूसरे से और भी समीप आते चले जा रहे थे। नजदीकियों ने अब उन्हें एक नए मोड़ पर लाकर खड़ा कर दिया था। अब तो वे दोनों प्रतिदिन कालेज के बाद संध्या को रोज हजरतगंज में टहलने लगे। कभी बाजपेई की पूड़ी, शर्मा की चाय, बन, रामआसरे की मलाई, गिलोरी, शुक्ला की चाट, तो कभी रायल कैफे की बास्केट वाली चाट खाते। इसी तरह उनके दिन निकलने लगे। उनके जीवन में अब एक–दूसरे के प्रति प्रेम बढ़ गया था। वो रजनी में इतना खो गया था कि अपने माता–पिता को अब फोन भी कभी–कभी करने लगा।

उधर दो–तीन बार शास्त्री जी और गणेश जी लखनऊ आकर रज्जो से मिल गये थे। रज्जो का नया नाम रजनी सुनकर शास्त्री जी ने आचार्य जी को बहुत धन्यवाद और आभार प्रकट करा। अब तो वे रजनी ही पुकारने लगे। गणेश जी तो एक–दो बार आकर रज्जो से मिल गये थे। वे उसकी कुशलता देख कर प्रसन्न हो गए। रजनी अब अपने संगीत और नृत्य में बहुत आगे पहुँच रही थी।

इसी तरह कई महीने बीत गए। एक दिन आचार्य जी ने रजनी को एक आयोजन में, जो इन्दिरा गाँधी प्रतिष्ठान में होना था, उसके लिए नृत्य के लिए भी आयोजन था। आचार्य जी ने स्वयं ही रजनी का नाम समिति को प्रस्तुत किया था। वो चाहते थे कि एक बार रजनी का नृत्य अगर वहाँ हो जायेगा, जहाँ पर राजनैतिक एवं उच्च पदाधिकारी एवं प्रतिष्ठित लोग आते हैं तो समाज में इसको एक पहचान मिल जायेगी। आचार्य जी के कहने पर रजनी न नहीं कर सकी। रजनी के साथ उसका सहपाठी भास्कर, प्रभाकर, छाया आदि भी नृत्य में भाग ले रहे थे। भास्कर तीसरे वर्ष का विद्यार्थी था। उसके साथ नृत्य करने में रजनी कुछ संकोच कर रही थी। उसने इसके लिए हाँ तो कर दी, परन्तु वह अपने मन में एकाग्रता नहीं ला पाई थी। उसने अपनी भावनाओं, विचारों और ध्यान को केन्द्रित कर दिया ताकि उसकी यह एकाग्रता उसे कहीं भटकने न दे। वो प्रथम बार अपने विद्यालय से बाहर नृत्य का परिचय देने जा रही थी। आचार्य जी ने भातखण्डे की तरफ से, सबके लिए वस्त्र वेशभूषा, आभूषण ला दिये थे। उन्हें ग्रहण करके रजनी तो एक अप्सरा दिखाई दे रही थी, जैसे– इन्द्र की नर्तकियां पृथ्वी पर उतर गई है। नृत्य के कार्यक्रम का दिन भी समीप आ चला था। इसी व्यवस्था को देखते हुए रजनी एक दिन संध्या को छाया के साथ सूरज को अपने कार्यक्रम में आने का निमन्त्रण दिया। रमानाथ भी छाया को देख कर प्रसन्न हो गया।

आचार्य जी एवं उनके सहपाठीगण के साथ रजनी और सभी सुबह से ही इन्दिरा गाँधी प्रतिष्ठान पहुँच गए थे। आज उसे भास्कर के साथ अभिज्ञान शकुन्तलम नृत्य नाटिका करनी थी। भास्कर दुष्यन्त तो रजनी शकुन्तला की भूमिका में थे। वे आज अपने जीवन के एक बहुत बड़ी परीक्षा से गुजर रही थी। भास्कर ने भी रजनी को प्रोत्साहित किया और अपने नृत्य को एकाग्रता के साथ करने के लिए प्रेरित किया। आचार्य जी ने उन्हें कई बार मंच पर अभ्यास कराया। जिससे वो कहीं पर भी न चूके। नृत्य का अभ्यास करते हुए अब रजनी को भास्कर में सूरज का प्रतिरूप दिखाई देने लगा। उसे महसूस हुआ कि उसके सामने भास्कर नहीं अपितु सूरज ही है जो दुष्यन्त के रूप उसके समीप खड़ा हुआ है। इसी मनोस्थिति में रजनी ने अपना नृत्य ऐसा किया कि हाल में बैठा प्रत्येक व्यक्ति अपनी–अपनी कुर्सी से उठ कर तालियों की गूंज करने लगा। मीडिया के कैमरे वालों ने उनके काफी सारे चित्र लिए। रजनी भास्कर के साथ मंच पर सभी श्रोताओं का स्वागत कर रही थी। इतने में आचार्य जी के साथ कई प्रतिष्ठित एवं राजनेता और भास्कर का परिचय करवाया। नेता जी ने रजनी की बहुत प्रशंसा की।

यह सब देख कर रजनी को अपने ऊपर विश्वास ही नहीं हो पा रहा था कि वो कभी अपने को तो कभी भास्कर को देख रही थी। सूरज उसकी दृष्टि से कब ओझल हो गया, पता ही नहीं चला। उसके समीप तो अब भास्कर ही था। उसी क्षण रजनी की निगाहें सामने

श्रोताओं की तरफ गई तो उसने देखा सूरज, रमानाथ के साथ हाथ हिला कर रजनी की ओर इशारा कर रहा है। रजनी यह सब देख कर मुस्करा दी। रजनी कभी सूरज को तो कभी भास्कर की ओर निहार रही थी और चलचित्र वाले उसका चित्र ले रहे थे।

भाग—6

जब से भास्कर और रजनी की नृत्य नाटिका इन्दिरा गाँधी प्रतिष्ठान में हुई थी, तब से रजनी के मन में एकाग्रता के चले जाने से मन में बहुत उथल–पुथल हो चला था। प्रोग्राम के अगले दिन रजनी और भास्कर की नृत्य नाटिका की चर्चा, उनके चित्रों के साथ, लखनऊ के सभी समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ था। रजनी के सभी सहपाठियों ने प्रशंसा के पुल बांध दिए। वो सोच रहीं थी कि अब वो अपने गाँव की रज्जो न होकर नए वातावरण में रजनी उतर चुकी है। आचार्य जी तो अत्यधिक प्रसन्न थे। वो जो चाहते थे उस कसौटी पर रजनी पूर्णरूप में सफल हो चुकी थी। आचार्य जी ने रजनी को शास्त्री जी और उनके पिता गणेश जी को शुभ संदेश भी सुनाया। सूरज भी रमानाथ के साथ अगले ही दिन रजनी की प्रशंसा ही करे जा रहा था। उसकी सफलता की चर्चा सारे गाँव भर में पहुँचा दी। जाते समय में सूरज ने रजनी से कहा, ''रजनी अब तुम एक उच्च कोटि की कलाकार बन गई हो। आज तुम्हें समाज में एक प्रतिष्ठित कलाकार

के रूप में जाना जाता है।'' (लम्बी सांस लेते हुए धीरे से) मैं आज अभी वहीं खड़ा हूँ।

रजनी सूरज के अन्त के शब्दों पर गहन विचार करके एक नई सोच में पड़ गई।

उधर भास्कर भी रजनी की ओर आकर्षित हो चला था। वो प्रतिदिन किसी न किसी बहाने से रजनी से विद्यालय या नृत्य गृह में मिलने लगा। वो किसी भी बात को लेकर अपनी और रजनी को आकर्षित करने की कोशिश करने लगा। भास्कर की इन गतिविधियों को बढ़ता देख रजनी को अब एक नई स्थिति का आभास हो चला था। उसके इस व्यवहार से वो उससे दूर ही रहने का प्रयत्न करने लगी, परन्तु ऐसा न हो सका क्योंकि अब आचार्य जी रजनी और भास्कर को लेकर एक और नई नृत्य नाटिका का प्रस्ताव को लेकर आ गए। वो चाहते थे कि जैसे उन दोनों ने 'अभिज्ञान शकुन्तलम' की प्रस्तुति इदिरा गाँधी प्रतिष्ठान से हुई थी। उसी प्रकार अब वो कालीदास की रचना 'कुमार सम्भवम' में करें। इसके लिए उन्होंने भातखण्डे के और कुछ विद्यार्थियों को इसकी प्रस्तुति के लिए प्रोत्साहित करने को आमंत्रित किया। इसमें छाया और प्रभाकर भी आमंत्रित किए गए थे। 'कुमार सम्भवम' में शिव की भूमिका के लिए भास्कर को और पार्वती की भूमिका के लिए रजनी को चुना गया। ब्रह्मचारी की भूमिका के लिए प्रभाकर (जो एक भिक्षु के रूप में स्वयं शिव हैं।) और छाया को पार्वती की सखी की भूमिका के रूप में।

रजनी इस नए अभिनय के लिए, जो एक बहुत महत्वपूर्ण और चुनौतीपूर्ण था, उसके लिए आचार्य को अपनी स्वीकृति दे दी। वो यह जानती थी कि इस नृत्य नाटिका को करने के पश्चात उसका नाम समाज में उच्च कोटि के कलाकार के पायदान पर पहुँच जायेगा और वो एक प्रतिष्ठित कलाकार के रूप में उभर कर आ जाएगी। दूसरी ओर भास्कर भी इस नये अभिनय से अत्यधिक प्रसन्न हो गया। वो मन ही मन सोचने लगा कि रजनी से उसकी नजदीकियां अब कुछ ज्यादा ही हो जाएगी। कालीदास की इस रचना में शिव और पार्वती का मिलन और उनके पुत्र कुमार कार्तिकेय के जन्म के बारे में वर्णन किया गया है। भास्कर अपने हृदय में रजनी को पूर्णरूप से समा चुका था। जिस प्रकार शिव और पार्वती के बीच में प्रेम उत्पन्न होता है और अन्ततः विवाह सम्पन्न होता है। उसी प्रकार भास्कर की भी विचारधारा यही हो चली थी।

आचार्य जी उन दोनों और अन्य कलाकारों को प्रतिदिन अभ्यास कराने लगे। वो चाहते थे कि यह प्रस्तुति उनके विद्यालय भातखण्डे का नाम जरूर ऊँचा करेगी। करीब एक महीने तक इन सबका यह अभ्यास चलता रहा। इस बीच भास्कर रजनी के और नजदीक आने की कोशिश करने लगा। वो अब अपने को शिव की भूमिका के बजाए शिव ही समझने लगा और पार्वती के रूप में रजनी। रजनी भी अभ्यास के दौरान अपने इस अभिनय को बहुत अच्छी तरह से प्रस्तुत करने लगी।

उसके इस अभिनय से भास्कर नाटक न समझ कर उसे सत्य का बोध होने लगा।

सूरज को रजनी से मिले कई दिन हो गए थे। वो भी अपनी परीक्षा की वजह से महीना भर व्यस्त रहा। वो आज रमानाथ के साथ भातखण्डे आया। उसने रजनी और भास्कर के इस नये अभिनय को देख कर चकित रह गया। उसने शास्त्री जी से कालीदास की यह रचना 'कुमार सम्भवम' सुन रखी थी। इसलिए वो उन दोनों के इस अभिनय में रुचि लेने लगा। इसी बीच रजनी की नजर सूरज की ओर गई। वो अपना अभिनय बीच में ही रोक कर, उसके पास गई। सूरज ने रजनी और भास्कर को इस नई रचना के लिए प्रोत्साहित किया और इसके लिए उन्हें बधाई दी।

वह दिन भी आ गया जब 'कुमार सम्भवम' की प्रस्तुति उसी इन्दिरा गाँधी प्रतिष्ठान में होनी निश्चित की गई। कई प्रतिष्ठित एवं राजनेताओं सहित व अन्य लोगों के साथ पूरा हाल खचाखच भर गया। कुछ लोग तो खड़े–खड़े नृत्य का आनन्द उठा रहे थे। रजनी ने निमंत्रण पत्र (पास) सूरज और रमानाथ को भी दे दिए थे। सूरज अबकी बार अपने कुछ खास मित्रों के साथ नृत्य की शोभा बढ़ाने आया हुआ था।

नृत्य नाटिका करीब दो घण्टे तक चली। अबकी बार दर्शकों ने बीच–बीच में ही तालियों की गूंज से ही नृत्य नाटिका को आनन्दित कर दिया था। समाचार पत्र और दूरदर्शन व अन्य चैनल वाले आगे जा–जा कर वीडियो बना रहे थे। जिससे वो आज के समाचारों में

खास हेडलाइन दे सकें। नृत्य नाटिका की समाप्ति के पश्चात मुख्य मंत्री जी द्वारा रजनी और भास्कर को अन्य पात्रों को पुरुस्कृत किया गया। रजनी इस प्रकार के आदर से रोमांचित हो गई।

सूरज और रमानाथ बहुत देर तक प्रतिष्ठान के बाहर खड़े रजनी का इन्तजार करने लगे। उन्होंने सोचा कि जब रजनी अपने मित्रों के साथ बाहर आयेगी तो उसे सबसे पहले शुभकामना देगा। बहुत इन्तजार के पश्चात रजनी और भास्कर अपने साथियों और आचार्य जी एवं अन्य प्रतिष्ठित सदस्यों के साथ बाहर आते हुए दिखाई दिए। इससे पहले कि सूरज रजनी के समीप जाता, दूरदर्शन वालों ने उनको घेर लिया और उनका साक्षात्कार लेने लगे। सूरज अपने को भीड़ से असहाय महसूस करने लगा। दूर से ही रजनी की नजर सूरज पर गई। सूरज ने केवल हाथ हिलाकर उसको शुभकामना दे दी। तभी रजनी को कई और समाचार पत्र और मीडिया वालों ने घेर लिया। सूरज रमानाथ के साथ निरुत्तर की भाँति अपने छात्रावास को लौट आया।

अगले दिन सभी समाचार पत्रों में रजनी और भास्कर की नृत्य नाटिका की फोटो समाचार सहित प्रकाशित हुई। चलचित्र एवं दूरदर्शन वाले भी रात से ही समाचार के बुलेटिन में नृत्य की प्रस्तुति की झलक की प्रस्तुति दिखा रहे थे। सभी परिचित एवं अपरिचितगण ने आचार्य जी, रजनी, भास्कर, छाया और अन्य सदस्यों को बधाई एवं शुभ कामनाएं देनी प्रारम्भ कर दी। सूरज भी रमानाथ के साथ सुबह–सुबह रजनी

के छात्रावास पहुँच गया। रजनी को फूलों का गुलदस्ता देते हुए बधाई और शुभ कामनाएं दी। रजनी सूरज के आने पर प्रभावित हुई और उसको धन्यवाद दिया। कुछ देर रुक कर वो रजनी को एक उड़ता हुआ चुम्बन (फ्लाइंग किस) देता हुआ जाने लगा। रजनी अचानक इस व्यवहार में यकायक अभिभूत हो गई।

सूरज के जाने के पश्चात वो अपने में वशीभूत सी महसूस करते हुए लज्जा गई। छाया ने रजनी और सूरज को हाथ हिलाते हुए देख लिया था। रजनी के पास आकर उसके गाल पर प्यार से हाथ फेरते हुए, मुस्कराते हुए बोली कि बचपन का प्यार ही सच्चा प्रेम होता है। बाकी सब तो दिखावा ही होता है।

छाया के जाने के पश्चात रजनी एक अजीब सी उहापोह स्थिति में आ गई। उसे शास्त्री जी के प्रेम शब्द के वक्तव्य, जो उन्होंने एक दिन सूरज और उसे समझाया था। वे शब्द एक–एक करके उसे स्मरण हो आये। ''अपनी मनःस्थिति में सकारात्मकता लाते हुए वे शब्द ''प्रेम सम्बन्ध'' जिसे रोमांटिक सम्बन्ध में भी कहा जाता है, दो व्यक्तियों के बीच एक घनिष्ठ भावनात्मक और अक्सर शारीरिक सम्बन्ध में भी होता है। इसके अन्तर्गत घनिष्ठता, जुनून शामिल होता है। यह सम्बन्ध केवल शारीरिक आकर्षण से परे होता है, जो भावनात्मक, विश्वास, सुरक्षा और आपसी सम्मान को बढ़ावा देता है।''

इसी मनःस्थिति को लिए वो अपने छात्रावास के कमरे में चली आई। छाया को न पाकर उसे छाया का कागज पर संदेश लिखा मिला ''आज अवकाश है और

आचार्य जी ने सभी विद्यार्थियों को नृत्य भवन में बुलाया है।'' रजनी शीघ्र ही तैयार होकर नृत्य भवन की ओर एक मीठी मुस्कान लिए चल दी।

भाग—7

आचार्य जी ने सभी विद्यार्थियों को अपने नृत्य भवन में आमंत्रित करते हुए सबको धन्यवाद दिया और भविष्य में भी पहले से अच्छा प्रदर्शन करने के लिए प्रोत्साहित करा। इसके लिए उन्होंने आश्वस्त किया और भी नये नृत्य नाटिकाओं की पटकथा लिखी जा रही है।

यह सुनकर भास्कर तो अत्यन्त प्रसन्न हो उठा और रजनी की ओर दृष्टि डालते हुए मुस्करा दिया। 'कुमार सम्भवम' की सफलता के पश्चात रजनी को अधिक प्रसन्न होते पाया। रजनी ने अपनी सफलता के लिए भास्कर को भी धन्यवाद दिया। कुछ दिनों से वो भास्कर के साथ कुछ ज्यादा ही समय व्यतीत करने लगी। बात—बात पर हंसना, उसके समीप से आकर बात करना इत्यादि। उसके इस व्यवहार से भास्कर के हृदय और मन में एक नये प्रकार का द्वन्द उत्पन्न होने लगा। वो अब रजनी से प्रेम करने लगा। परन्तु यह प्रेम केवल मात्र एक तरफा ही था। दूसरी ओर रजनी भी उससे मित्रवत् प्रेम दर्शा रही थी, जो एक ऐसा प्रेम

है, जो दो दोस्तों के बीच होता है। परन्तु भास्कर तो इसे अपना प्रेम समझ रहा था। वो इसी मिथ्या में अपने इस दृष्टिकोण से सोचे बैठा था कि एक न एक दिन वह अपने प्रेम को रजनी से अवश्य ही उजागर करेगा।

एक दिन आचार्य जी ने भास्कर और रजनी को अपने प्रधानाचार्य के कमरे में बुलवाया। दोनों ने विचार करते हुए प्रवेश किया कि शायद अब कोई नई नृत्य नाटिका का शुभारम्भ हो रहा है। परन्तु आचार्य जी ने दोनों को बहुत–बहुत धन्यवाद देते हुए कहा कि आप दोनों को छात्रवृत्ति और प्रमाण पत्र के साथ पुरुस्कृत किया जा रहा है, जो उन्हें सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण, नई दिल्ली द्वारा प्रदान किया जाएगा। इसके लिए दिल्ली से कुछ गणमान्य सदस्य यहाँ लखनऊ आ रहे हैं।

यह समाचार सारे भातखण्डे के शिक्षक और विद्यार्थियों के बीच पहुँच गया। आचार्य जी की इस प्रसन्नता को देख कर सभी ने आचार्य जी, रजनी और भास्कर को बधाई एवं शुभकामनाएं देनी शुरू कर दी। छाया ने रजनी को गले से लगा लिया। उसने महसूस करा कि भास्कर रजनी की ओर काफी अग्रसर होता जा रहा है। वह इस स्थिति की गम्भीरता को अच्छी तरह से समझ चुकी थी। उसने भास्कर की ओर तिरछी नजरों से देखा। भास्कर उसके इस प्रकार के देखने से कुछ सकपका सा गया और रजनी के समीप से कुछ दूर हट कर खड़ा हो गया।

आचार्य जी की अथक मेहनत और सफलता को देखते हुए उन्होंने साल भर में भास्कर, रजनी और अन्य सभी विद्यार्थियों द्वारा शास्त्रीय नृत्य करवाएं। जैसे– भारतनाट्यम, कथक, कथकवली, मणिपुरी, मोहिनी, अट्टम, कुचिपुड़ी आदि। सभी विद्यार्थियों को इन सारे नृत्यों में निपुण बना दिया।

साल भर के अभ्यास के पश्चात भास्कर, रजनी, छाया और प्रभाकर सभी सफलता के शिखर पर पहुँच गए। भास्कर की रजनी से मित्रता घनिष्ठता में बदल गई। परन्तु भास्कर अपने मन की बात रजनी से न कह सका। इसी बीच छाया भी भास्कर से घनिष्ठ सम्बन्ध बना चुकी थी। अब तो वह कभी–कभी रजनी को बताए बिना भास्कर के समीप जाकर हंस–हंस कर बाते करती।

सूरज भी अपने प्रथम वर्ष की परीक्षा में व्यस्त हो गया। वो कभी–कभी रजनी के पास आकर मिल जाता। रजनी की इस प्रगति को देख कर प्रसन्नतापूर्वक उसको प्रोत्साहित होकर प्रशंसा करता। सूरज का मन भी अब शिक्षा की ओर ज्यादा रहने लगा। वो चाहता था कि वो अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हो। जिससे वो बी0काम के बाद आगे और शिक्षा ग्रहण कर सके। वो अब गाँव का सूरज न होकर शहर की विचारधारा का सा हो गया था। परन्तु जब भी गाँव जाता तो गुरू माँ से अवश्य आर्शीवाद लेता जाता। कभी–कभी वो अपने विश्वविद्यालय के सालाना जलसे में सितार और वायलन से धुन निकाल कर प्रस्तुति देता।

वो दिन भी आ गया जब भास्कर का बी0पी0ए0 का आखिरी साल भी समाप्त हो चला था। सभी विद्यार्थी भास्कर के चले जाने से उदास हो चले थे। रजनी कुछ अवसाद में आ गई क्योंकि वो यह सोच कर उदास रहने लगी कि अब नृत्य नाटिका में उसका सहभागी कौन होगा। अभी उसे दो वर्ष और भातखण्डे में बाकी हैं। छाया तो अन्दर से प्रसन्न थी क्योंकि अब भास्कर की दूरी रजनी से हो जाएगी।

छाया दिन प्रतिदिन भास्कर के समीप होने लगी। वो अपने मकसद में पूर्णरूप से उत्तीर्ण होना चाहती थी क्याोंकि उसे तो भास्कर को रजनी से दूर करना था। उसके इस प्रयास में रुकावट आ गई। आचार्य जी ने सभी विद्यार्थियों को आमंत्रित करके बताया कि सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र, दिल्ली से कुछ अधिकारी वर्ग लखनऊ अगले सप्ताह रजनी और भास्कर को पुरुस्कृत एवं प्रमाण पत्र देने आ रहे हैं।

अगले सोमवार को प्रशिक्षण केन्द्र, दिल्ली वाले अधिकारी वर्ग का लखनऊ में आगमन हुआ। आचार्य जी ने अपने केन्द्र भातखण्डे में ही एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया। इसमें उन्होंने 'कुमार सम्भवम' की नृत्य नाटिका के साथ अन्य विद्यार्थियों के भी नृत्य का आयोजन करवाया। प्रतिष्ठित अधिकारी यह सब देख कर बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने भास्कर और रजनी को पुरुस्कृत तो किया ही अपितु नृत्य नाटिका के लिए दिल्ली में आयोजन का निमन्त्रण भी दिया।

भास्कर और रजनी यह सब प्रशंसा पाकर आत्म विभार हो गये। दोनों के जीवन में पहली बार ऐसा समय आ रहा था कि वो भी दिल्ली में अपना प्रदर्शन करने जा रहे हैं। इसके लिए आचार्य जी ने उन्हें बधाई और आर्शीवाद दिया। रजनी यह सब पाकर अत्यन्त ही प्रसन्नचित हो गई। वो उसी संध्या को छाया को साथ लेकर सूरज के पास गई। सूरज भी यह सब जान कर रजनी को प्रोत्साहित करते हुए बधाई दी। छाया ने तो सूरज को यहाँ तक कह दिया कि आपके ही प्रोत्साहन की वजह से रजनी आज यहाँ तक उच्च शिखर पर पहुँची है। आपके लिए ही यह गाँव छोड़ कर लखनऊ आ गई। सारा श्रेय आपको ही जाता है।

सूरज छाया का यह वक्तव्य सुन कर थोड़ा गम्भीर मुद्रा में हो गया। उन दोनों के चले जाने के पश्चात सूरज कुछ उदास सा हो गया। तो रजनी की इस प्रगति को देखते हुए, उसके हृदय में कुछ ईर्ष्या सी होने लगी। उसका अहंकार उसके मस्तिष्क में कौंध रहा था। वो आज उसी स्थिति में है, जहाँ वो एक साल पहले था, तो दूसरी ओर रजनी समाज में प्रतिष्ठित हो गई है। आज रजनी समाज में प्रतिष्ठित एवं गणमान्य व्यक्तियों में पहचानी जाती है। अब तो उसे दिल्ली में नृत्य नाटिका के लिए आमंत्रित किया गया है, वो भी भास्कर के साथ। उसके प्रति कुछ संवेदनशीलता एवं ईर्ष्या का बोध उत्पन्न हो चला था। वो अपने इस असंतोष को रोक नहीं सका।

उधर जब से छाया रजनी के साथ सूरज से मिल कर आई थी, वो भी एक उहापोह की स्थिति में आ गई। उसके पास अब दो विकल्प थे या तो वो भास्कर को अपनी ओर आकर्षित करे या रजनी का ध्यान भास्कर के प्रति कम हो जाय। वो यह जान चुकी थी कि सूरज के मस्तिष्क में रजनी के प्रति असंतोष सा हो चुका था।

आचार्य जी ने दिल्ली जाने के लिए विद्यार्थियों के नाम घोषित करे थे। उसमें छाया और भास्कर का भी नाम था। छाया के लिए उचित अवसर आ चला था कि अब वो भास्कर को अपनी ओर आकर्षित कर सके। जिससे भाष्कर का आकर्षण रजनी की ओर न जा सके। इसके लिए वो भास्कर के समीप आने लगी और भास्कर को अपनी ओर आकर्षित कर सकेगी, इसके लिए वो उचित अवसर को खोजने लगी। जिससे भास्कर उसकी ओर न जा के छाया की ओर समीप आ जाए।

भाग—8

वह दिन भी आ गया, जब सब विद्यार्थी, आचार्य जी और अन्य शिक्षकों को श्री कृष्ण मुरारी शुक्ला जी के साथ दिल्ली चलना था। सभी विद्यार्थीगण समय से पहले तैयार हो गए। भास्कर तो बहुत ही प्रसन्न नजर आ रहा था। रजनी और छाया के चेहरे पर प्रसन्नता नजर आ रही थी। रजनी का मन विचलित हो रहा था। कभी वो सूरज तो कभी भास्कर के बारे में सोच रही थी। सूरज बचपन से ही उसे प्रेम की परिभाषा को उसे अच्छी तरह से समझा चुका है। परन्तु वह जमींदार जी की वजह से शंकित हो रही थी। सूरज की माँ से पूरी तरह से आश्वस्त थी, क्योंकि उन्होंने उसे कई बार दिल से आशीष भी दी है। दूसरी ओर भास्कर का झुकाव उसके प्रति दिन प्रति दिन बढ़ता ही जा रहा था। स्त्री सब कुछ पुरुष की संवेदना को समझ लेती है। चाहे वो उसे प्रकट करे या न करे।

छाया की अन्तर्दशा ने उसे बेचैन कर दिया। एक तरफ वो रजनी की मदद करना चाहती थी, क्योंकि वह यह अच्छी तरह से जानती थी कि सूरज और रजनी

एक दूसरे को बचपन से ही चाहते हैं और किसी भी क्षण रजनी को अपनी आँखों से ओझल नहीं होने देता। जब उसने सुना कि रजनी ने लखनऊ आने की सहमति दे दी थी। छाया यह नहीं चाहती थी कि सूरज को किसी प्रकार का आघात पहुँचे। इसी वजह से वो भास्कर को अपनी ओर आकर्षित करने लगी थी। अपने मन की व्यथा को भी वह जान नहीं पाई थी क्योंकि प्रेम शब्द की परिभाषा से वो कोसों दूर थी, वह अनभिज्ञ थी।

प्रेम शब्द का सही अर्थ एक गहरा भावनात्मक जुड़ाव से हैं, जो किसी दूसरे व्यक्ति के प्रति स्नेह, सम्मान, सुख–दुख में साथ रहने की प्रेरणा देता है। प्रेम में आत्म समर्पण, निस्वार्थता और एक दूसरे के प्रति भलाई की इच्छाशक्ति होती है।

छाया यह सब जानती थी परन्तु उसकी अन्तर्दशा में यह भाव कहीं दूर अदृश्य से प्रतीत हो रहे थे। यह सब उसने सूरज एवं रजनी में पाये थे। इन्ही सब विचारों में खोई छाया ने निर्णय लिया कि जब तक भास्कर भातखण्डे में है, वो उसको रजनी से दूर रखने के लिए भास्कर के प्रति अपने स्नेह को प्रकट करती रहेगी।

आचार्य जी ने सभी को सुबह पाँच बजे तैयार रहने के लिए बोल दिया, क्योंकि सबको 6:10 मिनट की तेजस एक्सप्रेस से दिल्ली जाना था। स्टेशन पर छाया अपनी निगाहें भास्कर पर ही लगाए हुए थी। जैसे सभी रेल में चढ़ने लगे, तभी छाया ने रजनी को कहा कि उसे आचार्य जी ने बुलाया है। उसी क्षण भास्कर रेल में चढ़

रहा था। छाया ने उचित अवसर देख कर भास्कर के पीछे चल दी। भास्कर जैसे ही सीट पर बैठा, तुरन्त ही छाया भी उसी के साथ वाली सीट पर बैठ गई। भास्कर की निगाहें इधर–उधर गई तो छाया ने तुरन्त भांपते हुए कहा ''किसे ढूढ़ रहे हो, रजनी तो आचार्य जी के साथ बैठ गई।'' भास्कर झेंपते हुए निरुत्तर सा हो गया। वो चाहता था कि उसका सफर रजनी के साथ कटता, तो शायद वो अपने मन की बात कह देता। इससे अच्छा समय और कैसे मिलता। छाया ने भास्कर का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए अपने बैग से एक 'कडबरी चाकलेट' निकालते हुए उसे दी 'लो मुँह मीठा करो, आज हम शुभ काम के लिए जा रहे हैं। इससे आपको प्रसिद्धि प्राप्त होगी। आप उच्च कोटि के कलाकार की गणना में आने लगोगे।

इतना सब सुन कर भास्कर का मन, जो रजनी के लिए व्याकुल हो रहा था, छाया की ओर गया, जो उसकी प्रशंसा किए जा रही थी।

कुछ क्षण भास्कर एवं छाया शान्त मुद्रा में बैठे रहे। भास्कर का मन तो कहीं और था तो दूसरी ओर छाया यह अवसर खोज रही थी कि कब भास्कर अपनी शान्त मुद्रा खोलेगा, परन्तु वो अब भी शान्त ही था। कुछ क्षण छाया ही ने भास्कर से पूछा ''क्या आप पहले भी दिल्ली गए हैं? इस पर भास्कर ने केवल ''हाँ'' में ही उत्तर दिया। छाया तुरन्त पूछ बैठी, कब गए थे? छाया के इस प्रश्न से भास्कर को उत्तर देना ही पड़ा। ''जब मैं अपनी बहन की शादी में दिल्ली गया था।''

इन प्रश्नों के पश्चात तो छाया को वार्तालाप का उचित समय और अवसर मिल गया। बहुत समय तक भास्कर और छाया में वार्तालाप होता रहा। उन दोनों की यह वार्तालाप में तब भंग पड़ गया जब रेल का कैटर्स नाश्ता लेकर आया। दोनों ने बाते बन्द करके अपना–अपना नाश्ता खाना शुरू कर दिया। परन्तु छाया फिर भी चुप नहीं हुई, कहने लगी, भास्कर को खाने में क्या–क्या अच्छा लगता है, वो जानने लगी। भास्कर अचानक पूछ बैठा, ''तुम तो मेरे बारे में ऐसे पूछ रही हो, जैसे तुम मेरी शुभचिन्तक हो, तुम ही मेरी जीवन–साथिन हो।'' यह सब भास्कर के मुँह से अचानक ही निकल गया। छाया यह सुन कर कुछ क्षण सकपका गई और झट से उत्तर दिया ''नहीं'' ऐसा तो कुछ भी नहीं है, मैं तो बस ऐसे ही पूछ रही थी, परन्तु जीवन में आगे क्या होगा, कोई नहीं जानता।''

टुण्डला स्टेशन से ट्रेन आगे निकल गई। कुछ देर तक दोनों चुप ही थे। छाया विचार कर रही थी कि वह कुछ ज्यादा ही बातों में उलझ गई थी। उसका उद्देश्य तो मात्र भास्कर को रजनी से दूर रखना था परन्तु भास्कर का वह प्रश्न उसको द्वन्द उत्पन्न कर रहा था। वह सोचने लगी कि कहीं यह नाटक सच की परिभाषा में न बदल जाए, उसे इससे चौकन्ना रहना पड़ेगा। कहीं उसके जीवन में एक नया मोड़ न आ जाए।

छाया ही ने चुप्पी तोड़ी, वह देख रही थी कि भास्कर के हाथ की कोहनी उसके शरीर से लगती हुई

रिश्तों की भंवर में उलझ चुकी थी। उसके भी उर (वक्ष स्थल) में धड़कन जोर–जोर से उत्पात मचा रहे थे। उसे महसूस हुआ उसकी छाती अपने आप ही आटे की ढीली लोई की जगह सख्त हो चली थी। जिसमें बेलन रख कर रोटी बनाई जा सकती है। भास्कर भी अपनी कोहनी को सटाये हुए बहुत देर से बैठा था। छाया समझ गई कि भास्कर उसके आकर्षण में समीप आ गया। तुरन्त ही बोली ''टुण्डला निकल गया, आधा रास्ता शेष रह गया है।'' अपने को सम्भालते हुए, भास्कर छाया की आवाज सुन कर कुछ सहम गया और पूछने लगा कि ''आपने क्या कहा।''

छाया पूछ बैठी ''क्या आप सो गये थे या कोई सपना देख रहे थे?'' भास्कर ने अपनी कोई प्रतिक्रिया नहीं दी और पानी की बोतल निकालते हुए अपने शरीर का ठण्डा करने लगा।

बातों–बातों में टुण्डला कब आ गया पता ही नहीं चला, परन्तु छाया का उद्देश्य उसे पूरा होता दिखाई दिया। भास्कर ने छाया से उसके जीवन एवं परिवार के बारे में सब जानकारी प्राप्त करी। जीवन के विषय में पुरानी यादों को भी दोहराया। वो अब एक घनिष्ठ मित्र बन गए थे। छाया को धीरे–धीरे प्रेम शब्द का अर्थ समझ आने लगा था। क्षण भर के लिए वह अपना मन स्थिर किए हुए थी, परन्तु उसकी भावनाएं जागृत सी होती प्रतीत हो रही थी।

भाग—9

दिल्ली स्टेशन पर सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र, दिल्ली के कुछ अधिकारीगण उन सबका स्वागत करने आए हुए थे। आचार्य जी के साथ सभी पन्द्रह सदस्यों का जोरदार स्वागत हुआ। इस प्रशिक्षण केन्द्र का मुख्य उद्देश्य शिक्षा प्रणाली का संस्कृति के साथ एकीकृत करने और छात्रों में सहिष्णुता, संवेदनशीलता और स्वतंत्र सोच को बढ़ावा देने में मदद करता है।

रजनी और छाया का अपना—अपना सूटकेस साथ में लिए सभी आये हुए व्यक्तियों के साथ चल दी। आचार्य जी और शुक्ला जी के साथ सभी सदस्यों को 'कमानी ऑडिटोरियम मण्डी हाऊस के गेस्ट हाऊस' में ठहरने का प्रबन्ध किया गया था। 'कमानी आडिटोरियम' के परिसर का एक प्रमुख भाग 'श्री राम कला केन्द्र', जो नाटकों और बेले के लिए प्रमुख है, में रजनी और छाया एक ही कमरे ठहरी। आज छाया को रजनी के विषय में रुचि हो चली थी। वो आज रजनी के साथ बहुत कुछ कहना चाह रही थी परन्तु विवश थी। छाया ने अपने दिल की बात दिल में ही छुपाए रख ली थी। छाया का

हृदय स्निग्धता से ओत–प्रोत हो चुका था। भास्कर से तो मिलन तो केवल इस उद्देश्य से किया था कि उसको रजनी से अलग कर सके और रजनी और सूरज का प्रेम में साम्यता के साथ–साथ कोमलता बनी रहे। त्याग के जिस मार्ग पर वह चल रही थी, वहाँ से थोड़ा रास्ता कठिन एवं भटका हुआ था।

कुछ समय पश्चात आचार्य जी ने सभी सदस्यों को साथ लेकर एक विशेष प्रेक्षागृह में लेकर गए। रजनी तो यह सब देख कर आश्चर्यचकित सी हो गई। लखनऊ के प्रेक्षागृह से यह अति सुन्दर था। आचार्य जी ने बताया कि इसका नाम 'कमानी आडिटोरियम' है। यहाँ पर सभी उच्च कोटि के कलाकारों ने नृत्य–नाटिका एवं नाटक प्रस्तुत किए हैं। करीब छः सौ लोगों के बैठने का प्रबन्ध है। परिसर के साथ एक प्रमुख भाग 'श्रीराम भारतीय कला केन्द्र' है, जहाँ पर नाटक एवं बैले भी होते हैं। बैले यह एक नृत्य नाटिका का स्वरूप है। यह शब्द पन्द्रहवी शताब्दी में इटली और रूस होते हुए भारत वर्ष मे पनपा। इसी आडिटोरियम में आप सबका भी नृत्य नाटिका होनी है।

अगले दिन से सभी सदस्यों को आचार्य जी ने प्रशिक्षण देना शुरू कर दिया। वो चाहते थे कि प्रदर्शन ऐसा प्रस्तुत किया जाए कि जो भी देखे प्रफुल्लित हो जाए। वो इसलिए क्योंकि आचार्य जी एक अच्छी प्रस्तुति के लिए प्रतिबद्ध थे। तीन दिनों तक दो–तीन बार सभी को नृत्य नाटिका 'कुमार सम्भवम' का अभ्यास करवाया।

वो दिन भी आ गया, सभी कलाकार अपने–अपने अभिनय को सुबह ही से दोहराने लगे। सभी मिलकर एक कलात्मक प्रदर्शन प्रस्तुत करना चाहते थे। वो चाहते थे कि आचार्य जी के मार्गदर्शन में मुख्य रूप से भावनाओं का प्रदर्शन न होकर यथार्थ में शिव एवं पार्वती ही उतर आए हैं। मंच पर तो नाटिका करना अदाकारी के उदारण हैं।

सभी कलाकार भास्कर, रजनी, छाया, प्रभाकर व अन्य अपनी–अपनी वेषभूषा में ऐसे लग रहे थे कि मानों सभी देवी–देवतागण पृथ्वी पर उतर आए हों। आचार्य जी और शुक्ला जी तो लखनऊ की वेषभूषा में सुसज्जित लग रहे थे। इसी के साथ सभी कंसर्ट वाले अपने–अपने वाद्ययंत्र जैसे– वायलिन, सेलो, गिटार, सितार, बांसरी, कलैरिनट, ओबो, सक्सोफोन, तबला, ढोलक इत्यादि वाले सुबह ही से मंच पर आकर बैठ गए थे। आचार्य जी ने संगीत की धुन के साथ नृत्य–नाटिका का अभ्यास बहुत ही अच्छी तरह से करवा दिया था।

रजनी और भास्कर के अपने रूप में श्रृंगारित लग रहे थे। रजनी की एक नजर भास्कर पर गई। उसने महसूस करा कि उसके नेत्र पहले जैसे दृष्टि उस पर रखते थे, उनमें कुछ अन्तर लग रहा था। सभी गणमान्यजन रंगशाला में आने लगे। रजनी ने मंच के परदे के पीछे से देखा कि सभी प्रतिष्ठित व्यक्ति, मंत्रीगण बड़े–बड़े कलाकार, जिनके बारे में केवल सुना ही था, वो सब पहुँच रहे हैं। सारा का सारा हाल भर

गया था। कुछ दर्शक तो पीछे खड़े हुए हैं। दूरदर्शन तो लाईव टेलीकास्ट करने जा रहा था।

उसका ध्यान सूरज की ओर केन्द्रित हो गया, उसे सूरज की याद हो आई। वो सूरज की उपस्थिति चाहती थी। उसी क्षण आचार्य जी उसके समीप आते हुए दिखाई दिए। उन्होंने रजनी को अपना मोबाइल देते हुए कहा, ''रजनी तुम्हारा फोन है।''

''इस वक्त (आचार्य जी से) कहते हुए रजनी ने मोबाइल आचार्य जी से लेते हुए जैसे ही ''हैलो'' कहा तो सूरज की आवाज ने उसे रोमांचित कर दिया। उसने सूरज को शो का संदेश दिया और लाईव टेलीकास्ट के बारे में बताया।''

उधर सूरज उत्तेजित होकर विश्वविद्यालय में गया और अपने मित्रों के साथ दूरदर्शन पर लाईव टेलीकास्ट देखने लगा। दूरदर्शन पर अभी नृत्य नाटिका के बारे बतलाया जा रहा था। सूरज ने उसी वक्त अपने गाँव पिता जी को यह खबर दी। गाँव में यह खबर फैलते ही सभी के सभी जमींदार जी के घर पहुँच गये। जमींदार ने अपना बड़े स्क्रीन वाला टेलीविजन बाहर आँगन में लगवा दिया। सभी गाँव वाले रजनी की प्रस्तुति को देख सकें। रजनी के माता–पिता (रुकमणी और गणेश) तो फूले नहीं समा रहे। शास्त्री जी एवं लक्ष्मी तो अत्यन्त प्रसन्न हो उठे। उन सबकी खुशी की कोई सीमा ही नहीं थी। आज उनकी शिष्या दूरदर्शन पर प्रस्तुति जो दे रही है, वो भी दिल्ली में। गणेश जी और शास्त्री जी तो अपना सिर उँचा करके गाँव भर से

आर्शीवाद ले रहे थे। जमींदार और उनकी पत्नी सावित्री ने तो रात का भोज आए हुए सभी लोगों को देने को कहा। उनके लिए तो आज पूरे गाँव के लिए गर्व की बात है।

उधर मंच पर आचार्य जी एवं शुक्ला जी 'कुमार सम्भवम' के विषय में सभी दर्शकों को संक्षिप्त में बता रहे थे। सभी चैनल और दूरदर्शन अपने–अपने कैमरे की प्रस्तुति दे रहे थे। उनके व्याख्यान के पश्चात मंच पर दर्शकों के लिए नृत्य नाटिका आरम्भ होने लगी। सभी कलाकार यथा सम्भव अपने–अपने दृश्य पर प्रस्तुति करने लगे। नृत्य–नाटिका करीब एक घंटे तक चली। सभी दर्शकगण एक मूक की भाँति देख रहे थे। नाटिका के समाप्त होने पर सारा हाल तालियों की बौछार से गूंज उठा। तभी आचार्य जी एवं प्रशिक्षण केन्द्र के अधिकारीगण मंच पर आकर प्रतिष्ठित व्यक्तियों को सादर मंच पर आमंत्रित किया। उनके बीच सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार के मंत्री जी भी मंच पर आए। तालियों से सारा हाल गुंजित हो उठा। उन्होंने सभी कलाकारों को पुरुस्कृत किया। भास्कर और रजनी को विशेष कर मंत्री जी ने प्रोत्साहित करते हुए प्रमाण पत्र दिया और सभी को प्रस्तुति के लिए आर्शीवाद दिया।

अगले दिन नृत्य–नाटिका की प्रस्तुति का उल्लेख सभी समाचार पत्रों में फोटो के साथ छापा गया। उधर गाँव में आस–पास गाँव में यह चर्चा का विषय बन गया। जो भी मिलता, सब शास्त्री जी, गणेश जी और जमींदार जी को बधाई और शुभकामनाएं देता।

जब से सूरज ने दूरदर्शन पर रजनी और भास्कर की प्रस्तुति देखी थी, तब से उसकी अन्तर्ात्मा हर्षित हो रही थी। परन्तु दूसरी ओर कहीं दूर हृदय विचलित होने के साथ घृणित हो चला था। उसका एक मात्र कारण रजनी का भास्कर के प्रति समर्पित एवं आलिंगित होना था। यह सब उसके लिए असहनीय हो चला था। धीरे–धीरे प्रेम की भावना में शक की भावना उत्पन्न हो जाती है, जो कभी–कभी विकराल रूप धारण कर लेती है। वो सोचने लगा कि वो एक जमींदार का बेटा है और रजनी आज समाज में प्रतिष्ठा पाने लगी है। यदि प्रेम की अपनी इच्छाओं के अनुसार कठपुतली की तरह चलाना चाहते हो या उस पर अपना पूर्ण अधिकार व्यक्त करते हो तो जिससे आप प्यार करते हो वो आपके अनुरूप नहीं चल पाता और शक की भावना जागृत होने पर धीरे–धीरे घृणा का रूप ले लेती है।

यही सब कुछ सूरज के मन और हृदय में एक विछोह उत्पन्न किए हुए था। वो अपनी यथा शक्ति द्वारा उचित निर्णय लेने में असमर्थ हो चला था। एक अवसाद की स्थिति उत्पन्न हो चली थी।

भाग—10

जब से गुलाब राय जी फूलचन्द जी से कुन्दनगंज मिल कर आये थे। उनके मन में पीड़ा का भाव रहता था कि क्या अब उनको इस प्रकार से तिरस्कृत किया जाने लगा है। वह इस बात को लेकर कुछ चुप से हो गये थे और उन्होंने इसलिए निश्चय किया कि वे अपने सूरज को आगे उच्च शिक्षा के लिए भेज देंगें। वे बहुत खुश हुए थे, जब सूरज ने अपनी सहमति दे दी थी। वो तुरन्त अपने मित्र श्री रामचन्द वर्मा जी के पास सूरज को साथ लेकर लखनऊ विश्वविद्यालय गये थे। उन्हें अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव हुआ था, जब सूरज को प्रवेश मिल गया था। वो जब सूरज को प्रवेश दिलवा कर जब वापस आये थे तो उन्होंने अपने सगे मित्रों को अपने यहाँ भोज पर निमंत्रण दिया क्योंकि सूरज ही अपने और आस–पास के गाँव का पहला व्यक्ति था जो उच्च शिक्षा के लिए गया था।

उधर दूसरी ओर फूलचन्द जी के यहाँ से अपमानित होकर जमींदार गुलाब राय जी वापस गये थे

तब से यह बात उनके मन को कचोटती रहती। वह हमेशा यही सोचते रहते कि उन्होंने अपनी पुत्री सुमन की बात क्यों मानी, क्यों नहीं उन्होंने अपनी पत्नी रत्ना को उस दिन जोर दिया और सुखराम का लड़का अपने गाँव में लड़ाई झगड़ा करके पुलिस के डर से कहीं भाग गया। जब से गया तो अभी तक फिर न लौटा।

उधर सुमन अपने लिए फैसले पर पछतावा करने लगी। फूलचन्द जी और रतना को पछतावा होने लगा। वो अपने किए पर शर्मिन्दा महसूस कर रहे थे।

सुमन, जो अब तक चुप बैठी हुई थी, अपने पिता से उच्च शिक्षा के लिए आग्रह करने लगी। फूलचन्द जी ने उसके इस आग्रह को स्वीकार करके लखनऊ विश्वविद्यालय के आई0टी0 कालेज, जिसे इजबेला थाबर्न डिग्री कालेज भी कहते हैं और इसकी स्थापना 1870 में हुई थी। यह लखनऊ का एक प्रसिद्ध महिला कालेज भी है। सुमन का दाखिला बी0ए0 (बैचलर्स आफ आर्ट्स) में हो गया।

सुमन जबसे लखनऊ कालेज में आई थी, धीरे–धीरे उसका परिचय अपने कालेज के कई मित्रों से हो चला था। सुमन भी कालेज के प्रोग्राम में भाग लेने लगी थी। अपने कालेज की एक्स्ट्रा करिकुलर एक्टिीविटीज, जैसे– खेल–कूद, कला और संस्कृति एवं साहित्य की गतिविधियों में भाग लेने लगी। सुमन को इन सबसे रुचि स्कूल से ही थी। यहाँ भी शिक्षा के साथ–साथ उसने अपनी इस रुचि को यथावत बनाए रखा।

इन्हीं सब गतिविधियों में सुमन का समय व्यतीत होने लग्रा। कभी खेल–कूद में तो कभी किसी अन्य में पुरुस्कृत होने लगी। छोटे–छोटे एंकाकी में भाग लेने लगी। अब कालेज में सुमन एक प्रतिष्ठित विद्यार्थी हो चली थी। प्रत्येक अध्यापिका एवं विद्यार्थीगण सुमन को पहचानते थे।

कुछ समय पश्चात उसके कालेज में प्रतियोगिता के लिए नाटक में भाग लेने के लिए उसके गुरुजन ने आमंत्रित किया। उन्होंने उसके लिए मोहन राकेश के द्वारा लिखित 'आषाढ़ का एक दिन' की प्रस्तुति के लिए सुमन को मल्लिका की भूमिका करने के लिए कहा। पहले तो सुमन ने असहमति सी दिखाई परन्तु गुरू जी के आग्रह करने पर उसे विवश कर दिया। अन्य भूमिका प्रियगुमंजरी के लिए भी लड़कियों का चयन कर लिया गया क्योंकि गुरू जी इन कन्याओं की प्रतिभा से भली–भाँति से परिचित थे। प्रमुख नर पात्र कालीदास, विलोम और मातुल के लिए उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय से चयन कर लिया था।

इसके लिए प्रमुख कालीदास पात्र के लिए सूरज का चयन किया गया। सर्वप्रथम तो सूरज ने इसके लिए अपनी असहमति दे दी। परन्तु उसी क्षण उसके हृदय में रजनी के प्रति ईर्ष्या ने उसके घावों को उजागर करके उसे भी कुछ प्रतिष्ठित कार्य करने पर विवश कर दिया। गुरू जी ने सूरज की कला में रुचि का अनुभव पहले ही से कर चुके थे। वो यह जानते थे कि वो संगीत में भी रुचि रखता है और कई वाद्य–यन्त्रों का ज्ञाता है।

इस प्रतियोगिता में विभिन्न उत्तर प्रदेश के कालेजों के छात्र अलग–अलग टीमें भाग ले रही थी। लखनऊ से भी इस नाटक का आयोजन किया जा रहा था। अभी प्रतियोगिता होने में तीन महीनों का समय था। अभी जुलाई माह ही चल रहा था और प्रतियोगिता अक्टूबर माह में होने जा रही थी। नाटक का पूर्वाभ्यास अभी पन्द्रह दिनों पश्चात होना था। गुरू जी ने सभी पात्रों को अपनी–अपनी भूमिका संवाद की प्रति याद करने के लिए दे दी। सूरज के साथ रमानाथ एवं राकेश का भी चयन किया गया था।

ठीक पन्द्रह दिनों पश्चात नाटक का पूर्वाभ्यास आरम्भ हो गया और प्रतिदिन संध्या छः बजे से सात बजे तक इसका अभ्यास होने लगा। सभी पात्र अपनी भूमिका की संलग्नता से करने लगे। सूरज तो इसमें अधिक रुचि लेने लगा। उसमें तो रजनी से प्रतिस्पर्धा की भावना जागृत हो चली थी।

इसी बीच अभ्यास के समय सुमन का परिचय सूरज से होने लगा। सूरज कालीदास तो सुमन मल्लिका की भूमिका में थे। इस समन्वय से दोनों में मित्रता हो चली थी। यह मित्रता दोनों में एक–दूसरे के प्रति आकर्षण का रूप ले लिया। परस्पर एक दूसरे के प्रति घनिष्ठ होते जा रहे थे।

उधर रजनी और भास्कर की नृत्य नाटिका कई प्रदेशों में होने लगी। सूचना एवं प्रसारण मंत्री जी के सहयोग से उन्हें जगह–जगह से आमंत्रण आने लगा। आये दिन उनके प्रोग्राम का वर्णन समाचार पत्रों में एवं

दूरदर्शन और अन्य चैनेल में आने लगा। इन सबसे सूरज उत्साहित तो अवश्य होता परन्तु कहीं न कहीं उसके अन्दर घृणा के साथ शक का दायरा बढ़ता ही जा रहा था। वो अपने अन्तर्द्वन्द को रोक नहीं पा रहा था। वो जब भी रजनी के चित्र को भास्कर के साथ देखता, उसके अन्दर घृणा की ज्वाला उत्पन्न होने लगती। उसका मन करता कि अभी जाकर रजनी को कहे। पर रिश्तों में आई परिचितता तिरस्कार को जन्म देती है। खासकर जब कुछ अनसुलझे प्रश्नों में अनिश्चितता आ जाये। रजनी में आज भी प्रेम भाव वैसा ही है जैसे बचपन में था। वो तो केवल अपने दिए गए पात्र की भूमिका को कर रही थी। रजनी बिलकुल भी सूरज की उगलती ज्वाला से अनभिज्ञ थी। वो विवश थी, जो सूरज से मिल नहीं पा रही थी। दो–तीन बार उसने सूरज को फोन भी किया परन्तु सूरज ने उसका फोन काट दिया। समय निकाल कर वो सूरज से मिलने गई परन्तु उसने समय के अभाव के कारण मिलने के लिए मना कर दिया। तभी उसे पता चला कि सूरज ''आषाढ़ का एक दिन'' नाटिका में प्रमुख भूमिका कालीदास की कर रहा है। तो सोचने लगी कि वो तो सूरज को अपनी नाटिका के पूर्वाभ्यास में अन्दर हाल में आमंत्रित कर लेती थी। वो उसी क्षण अपने भातखण्डे लौट आई।

अक्टूबर माह में नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' का मंचन हुआ। समाचार पत्रों में इसका उल्लेख भी छपा। परन्तु सूरज ने रजनी को निमंत्रण नहीं भेजा। इस घटना से रजनी चिन्तित हो उठी और शीघ्र ही अगले

दिन सूरज से मिलने उसके छात्रावास पहुँची। सूरज ने रजनी से बहाना करा कि उसने रमानाथ को निमंत्रण पत्र देने कहा था। इस विषय को गम्भीरता में न लेते हुए रजनी हंसते हुए सूरज को बधाई एवं शुभकामनाएं देकर अपने भातखण्डे एक भारी मन से लौट आई।

भाग—11

रजनी एक बहुत उहापोह की स्थिति लिए अपने कमरे में भारी सोच लिए पलंग पर लेटी हुई थी। तभी छाया कमरे में आई रजनी का चेहरा देखकर उसकी मनःस्थिति को पहचानने में उसे समय न लगा। तुरन्त ही उसका हाथ पकड़कर उसको पलंग पर से उठाया और उसकी आँखों को अपने दुपट्टे से पोछती हुई उसकी उदासीनता के बारे में पूछा। पहले तो रजनी ने इन्कार करते हुए कहा कुछ भी नहीं, ''बस घर वालों की याद आ रही है।'' परन्तु छाया ने उसके मन के भावों को शायद पढ़ लिया था। वो यह जानती थी कि सूरज ने अपने कल के नाटक में रजनी और उसको आमंत्रित नहीं किया, इसका छाया को भी खेद है। उसने रजनी की व्यथा को समझते हुए, वो रजनी को हजरतगंज घूमने के बहाने बाहर ले गई। शायद बाहर घूमने से रजनी की मनःस्थिति में कुछ सुधार आ आयेगा। वो पहले शर्मा चाय वाले के पास गए, वहाँ चाय और बन खाया। उसके पश्चात रायल कैफे में मौर्या जी की बिस्कुट चाट खाई गई। छाया ही ने सारा खर्चा खुद

ही करा, क्योंकि छाया की आर्थिक स्थिति कुछ हद तक अच्छी थी। इसके पिता जी श्री कृष्ण प्रसाद गुप्ता, जो गंगा गंज, रायबरेली गाँव में गल्ले की दुकान करते हैं। उससे आमदनी भलीभाँति हो जाती थी। इसलिए वो छाया को प्रतिमाह खर्चे के लिए रुपया भेज देते थे। रजनी का हाथ छाया ने अपने हाथों में पकड़ कर हिलाते हुए हंसते हुए अपने भातखण्डे की तरफ चले जा रहे थे। रजनी अब स्वस्थ मन की लग रही थी। पिछले दिन की बात को छाया से दोहरा नहीं रही थी। प्रसन्नता की लहर उसके चेहरे पर उतर आई थी। वह भी छाया के साथ हाथ हिलाते हुए प्रसन्नता से चल रही थी। ऐसा मालूम होता, मानो ऊषा का प्रकाश सुनहरे आवरण में रंजित (प्रसन्न करना) अपनी छटा विखेरता चला जा रहा है। जो भी व्यक्ति उसके आस–पास से गुजरता, उसकी कोमलता एवं चेहरे पर काले बालों की लट उसकी सुन्दरता में एक अनोखी छटा किए हुए थी।

इसी सुन्दरता की छटा को विखेरते हुए अचानक दोनों की दृष्टि दूर से अपने समीप आते हुए दो सायों पर पड़ी। दोनों उन्हें देख कर आवाक से रह गए। छाया ने सोचा कि वो रजनी के लिए जब से इतना कुछ कर रही है। उसने भास्कर के मन को भी रजनी के प्रति विकर्षित (दूर करना) करने में सफल रही। परन्तु आज रजनी के मन में सूरज के प्रति उमंग एवं प्रेम उत्पन्न करने में सफल रही। लेकिन उसके हृदय में ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानो पवन खेतों को सींच कर वापस आ रहा है और सूर्य निशा की गोद में आराम कर

रहा है। उसकी दशा विलीन होती प्रतीत हो रही थी। उसका सूर्य (सूरज) निशा की गोद में न जाकर किसी और की गोद में जा बैठा। जहाँ रजनी को अंधेरा दिखाई दे रहा था। रजनी तो सूर्य के प्रकाश से ही उल्लवल होती है तभी वह दोनों साये उनके समीप आ गए और दोनों ने हंसते हुए, साथ आई हुई साथी से परिचय करवाया। तभी सूरज ने सुमन का परिचय इन दोनों से कराया और कटाक्ष करते हुए सूरज ने सुमन और छाया का उच्च कलाकार का परिचय देते हुए सम्बोधित किया। सुमन ने उसी समय सूरज से कहा कि मैं इन्हें जानती हूँ, ये टेलीविजन पर आई थी। सूरज ने रजनी की ओर तिरछे नेत्रों से देखते हुए उन्हें अपने साथ चलने को कहा। छाया ने स्थिति को देखते हुए, मना करते हुए भातखण्डे की ओर चल दी।

सूरज का सामना जब रजनी और छाया से हुआ था तब से वह एक अजीब उलझन महसूस कर रहा था। एक तरफ रजनी से उसका प्रेम, जो उसे बचपन से ही मिला था, तो दूसरी ओर धीरे–धीरे सुमन के प्रति आकर्षण बढ़ता ही जा रहा था। अस्थिरता होने हुए मन में तरह–तरह के विचारों ने संघर्ष करना शुरू कर दिया। रजनी का भास्कर के प्रति आकर्षित होना, उसे ईर्ष्या उत्पन्न कर बैठा। ईर्ष्या में मनुष्य अपने को दूसरे व्यक्ति से बेहतर बनाना चाहता है। उस पर अविश्वास महसूस करने लगता है। उसके प्रति असुरक्षित महसूस करने लगता है। परन्तु आप सच्चाई से परे रहते हैं। उसे जानने की भी कोशिश नहीं करते हैं। परन्तु सूरज इस

बात से अनभिज्ञ था कि प्रेम और ईर्ष्या दोनों परस्पर एक दूसरे के पहलू हैं। ईर्ष्या ही प्रेम के साथ उत्पन्न होती है।

दूसरी ओर सुमन के प्रति आकर्षित होना स्वाभाविक था। उसकी ईर्ष्या से जुड़ी भावना उसे सुमन की ओर ले चली। सुमन उसे रजनी से ज्यादा सुन्दर और अच्छी प्रतीत होने लगी। जब से उसे पता चला कि सुमन कुन्दनगंज (रायबरेली) के जमींदार फूलचन्द जी की पुत्री है, तो उसे यह विश्वास हो चला था कि उसके माता–पिता अवश्य ही अपनी सहमति दे देंगें। परन्तु वह इस बात से अनभिज्ञ था कि सुमन के पिता सम्बन्ध के लिए पहले बात कर चुके हैं। सूरज के विचारों में एक मत पर समानता बनने लगी। उसके मुख पर हल्की सी प्रसन्नता आ गई।

छाया जब से रजनी के साथ आई तब से मन ही मन उदास सी हो गई। उससे रजनी का उदास चेहरा और उस पर छाई उदासीनता ने उसे विवश कर दिया कि वो सूरज से मिलकर अवश्य ही इस प्रकरण के लिए सुमन के बारे में पुष्टि करेगी। इसके लिए उसने रविवार का दिन उचित समझा। रविवार सुबह उसने रजनी से बहाना किया कि वो अपने पिता जी के मित्र के यहाँ जा रही है। सूरज ने जब देखा कि छाया उसके छात्रावास में आ रही है तो उस समय वो छात्रावास के पार्क में टहल रहा था। सूरज ने अचम्भित होते हुए छाया से ‘‘हैलो’’ करके ‘‘अरे’’ आज इस वक्त कैसे आना हुआ।’’

छाया ने इसका उत्तर देते हुए ''बस यहाँ से गुजर रही थी, सोचा आपसे मिलती चलूं।''

सूरज समझ गया जरूर छाया रजनी के विषय में बात करेगी। परन्तु सूरज तो ''प्रेम और ईर्ष्या'' के कारण उसे छाया का उसके पास आना अच्छा नहीं लग रहा था। वो छाया के किसी भी शब्द को सुन नहीं रहा था। छाया कहे जा रही थी कि तुम्हे रजनी के साथ खुल कर और ईमानदारी से अपनी चिंता और असुरक्षा को साझा करके, एक–दूसरे को परस्पर सुनना आवश्यक है। एक–दूसरे पर विश्वास करना और स्वतंत्र रूप से अनुमति देना ही एक स्वस्थ रिस्ते के लिए आवश्यक है।

परन्तु सूरज की नकारात्मक सोच ने छाया की किसी भी शब्दों पर अपनी असहमति को दिखाते हुए छाया से अनुमति ली। छाया ने सूरज की मनःस्थिति को पढ़ते हुए वहाँ से चले जाना ही उचित समझा।

छाया जब से सूरज से मिल कर आई तो वह अपने आप में निःशब्द सी हो गई। कुछ दिनों से वो कमरे में रजनी की बातों का निरुत्तर सा कर देती। जैसे उसने कुछ सुना ही न हो। वो अपने मन की वेदना को रोक नहीं पा रही थी। बहुत चाहने पर भी उसके चेहरे पर प्रसन्नता का भाव उज्जवल नहीं हो पा रहा था। रजनी ने कई बार उसे खोजने की कोशिश की परन्तु वह असफल रही। रजनी और छाया कुछ–कुछ अवसाद की स्थिति में आ चुकी थी। रजनी तो हर पल सूरज और सुमन के सम्बन्ध को लेकर चिन्तित एवं व्याकुल महसूस करने लगी थी। उसकी

मानसिक एवं भावनात्मक स्थिति, उसको तनावग्रस्त की स्थिति में ले आई थी। तो दूसरी और छाया चिन्ताओं के कारण व्याकुल सी हो चली थी। परन्तु उसकी मानसिक संतुलन इस प्रकार से होगा, वो समझ नहीं पा रही थी। इन सब परिस्थितियों ने उसे सोचने पर मजबूर कर दिया।

भाग—12

छाया प्रतिदिन भातखण्डे से क्लास समाप्त होने के पश्चात संध्या को भातखण्डे के पार्क में जा बैठती। रजनी के प्रति कभी उसे सहानुभूति और दयालुता भर आती तो कभी सूरज की ईर्ष्या और कभी भास्कर का रजनी के प्रति स्नेह। परन्तु भास्कर का स्नेह भी रजनी के प्रति मिथ्या था। वह जब उसकी ओर आकर्षित हो सकता है तो उसके चरित्र पर अंकुश होना स्वाभाविक है। प्रेम शब्द को उसे चिन्तन करने पर मजबूर कर दिया, वो भी इस शब्द से ग्रस्त हो चुकी थी। उसके अन्दर भी प्रेम की परिभाषा को समझना पड़ रहा था। दिल्ली जाते समय और नृत्य नाटिका के समय कई बार प्रभाकर को अपनी ओर आकर्षित होते हुए महसूस करा था। वो बार—बार किसी न किसी बहाने छाया से मिलता। वो सोचती कि क्या प्रभाकर को उससे प्रेम हो गया है।

प्रभाकर ने छाया को पार्क में बैठे देखा तो वो उसके नजदीक आने लगा। वो कुछ दिनों से छाया की उदासीनता को महसूस कर रहा था। जब से वो दल्ली

गया था, उसे छाया से प्रेम हो चला था। उसकी मधुर वाणी में माँ सरस्वती का वास जो है। उसमें दूसरों के प्रति सम्मान, उदारता और शालीनता के भाव झलकते हैं। उसने छाया में पाया कि एक स्त्री की सुन्दरता केवल उसके शारीरिक बनावट में ही नहीं अपितु उसके आंतरिक गुणों और व्यक्तित्व में झलकते हैं। एक सुन्दर स्त्री वह है, जो दयालु, बुद्धिमान, आत्म विश्वास से भरी और शालीन हो। यह सब गुणों से छाया परिपूर्ण थी। प्रभाकर छाया के समीप गया और छाया के साथ उसी बेंच पर बैठ गया। छाया ने भी इसका कोई विरोध प्रकट नहीं किया।

छाया मनन कर रही थी प्रभाकर के व्यक्तित्व के बारे में। प्रभाकर में एक अच्छे पुरुष के कई गुण सुसज्जित हैं, उसमें ईमानदारी, दयालुता, दूसरों के प्रति सम्मान और जिम्मेदारी आदि सभी गुणों से ओत–प्रोत है। इन सबका अवलोकन वह दिल्ली में ही कर चुकी थी। एक स्त्री हमेशा दयालु, सौम्य स्वभाव वाले पुरुष को ही पसन्द करती है। छाया की कुछ–कुछ प्रभाकर का चयन अपने दिल में कर चुकी थी। प्रेम शब्द की परिभाषा ने उसे उज्जवलित कर दिया था। प्रेम शब्द उसके हृदय के रोम–रोम में समा चुका था। उसकी गम्भीर चिंतन अवस्था को प्रभाकर के शब्दों ने जगा दिया। प्रभाकर को उसकी इस चिन्तन के कारण को जानना चाहा। छाया ने आज तक किसी से अपने हृदय की बात नहीं की थी, परन्तु न जाने क्यों उसने सूरज और रजनी के बारे में सब कुछ कह डाला। भास्कर के

आचरण के बारे में कह डाला। छाया ने यह सब कुछ अपनी मानसिक स्थिति पर स्थिरता और प्रभाकर पर पूर्ण विश्वास होते हुए अपने मन की व्यथा को उसके समक्ष प्रकट कर दिया।

प्रभाकर ने महसूस किया कि छाया का सिर उसकी छाती पर टिका हुआ है और उसके हाथ छाया के सुन्दर केशों से क्रीड़ा कर रहे हैं। प्रभाकर ने स्थिति का अवलोकन करते हुए अपने विचार धीरे–धीरे छाया पर प्रकट करने शुरू कर दिये। छाया ने एकाग्रता से उसके कहे विचारों को बड़े ध्यानपूर्वक सुनने लगी। वह कह रहा था ''जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति पर संदेह करने लगता है तो उसके अन्दर दूसरे के प्रति अविश्वास पैदा हो जाता है और वह उस पर एक शक की भावना से देखने लगता है और उसे ईर्ष्या उत्पन्न हो जाती है। यह एक बीमारी के लक्षण हैं, जिसे ''डिल्यजनल डिस आर्डर'' भी कहते हैं, जो कि सूरज में विकसित हो चुकी है। रजनी और भास्कर का नृत्य–नाटिका में शहर–शहर जाकर प्रसिद्धि प्राप्त करना, यह सुनिश्चित नहीं करता कि रजनी भास्कर से प्रेम करती है। वह तो केवल अपने दिये गये पात्र की भूमिका को अदा कर रही है।

इस पर सूरज को शक करना केवल मात्र निरर्थक है, वह तो अर्थरहित है। धीरे–धीरे सूरज की मानसिकता का सन्तुलन अस्थिर होता चला गया और उसमें घृणा ने जन्म ले लिया। घृणा का जन्म शक करने से उत्पन्न होता है। घृणा से एक तीव्र नकारात्मकता की भावना जन्म लेती है। वह केवल

अस्थिर विचारों के शीघ्रता–शीघ्र उत्पन्न होती है। इसमें व्यक्ति अक्सर ईर्ष्या से घृणा, तिरस्कार और क्रोध की भावनाओं से ग्रस्त हो जाता है। उसकी सोच नकारात्मक विचारों को जन्म दे देती है। यही सब कुछ सूरज के साथ हुआ और उसकी सोच ने उसे सुमन की ओर आकर्षित करने पर मजबूर कर दिया। यह केवल मात्र प्रतिस्पर्धा की भावना को लेकर था। प्रेम, जब घृणा में, एक–दूसरे को दूर कर सकती है तो वह संघर्ष को भी जन्म दे सकती है।

छाया जो बड़ी देर से प्रभाकर के प्रभावशाली सोच को सुनकर बहुत प्रभावित हो गई। उसने जैसा प्रभाकर के बारे में सोचा था, उसने यथार्थ में वैसा ही पाया, तो प्रभाकर के और समीप हो गई और उसके हाथों को अपने हाथों में लेकर सलाहने लगी। तभी उसने प्रभाकर से इन सबका निवारण कैसे होगा, पूछा। प्रभाकर ने बताया कि पुरुष को दूसरे व्यक्ति की भावनाओं को पहचानना और सच्चाई को स्वीकार करना आवश्यक हो जाता है। उस पर सहानुभूति और समझ विकसित कर सकारात्मक सोच ही केवल मात्र इसका उपाय है, जो सूरज ने नहीं करा। उस पर पहले ईर्ष्या, फिर शक ने जन्म ले लिया और वही शक धीरे–धीरे घृणा में विकसित हो गया और मानसिक असन्तुलन की वजह से उसमें प्रतिष्पर्धा की भावना जागृत हो उठी और अपने सामने सुमन को पाया, जो प्रतिशोध की भावना का एक मोहरा जान पड़ा।

भाग—13

सूरज ने महसूस किया कि वो धीरे–धीरे सुमन के नजदीक आने लगा है। उसकी मानसिक स्थिति पहले से अस्थिर हो चली थी। अब सुमन की वजह से मन में शान्ति और रजनी के प्रति उदासीनता के भाव समाप्त न होते प्रतीत होते हुए नजर नहीं आये। रजनी के प्रति उसकी रुचि, उदासीनता, निराशा और मानसिक अवसाद के कारण यथावत बनी हुई थी। कभी–कभी वह रजनी के बारे में अपने मन से एकाग्रता लाने की कोशिश भी करता तो उसका शक ईर्ष्या उसके सामने उसे सुमन के प्रति आकर्षित करने पर मजबूर करता। धीरे–धीरे उसकी यह मनःस्थिति उसे रजनी से दूर क्षितिज की भाँति प्रतीत होता।

उधर सुमन के प्रति स्नेह भावना उसे प्रेम में जागृत होती गई। सुमन अब सूरज से नजदीकियां लाने लगी। सुमन की यह नजदीकियां और भी समीप आती गई, जब से उसे यह पता चला कि वो बडरावां के जमींदार श्री गुलाब राय जी के पुत्र हैं। तभी से वो उसके और नजदीक आने लगी। वो यह जानती थी कि

गुलाब राय जी उसके रिश्ते के लिए उनके घर कुन्दनगंज आये थे और उस वक्त यह रिश्ता उसने मना कर दिया था। अब तो किसी भी कारणवश सूरज से सम्बन्ध नहीं तोड़ना चाहती थी। वो दिन–प्रतिदिन सूरज से नजदीकियां लाने लगी।

रजनी ने जब से सूरज और सुमन को साथ–साथ देखा और सूरज को उसे अपने प्रोग्राम में आमंत्रित न करना उसे एक अवसाद की स्थिति में ला दिया। रजनी की मानसिक अस्थिरता ने उसे सूरज के प्रति सोचने पर बाध्य कर दिया। वह सूरज के इस व्यवहार की उपेक्षा से रजनी में भावनात्मक शक्तियों और शारीरिक समस्याओं ने जन्म ले लिया। सूरज के प्रति उसका स्नेह बचपन से ही था। अपना मन एवं हृदय में केवल मात्र सूरज को ही स्थान देती थी। किसी अन्य के बारे में वो अपने को दोष रहित समझती थी। उसे तो अपने प्यार में सुरक्षा और विश्वास की अत्याधिक आवश्यकता थी। वो तो सूरज के साथ भावनात्मक रूप से जुड़ी हुई थी। वो तो पूर्ण रूप से सूरज के प्रति समर्पित हो चुकी थी। उसने एक दिन अपने मन में एकाग्रता लाते हुए सूरज के छात्रावास उससे मिलने के लिए गई, तो उससे मिल कर उसके मन में जो रोग उत्पन्न हो गया था, सब कुछ पूछ लेना चााहती थी, वह कह देना चाहती थी कि वो तो केवल उस पर समर्पित है। परन्तु जब वो छात्रावास पहुँची तो सूरज ने रमानाथ द्वारा कहलवा भेजा कि वो कहीं गया हुआ है। रमानाथ ने रजनी से कुशलक्षेम पूछते हुए उसके उदास चेहरे की तरफ देखा

परन्तु वह उसकी गम्भीरता पर ध्यान देने लगा। वो रजनी से बहुत कुछ पूछना चाहता था क्योंकि सूरज का सुमन के प्रति आकर्षित होना रमानाथ को भी उचित नहीं लग रहा था, परन्तु कुछ भी कहे बगैर वहाँ से चली गई।

रजनी में अवसाद के लक्षण तीव्र गति से प्रभावित होने शुरू हो गए। वो अब अपने किसी भी कार्य में रुचि नहीं ले रही थी। उदासीनता निराशा ने उसकी दैनिक गतिविधियों को भी प्रभावित करना आरम्भ कर दिया। आचार्य जी और संगी–साथियों के प्रति भी उदासीनता के भाव दिखाई देते। छाया के प्रति उसका लगाव यथावत था। उसकी मानसिक स्थिति को देखते हुए छाया ने प्रभाकर की मदद मनोरोग चिकित्सक के द्वारा रजनी का उपचार आरम्भ कर दिया। प्रतिदिन दवाई देना और उसका ध्यान छाया ही देखती। अब तो छाया और प्रभाकर ने आचार्य जी से भी सारी स्थिति से परिचय करा दिया। आचार्य जी ने भी लखनऊ के बड़े मानसिक चिकित्सक को परामर्श करके उचित इलाज शुरू करवा दिया, परन्तु रजनी की अवसाद की स्थिति में कोई सुधार नहीं आता प्रतीत हुआ। आचार्य जी ने अब अपने मित्र शास्त्री जी श्री रमाशंकर मिश्र को कहलवाना उचित समझा। यह कार्य उन्होंने प्रभाकर को सौंपा कि वो जाकर शास्त्री जी को इस स्थिति का आंकलन करवायें और उनको अपने साथ लेकर लखनऊ आ जाए। सुनिश्चित रहे कि यह अवस्था सिर्फ शास्त्री जी को पता चले, बाकी गाँव में किसी को भी नहीं। अन्यथा

सूरज और रजनी के चरित्र पर संदेह उत्पन्न हो जाएगा। प्रभाकर छाया को अपने साथ लेकर शास्त्री जी के घर गाँव में मिले और सारी स्थिति से अवगत कराया। शास्त्री जी और लक्ष्मी यह सुन कर व्याकुल हो गए। वे दोनों इस स्थिति के बारे में कभी सोच भी नहीं सकते थे। सूरज के प्रति दोनों का आक्रोश यहीं उत्पन्न हो गया। शास्त्री जी ने सारी स्थिति को समझते हूुए यह उचित समझा कि अभी रज्जो के माता–पिता को कुछ न बताया जाय और वहाँ जाकर रज्जो की रुग्ण अवस्था को पूरी तरह से अवलोकन करके आगे क्या करना है, सोचना होगा। तभी शास्त्री जी की पत्नी लक्ष्मी ने भी उनके साथ लखनऊ चलने का आग्रह किया। आखिरकार वो उन दोनों की गुरू माँ है।'' वो वहाँ जाकर सूरज को भी समझायेगी। शायद कुछ स्थिति में सुधार हो जाए।

शास्त्री जी अपनी पत्नी के साथ सबसे पहले आचार्य जी से मिले और सारी स्थिति की जानकारी ली। शास्त्री जी ने रजनी की अवस्था को गम्भीरता से लेते हुए सबसे पहले सूरज से मिलने पर विचार करा। उन्होंने आचार्य जी द्वारा प्रभाकर को यह कार्य सौंपा कि वो छात्रावास जाकर सूरज को यहाँ पर ले आए और कहना कि शास्त्री जी और गुरू माँ ने उन्हें बुलाया है। प्रभाकर कहे अनुसार सूरज के छात्रावास गया, परन्तु वहाँ से सूरज द्वारा निरुत्तर होकर लौटना पड़ा। सूरज ने प्रभाकर को भी कहलवा भेजा कि वो लखनऊ से बाहर नाटक की प्रस्तुति के लिए गया हुआ है। शास्त्री जी

और सभी जन सूरज के इस आचरण पर आत्मग्लानि और अपने को लज्जित महसूस करने लगे। इस पर आचार्य जी ने वक्तव्य दिया कि ईर्ष्या ही नकारात्मक विचारों को मनुष्य के व्यवहारों को जन्म देती है। यह जीवन में कई समस्यायें पैदा कर देती है। इन सबके लिए सूरज की भावनाओं को सकारात्मक सोच में बदलना होगा और उसकी मनःस्थिति से शक एवं ईर्ष्या को समाप्त करना होगा। इसके लिए सूरज से मिल कर उचित समय में बैठ कर आपस में अपने विचारों पर जो अंकुश लग गए हैं, उन पर आदान–प्रदान करना आवश्यक होगा। अगर सूरज यहाँ आकर रजनी को सांत्वना देता है तो रजनी की मनोदशा में बदलाव होना शुरू हो जाएगा। रजनी के लिए यही आवश्यक है।

आचार्य जी से मिल कर शास्त्री जी और लक्ष्मी रजनी के कमरे में छात्रावास मिलने गए। छाया उनके साथ ही थी। उन सबको देख कर रजनी पहले तो भयभीत सी हो गई। गुरू माँ रजनी की यह दशा देख कर उनके आँखों में आँसू छलक आए। तभी शास्त्री जी ने गुरू माँ को सम्भलने को कहा। रजनी तो एक टक उनको निहारती ही रही। रजनी ने शास्त्री जी और गुरू माँ के चरण स्पर्श करे और चुप सी बैठ गई। उसके मुख्य पर भय और असंतोष के भाव साफ दिखाई प्रतीत हो रहे थे। गुरू माँ ने रजनी के सिर पर हाथ फेरते हुए उसे प्यार से अपने पास चिपका लिया। एकाएक रजनी के आँसू गुरू माँ पर टपक पड़े और वह जोर–जोर से गुरू माँ से

लिपट कर रोने लगी। बस यही कहती रही, गुरू माँ सूरज ...., गुरू माँ सूरज और रोने लगी।

तभी प्रभाकर सबके लिए चाय नाश्ता लेकर आया और हंसते हुए बात की गम्भीरता को बदलने लगा। शास्त्री जी और गुरू माँ को रजनी द्वारा किए नृत्य–नाटिका की वीडियो दिखाने लगा। इससे रजनी का रोना बन्द होकर ध्यान वीडियो में चला गया। छाया रजनी को साथ बिठा कर चाय पिलाने लगी। शास्त्री जी और गुरू माँ अपनी रज्जो को पुरानी बातों पर ध्यान आकर्षित करके उसको प्रफुल्लित करने लगे।

भाग–14

शास्त्री जी और लक्ष्मी मन में असंतोष लिए रजनी से मिलने के पश्चात वहाँ से सूरज से मिलने के लिए चले गए। प्रभाकर और छाया उन्हें सूरज के छात्रावास तक ले गए और तय किया कि वो दोनों केवल सूरज से मिलेंगें। शास्त्री जी और लक्ष्मी के साथ सूरज के कमरे में प्रवेश करते ही उसको अचम्भित कर दिया। सूरज उन्हें देखते ही अवाक रह गया और अचानक वो पूछ बैठा ''अरे! आप दोनों।'' सूरज के चेहरे पर विस्मित की भावना को देख कर शास्त्री जी ने ''कैसे हो बेटा'' बैठने को नहीं कहोगे।'' इतना सुनते सूरज ने गुरू जी और गुरू माँ के चरण स्पर्श किए ओर अचानक उनके यहाँ आने का कारण पूछा। इस पर गुरू माँ ने कहा कि हम तो अपनी बेटी सारिका के लिए वर पक्ष के माता–पिता से मिलने आए हुए हैं। गुरू माँ की बात को रखते हुए सूरज से पहले तो उसकी शिक्षा के बारे में बात शुरू की और धीरे–धीरे रज्जो के बारे में पूछा। इस पर सूरज ने अपनी अनभिज्ञता दर्शाते हुए बात को टाल दिया। शास्त्री जी ने रजनी के नृत्य की प्रशंसा

करी और उसकी प्रतिष्ठा एवं सम्मान पर गर्व महसूस किया। सूरज जो नहीं चाहता था, वो सब कुछ होते हुए अपने मन के भावों पर आक्रोश लाते हुए कहा ''गुरू जी, मैं रज्जो के बारे में कुछ भी नहीं जानता न ही मैं उससे मिलता हूँ। वो तो अपनी जगह खुश है और ईर्ष्या भाव व कटाक्ष प्रकट करते हुए बोला, ''अब तो वह उच्च कोटि की नृत्यांगना बन चुकी है। अब मेरा उससे कोई सम्बन्ध नहीं है।'' इस पर गुरू जी और गुरू माँ के चेहरे पर उदासीनता के भाव प्रकट हो गए और गुरू माँ ने पूछा ''तुम तो बेटा उसे बचपन ही से चाहते हो, अब क्या हो गया जो तुम उससे कुछ बात नहीं करते हो। हमारी राय है उससे एक बार जाकर मिल लो, जिससे तुम दोनों में जो रोष उत्पन्न हो गया है, वो आपस में मिल कर बात चीत करके दूर किया जा सकता है। वो तो तुम्हे अपना चुकी है और तुम्हारे सिवाय अपने मन में किसी अन्य को भी नहीं लाती। अपनी अस्वस्थता के कारण वो तो तुमसे मिलने भी नहीं आ सकती।''

सूरज जो सब कुछ जब से सुन रहा था और अपने आक्रोश को सम्भाले हुए था, यकायक गुरू माँ पर बरस पड़ा ''आप सब कुछ कह चुके उसके बारे में, रज्जो धोखेबाज लड़की है। उसने मेरे प्रेम पर अंकुश लगा दिया। वो तो अब किसी और को समर्पित है और न जाने जो नहीं कहना चाहिए था कह डाला।

गुरू माँ अपने आंचल से आँसू पोछते हुए केवल इतना ही कहा ''वो तो निर्दोष है बेटा, तुम्हें अपनी सोच बदलना होगा और मन में स्थिरता लाकर, एक बार जरूर

मिल लो। अपने मन में किसी प्रकार का विचार न ला बेटा, वो तुझे बहुत चाहती है।''

सूरज का नकारात्मक भाव को देख कर और उसके आक्रोश, ईर्ष्या और शक के कारण, स्थिति को गम्भीरता आने के कारण, शास्त्री जी ने बाहर आकर अपने आँसू, जो बहुत देर तक रोक रखे थे, बह निकाले। उनके कानों में सूरज के वो शब्द कि ''हाँ'' गुरू जी, अब आप दोनों मुझसे मिलने यहाँ नहीं आना।'' यह शब्द अब भी उनके कानों में गूंज रहे थे।

शास्त्री जी के चले जाने के पश्चात सूरज में अपने किए बर्ताव पर किसी भी प्रकार की अपराधबोध की भावना न के बराबर थी। बस उसके मन में तो सुमन के बारे में केन्द्रित था। परन्तु सुमन के प्रति आकर्षित होना यह नहीं दर्शाता कि उसे सुमन से प्रेम हो गया है। परन्तु यह तो रजनी के प्रति आक्रोश की भावना है, जो उसे सुमन की ओर समीप लाकर खड़ा कर दिया। चलते समय शास्त्री जी की यह बात पर कोई महत्व नहीं दिया जो उन्होंने कहा, ''बेटा, क्रोध अक्सर प्रेम से उत्पन्न होता है। क्रोध तो आपको दूसरे के प्रति भावना से आता है, जो आपको उसके विपरीत जाने के लिए प्रोत्साहित करता है। कोशिश करो कि आप अपने पर नियंत्रण रख कर दूसरे की भावनाओं को समझें और उसे पहचानें।''

सूरज शास्त्री जी की बात को महत्व न देते हुए अपने कमरे के बाहर से गुरू माँ और गुरू जी को जाते हुए देख रहा था।

भाग—15

सुमन और सूरज का सम्बन्ध धीरे—धीरे प्रगाढ़ होता चला गया। सूरज द्वारा सुमन को रजनी और सूरज के बारे में पता चला। सूरज ने ही भावावेश में आकर सब कुछ बता दिया। सुमन ने सूरज की इस कमजोरी पर दृढ़ संकल्प करके, सूरज को पाने के लिए मन में धारणा कर ली। वो किसी भी कारणवश सूरज को अपने से अलग नहीं कर सकती, क्योंकि सूरज से उचित जीवन साथी उसे फिर नहीं मिल सकेगा। इसके लिए चाहे किसी भी प्रकार के यत्न करने पड़े। सूरज का रजनी के प्रति आक्रोश से उसे एक नई उर्जा और राह की आशा प्रतीत हुई। उसने उचित दिन देख कर, जिस दिन आकाश में बादल छाये हुए थे, चारों आरे प्रकृति द्वारा सुमन (फूलों) की सुगन्धित वायु ने अपनी छटा द्वारा आकर्षित करके मन को मोह लिया था। सुमन ने उचित समय को देख कर सूरज को अपने साथ गोमती रिवर फ्रन्ट (जो लखनऊ का लव लेन भी कहलाता है।) के पार्क में ले आई। नदी का जल कल—कल करता हुआ एक प्रकार का संगीत की धुन

सुना रहा था। सूरज का मन, प्रकृति की इस छटा को देख कर सुमन की ओर खिंचा हुआ देख कर और उसके मन के भावों को वक्तव्य द्वारा और भी दृढ़ बना दिया। सूरज उसकी प्रत्येक बातों को ध्यानपूर्वक से सुन रहा था। वह कह रही थी, ''सूरज तुम्हारा पहला प्यार रजनी से केवल अज्ञानतावश, आदर्शवादी और अवास्तविक था। जहाँ हम अपने साथी को पूर्णता स्वीकारते हुए अपना लेते हैं और हमें दुनिया बेहद रोमांचक और नई लगती है। जिसका आगे चल कर जीवन में कोई मूल्य नहीं होता, क्योंकि आगे चलकर दोनों की भावनाओं, आदर्शों में बदलाव के कारण वह प्रेम अस्थाई हो जाता है। उसके लिए तुम्हें ज्यादा मन में विचार नहीं लाने चाहिए। वो तुम्हारा बचपन था और हाँ अब तुम जो प्यार अब कर रहे हो, उससे तुम्हारी सोची–समझी भावनाएं दूसरे के प्रति सम्मान, सकारात्मक विचार, समर्पण द्वारा आधारित है और उनमें एक गहरा सम्बन्ध हो जाता है।''

सूरज के मस्तिष्क और दिल में सुमन के द्वारा दिए गए वक्तव्य से वो आत्मविभोर हो उठा। मन ही मन सुमन के प्रति उसका प्रेम और भी दृढ़ हो उठा। रजनी उसके मस्तिष्क से कहीं दूर होती जा रही थी। उसने सुमन को स्वीकारते हुए अपना हाथ उसके हाथों में पकड़ मजबूत करते हुए, अपने प्रेम पर विश्वास प्रकट करा। सुमन का उद्देश्य पूरा होता दिखाई दिया। नदी के जल प्रवाह का पानी कल–कल करता हुआ दोनों के दिलों में रोमांचक होता नजर आया।

एक तरफ सूरज और सुमन के प्रेम में दृढ़ता आती गई, तो दूसरी ओर रजनी की अवस्था में कोई भी सुधार आता नजर नहीं आया। सभी जन, आचार्य जी, शास्त्री जी, प्रभाकर और छाया रजनी को लेकर चिन्तित होते गए। मानसिक रोग विशेषज्ञ द्वारा भी इलाज में कोई सुधार होता नजर नहीं आया। शास्त्री जी ने रजनी की यह अवस्थाा देखते हुए गणेश जी को इस सब की सूचना दी। गणेश जी और उनकी पत्नी रुकमणी यह सब सुन कर आश्चर्यचकित और चिन्तित हो गए। शास्त्री जी और गणेश जी ने यही विचार करा कि रजनी को लखनऊ में अच्छे विशेषज्ञ से इलाज के दौरान वही किराये पर घर लेकर रखा जाए। यही उचित जान कर प्रभाकर ने अपने लखनऊ वाले घर पर रजनी और उसके माता–पिता को रहने के लिए कहा। वहाँ पर उसने गृहस्थी का सारा सामान का प्रबन्ध कर दिया। रजनी को छात्रावास से प्रभाकर के घर पर स्थानान्तरित कर दिया गया। शास्त्री जी और गणेश जी द्वारा यह सुनिश्चित किया गया कि यह घटना गाँव में किसी को भी न बताई जाए। चाहें जमींदार जी ही क्यों न हो।

प्रभाकर और छाया ने निश्चय किया कि सूरज से मिल कर रजनी की यह अवस्था बता दी जाए, परन्तु उसने उनसे मिलने को मना कर दिया। वो तो अब केवल सुमन के बारे मे ही सोचता था। रजनी की इस अवस्था का दोषी केवल सूरज ही था, इसका कारण एक मात्र सूरज की अज्ञानता, नासमझ एवं दृढ़ संकल्प में

कमी की वजह से सोचने–समझने में निपुण नहीं हो पाया था। उसकी अविकसित मानसिकता की वजह से आज रजनी की यह स्थिति हो गई थी

सूरज अपनी उम्र के हिसाब से बहुत परिपक्व नहीं हो पाया था। उसका दृष्टिकोण अभी भी कमजोर था। वह जीवन के अर्थ को सही तरह से नहीं समझ पाया था। जबकि रजनी का दर्द एक भावनात्मक और तड़प पैदा किया हुआ था। उसके अन्तर्द्वन्द में अलगाव की स्थिति बेचैनी, उदासी और दर्द ने जन्म ले लिया। वह हमेशा सूरज की यादों में ही खोई रहती हुए तड़पने लगी। उसके अन्दर एक विद्रोह का दर्द उत्पन्न हो गया और उसे आज इस स्थिति में ला खड़ा कर दिया।

छाया ने भास्कर के चले जाने के पश्चात सुख की नींद ली। उसके मन में भास्कर की ओर से जो अशान्ति आ खड़ी हुई थी वो अब समाप्त हो गई थी। सुना है कि भास्कर को आचार्य जी द्वारा दिल्ली में एक संगीत पाठशाला में अध्यापक के पद पर कार्य मिल गया था। छाया, रजनी और प्रभाकर अब तीसरे वर्ष में आ गये थे। प्रभाकर, रजनी के माता–पिता के कार्य में मदद कर देता तो छाया रजनी के पास प्रतिदिन आया करती और जो भी कक्षा में पढ़ाया जाता, उसे पढ़ाती। जिससे रजनी का मन शिक्षा में लगा रहता। प्रभाकर और छाया कई बार सूरज के पास गए, जिससे उसकी मनःस्थिति में रजनी के लिए कुछ बदलाव आये, परन्तु वो तो उसकी पीड़ा को अनसुनी कर देता बल्कि कटाक्ष

करता कि वो सब अपनी पीड़ा के नाटक द्वारा मुझ पर आरोप लगाती है।

इसी दौरान छाया और प्रभाकर एक–दूसरे के प्रति समीप आते गए। छाया को प्रभाकर एक दिन अपने घर गंगा गंज (रायबरेली) अपने माता–पिता से मिलवाने ले गया। छाया तो पहले बहुत ही संकोचवश शरमा गई और प्रभाकर के माता–पिता के चरण स्पर्श किए। दोनों ने छाया को आर्शीवाद देते हुए उसे 'सदा सौभाग्यवती रहो' से सम्बोधित किया। प्रभाकर की माँ राधिका ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए छाया को प्यार किया। सबके सकारात्मक व्यवहार द्वारा छाया का मन अन्दर से प्रफुल्लित हो गया और उसे इस आत्म सम्मान में गर्व महसूस होने लगा। इसी बीच छाया ने प्रभाकर पर एक प्यार भरी दृष्टि डाली और प्रभाकर मुस्कराकर उसका हाथ पकड़ कर बाहर ले आया।

पाँच साल बाद।

भाग—16

आज सुबह ही से जमींदार गुलाब राय जी के यहाँ गोदभराई की रस्म बड़े जोर—शोर के साथ मनाई जा रही थी। सूरज की माँ ने सुबह ही से सारे गाँव को निमन्त्रण दे दिया था। राम अवतार पर कार्यक्रम का सारा दायित्व उसी के ऊपर निर्भर था। सावित्री ने अपनी बहू सुमन को नई साड़ी लाकर दी थी। जमींदार जी ने तो एक नया सोने का सेट उपहार में दिया, जो सावित्री ने उसे पहना दिया था। सुमन आज एक अप्सरा की तरह लग रही थी। यह त्योहार गर्भावस्था के सातवें या आठवें महीने में आयोजित किया जाता है और सभी परिवार और सगे सम्बन्धी द्वारा आर्शीवाद, स्नेह और उपहार दिये जाते हैं। इसका उद्देश्य माँ और आने वाले बच्चे के अच्छे स्वास्थ्य और समृद्धि की कामना के लिए होता है।

पिछले दो वर्षों से सावित्री ने अपनी बहू के लिए कोई भी मन्दिर ऐसा न छोड़ा हो, जहाँ जाकर मन्नत न मांगी हो। जब से सूरज एवं सुमन का विवाह हुआ था तब से आज दो वर्षों बाद यह खुशी का दिन आया था।

दो वर्ष पूर्व जब फूलचन्द जी यहीं आये थे, तब सबसे पहले यह सम्बन्ध न हो सका था। अपनी पुत्री का हाथ सूरज के लिए मांगने आए थे, तब सबसे पहले फूलचन्द जी ने जमींदार गुलाब राय जी से क्षमा याचना की थी कि कई वर्ष पहले यह सम्बन्ध न हो सका था। पर ईश्वर को यही मंजूर था, विधाता यही चाहता था। सूरज ने भी अपनी माँ सावित्री को सुमन के बारे में पहले ही से अपने प्रेम के बारे में बता दिया था। इससे पहले कि सावित्री जमींदार जी से यह कह पाती, तभी जमींदार फूलचन्द जी यह सम्बन्ध लेकर आ गए। सूरज और सुमन का विवाह खूब जोर–शोर से एक उत्सव की तरह मनाया गया। गाँव के सभी सगे–सम्बन्धी जन विवाह में आए थे परन्तु शास्त्री जी और गणेश जी के घर से कोई सदस्य नहीं आया था। बस, विवाह के कुछ दिन पश्चात लक्ष्मी रज्जो की माँ रुकमणी को लेकर सावित्री को विवाह की बधाई के साथ नेग भी दे आई थी।

आज सावित्री के लिए काफी हर्षोल्लास का दिन था। सगे सम्बन्धी और गाँव की औरते बहू को बधाई और आर्शीवाद देने के लिए आई। इस पर जमींदार जी ने एक बड़े भोज का आयोजन किया था। सभी जन इस कार्यक्रम में आनन्द सहित उपस्थित हुए। लक्ष्मी और रुकमणी भी इसमें आमंत्रित हुई थी। कार्यक्रम के समय माया की माँ श्रीमती आरती देवी ने रुकमणी से रज्जो के बारे में पूछ बैठी। रज्जो अब कई साल से घर पर नहीं आई और न ही अब तुम भी दिखाई नहीं देती।

क्या यहाँ से चली गई हो। रज्जो का विवाह नहीं हुआ। देखो, माया का विवाह लखनऊ में डाक्टर पाण्डेय जी के लड़के के साथ हुआ है। उसका बेटा भी डाक्टर है।

यह सब माया की माँ बस एक ही सांस में कहे जा रही थी। लक्ष्मी और रुकमणी निःशब्द सी थी और दोनों उदासीनता के भाव लिए वहाँ से चल दी।

जब से लक्ष्मी और रुकमणी सूरज के घर आई थी, दोनों ही की मनःस्थिति एक उहापोह सी हो गई थी। रुकमणी गणेश जी के साथ ज्यादातर लखनऊ में ही रहते थे। रज्जो का भाई अब बड़ा हो चला था। स्कूली शिक्षा उत्तीर्ण कर चुका था और अब गणेश जी के साथ खेत का ही काम देखता था। उधर रजनी की मानसिक दशा में कोई सुधार नहीं हो पाया था। डाक्टर के कहने पर कि कई बार रजनी की यह दशा काफी लम्बी हो जाती है। ऐसे मरीज की दवाई के साथ–साथ सांत्वना देने की ज्यादा आवश्यकता होती है। परन्तु आज पांच वर्ष गुजर जाने के पश्चात भी रजनी की यह दशा अब तक सुधर नहीं पाई थी। आचार्य जी और साथीगण कभी–कभी आकर देख जाते।

प्रभाकर और छाया अभी भी नियमित समय से आकर रजनी को सांत्वना देते रहते। जब से छाया का विवाह प्रभाकर से हुआ तब से वो आज तक रजनी की पूर्ण रूप और सच्चे दिल से सेवा कर रहे थे। प्रभाकर आज भी रजनी के माँ–बाप और घर का ख्याल रखता। गणेश जी और रुकमणी तो यही आशा लगाये रहते कि उनकी बेटी जल्दी से ठीक हो जाए। रुकमणी को तो,

आँसू पोछ–पोछ कर, आँखों से दिखाई भी कम देने लगा था। रज्जन भी कभी–कभी गाँव से लखनऊ रजनी को देख जाया करता। छाया की माँ श्रीमती आरती देवी जब से गोद–भराई की रस्म से वापस घर आई तब से उसके मन में एक ही प्रश्न ने उसे व्याकुल कर दिया था, वह है रज्जो के बारे में जानना। वह लक्ष्मी और रुकमणी के चेहरे के भाव से आशंकित हो गई थी। पहले तो रज्जो गाँव आती–जाती रहती थी परन्तु कई वर्षों से उसका आना–जाना नहीं हो पाता था। जब भी आती, माया से जरूर मिलती। माया के तो विवाह में भी नहीं आई। आरती देवी, रज्जो की माँ रुकमणी देवी के पास भी एक दिन गई पर उनसे यही पता चला कि रज्जो की नौकरी मुम्बई में लग गई है। तभी इतनी दूर से आना–जाना नहीं हो पाता। जब भी आएगी तो जरूर आपसे मिलने को कहूँगीं। बस आरती देवी, एक मन संशय लिए वापस घर लौट आई। रुकमणी ने सोचा आज तो उसने बात रख कर टाल दी पर कब तक। एक न एक दिन तो रज्जो के बारे में पता ही चलेगा कि किस कारणवश रज्जो की यह स्थिति हुई है और इसका अभियुक्त (अपराधी) सूरज ही है।

भाग–17

माया का विवाह लखनऊ के प्रतिष्ठित डाक्टर परिवार से हुआ था। माया के ससुर और पति दोनों ही एक जाने–माने मनोचिकित्सक और माया की सास डाक्टर शीलवती एक प्रतिष्ठित गाइनोकोलिजिस्ट (स्त्री रोग विशेषज्ञ) थी। उसके ससुर डाक्टर दीन बन्धु पाण्डेय ने अपने पुत्र डाक्टर संकल्प पाण्डेय के साथ अपना गोमती नगर में पाण्डेय नर्सिंग होम की स्थापना करीब पन्द्रह वर्ष पूर्व में की थी। बेटा संकल्प ने भी न्यूरोलोजी में डाक्टरी परीक्षा पास करके पिता के साथ ही अपना अभ्यास शुरू कर दिया था। उधर माया ने भी बी0एस0सी0 (मेडिकल साइन्स) लखनऊ से कर ली थी और उसकी तीन वर्ष पहले डाक्टर पाण्डेय के यहाँ हेल्थकेयर प्रशासक के पद पर नियुक्ति कर ली गई थी। वहाँ पर उसकी मित्रता डाक्टर संकल्प से हो गई। आगे चल कर यह मित्रता एक घनिष्ठ सम्बन्ध में बदल गई। कुछ समय पश्चात डाक्टर संकल्प और माया परिणय सूत्र में बंध गये।

जब से माया का विवाह हुआ था, उसके सास–ससुर माया से बहुत प्रसन्न थे। माया का व्यवहार सबके प्रति बहुत ही सौहार्दपूर्वक होता था। रोगियों से तो माया मैत्रीपूर्ण तरीके से अपना व्यवहार रखती। इसके अलावा बाकी सभी नर्स को भी रोगियों से अच्छा एवं मैत्रीपूर्ण व्यवहार रखने को कहती। प्रत्येक रोगी को जरूरत का समय से दवाई देना, उसका खाना, डाक्टर द्वारा बताया गया देखना इत्यादि। सभी से ध्यानपूर्वक

व्यवहार होता। प्रतिदिन की दिनचर्या को देखती और सारे दिन भर अस्पताल में रहती। कभी–कभी गम्भीर रोगी भी आ जाया करते। उस वक्त घर के सभी सदस्य डाक्टर पाण्डेय, डाक्टर शीलवती, डाक्टर संकल्प और माया आपरेशन कक्ष में अन्य डाक्टर और सहायक साथ व्यस्त रहते। बस रात को कार्य से मुक्त हो जाते तब डाइनिंग टेबल पर दिन भर दिनचर्या की चर्चा करते रहते।

भाग—18

जैसे—जैसे सुमन के दिन नजदीक आते जा रहे थे, वैसे—वैसे जमींदार गुलाब राय जी और सावित्री की खुशियों का ठिकाना नहीं था। सुमन का नौंवा महीना भी समाप्त होता जा रहा था। उसका इलाज रायबरेली के अस्पताल में चल रहा था। वैसे तो डाक्टर ने नार्मल डिलीवरी ही बताया था परन्तु आज जब सावित्री सुमन को चेक—अप के लिए लाई तब डाक्टर ने सिजेरियन डिलीवरी के लिए बताया और कहा पेट में बच्चा उल्टा है। इसलिए इसे लखनऊ ले जाकर किसी अच्छे अस्पताल में भर्ती करा दीजिए। इसके लिए सावित्री और गुलाब राय जी थोड़े अचम्भित हो गए। उन्होंने सूरज से सम्पर्क किया। सूरज द्वारा उन्हें डाक्टर ''पाण्डेय नर्सिंग होम'' में दाखिल करने के लिए बताया। जमींदार जी अपनी पत्नी के साथ सुमन को ''पाण्डेय नर्सिंग होम, गोमती नगर, लखनऊ में ले आए। यहाँ पर सभी उच्च कोटि के डाक्टर के साथ—साथ आधुनिक आपरेशन की सुविधाएं उपलब्ध हैं। सूरज भी अस्पताल पहुँच गया।

सुमन को डाक्टर शीलवती ने उसी वक्त दाखिल कर लिया। तुरन्त ही उसके सारे चेक–अप शुरू कर दिए। कुछ टेस्ट और अल्टरासाउण्ड भी किया गया। तभी डाक्टर ने माया को कमरे में बुलवाया और सुमन की अच्छी तरह से देख–रेख करने को बोला। डाक्टर के चेक–अप करने के पश्चात सावित्री देवी को अन्दर कमरे में बुलवा कर बताया कि केस थोड़ा कठिन है। पेट में बच्चा उल्टा है, आपरेशन करना पड़ेगा। इसके लिए हम लोग एक और डाक्टर को बुलवा रहे हैं और परामर्श करके आगे की कार्यवाही बताएंगें। तब तक सुमन को आई0सी0यू0 में रख रहे हैं। सावित्री देवी सुमन के साथ आई0सी0यू0 की ओर चल पड़ी। उसी क्षण माया भी आ गई और उसने सावित्री देवी के चरण स्पर्श करके पूछा, 'यह सुमन है न आपकी बहू।' ये अस्पताल हमारा ही है, जिस डाक्टर को आप दिखला रही हैं, वो मेरी सासु माँ हैं। सावित्री देवी ने एक लम्बी सांस लेते हुए अपने को आश्वस्त किया कि चलो यहाँ इलाज अब ठीक से हो जाएगा। इतने में जमींदार जी और सूरज भी आ गये। माया को देख कर सभी संतोष की सांस लेने लगे, उन्हें एक आशा की किरण नजर आने लगी। डाक्टर के आपस में परामर्श करने के पश्चात यह निश्चय किया गया कि सुमन का आपरेशन आज से आठवें दिन किया जाएगा। जिससे सुमन का बी0पी0 और ब्लड शुगर लेवल सही स्थिति में आ जाए और एनीमियां के लक्षण भी भलीभाँति से उचित अवस्था में आ जाए। इसके लिए माया ने तुरन्त ही उचित भोजन, कम नमक वाला, डाईट कंट्रोल और विटामिन से

भरपूर स्वस्थ आहार देना शुरू कर दिया। जिससे पर्याप्त बी–12 मिलने से शरीर की स्वस्थ रक्त कोशिकाएँ बनाने में मदद मिलेगी।

सावित्री जी वहीं बहू के पास अस्पताल में रुक गई। माया ने उनका भी रहने खाने–पीने की व्यवस्था कर दी थी। सूरज भी सुबह संध्या रोज आने लगा। रात को भी वो वहीं रुक जाया करता। एक दिन शाम को माया सुमन का चेक–अप करने के लिए आई तो सूरज को बैठा देख कर रज्जो के बारे में पूछने लगी। परन्तु सूरज ने उसके प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया।

भाग—19

रजनी की मानसिक अवस्था को देखते हुए करीब पाँच वर्ष हो चले थे। इन पाँच वर्षों में कई डाक्टरों का इलाज करवाया, परन्तु कभी तो रजनी में सुधार आता प्रतीत होता तो कभी—कभी अवचेतन अवस्था में कभी सूरज—सूरज को पुकारा करती। रजनी की अवचेतन मनःस्थिति का वह हिस्सा, जो चेतन जागरूकता के स्तर से नीचे काम करता है, लेकिन पूरी तरह अवचेतन नहीं होता। इस अवस्था में मनुष्य अपनी भावनाओं, इच्छाओं और पूर्व अनुभवों को संगृहीत करता है। वह जब भी चेतन अवस्था में होता है, तब उसका अवचेतन मन विचारों और भावनाओं को प्रकट कर देता है और वो उस क्षण पुनः मानसिक गतिविधियां विकसित करने लगता है। रजनी की भी पुरानी बचपन से सूरज के साथ जुड़ी स्मृतियों ने एक भय का रूप धारण कर रखा था। ऐसी स्थिति में रजनी का केवल एक मात्र केन्द्र था वह सूरज। वह आज भी समय के हिसाब से अभी पाँच वर्ष पूर्व की ही मनःस्थिति बनाये हुए थी। अब तो उसमें

अत्याधिक अवसाद, चिन्ता और विकार दैनिक जीवन में समस्या पैदा कर चुके थे।

रजनी के माता–पिता भी अब उसके साथ–साथ अपना मानसिक संतुलन भी खो बैठे थे। वो दोनों काफी उदास से रहने लगे। रजनी की माँ तो बस यही दोहराती रहती कि हमारी लड़की को किसी की नजर लग गई है। वो इतना प्रमुख हो गई थी कि टेलीविजन और अखबारों में उसकी आए दिन चर्चा होती रहती।

इन्हीं सब परिस्थितियों को देख कर एक दिन रजनी के माता–पिता ने प्रभाकर और छाया से कहा कि रजनी को किसी और डाक्टर को एक दफा दिखला दो, शायद उसके इलाज से ठीक हो जाए।

लखनऊ में वैसे तो बहुत डाक्टर हैं परन्तु किस डाक्टर के इलाज से मरीज ठीक होता है, यह इलाज पर निर्भर करता है। एक दिन प्रभाकर रजनी के लिए केमिस्ट की दुकान पर दवाई खरीद रहा था, तो केमिस्ट ने प्रभाकर से पूछा कि आप कई साल से यह दवाई ले जाते हो, क्या मरीज ठीक नहीं हो रहा है। तो प्रभाकर ने असमर्थता दिखाते हुए कहा कि कोई फायदा नहीं हो रहा है। तब केमिस्ट ने प्रभाकर को सुझाव दिया कि आप एक बार मरीज को डाक्टर पाण्डेय के यहाँ 'पाण्डेय नर्सिंग होम'', गोमती नगर में दिखा दीजिए। उनके यहाँ कई मरीज (रोगी) उनके उपचार से ठीक हो चुके हैं। इस पर प्रभाकर ने उसे धन्यवाद देते हुए आभार व्यक्त किया।

अगले दिन प्रभाकर छाया को लेकर डाक्टर पाण्डेय के यहाँ पहुँच गये। डाक्टर पाण्डेय को जब रजनी के बारे में सारा विवरण बता रहे थे, तब माया और सावित्री भी यह सब सुन रहे थे। सारा विवरण सुनने के पश्चात डाक्टर पाण्डेय ने रजनी को कल लाने को कहा और वक्तव्य दिया कि उसे कुछ दिन यहाँ देख–रेख के लिए रखा जाएगा, वो धीरे–धीरे ठीक हो जायेगी। इस पर सावित्री ने अपनी प्रतिक्रिया दी, उसकी शादी उस लड़के से कर देनी चाहिए। इस पर छाया ने कहा कि उसकी शादी हो चुकी है। बाहर आते हुए माया ने छाया से पूछा कि मरीज का क्या नाम है 'रजनी' छाया ने उत्तर दिया। यह नाम माया भी नहीं जानती थी, वो तो रज्जो ही जानती थी।

अगले दिन प्रभाकर छाया और रजनी के माता–पिता को साथ लेकर रजनी को डाक्टर के यहाँ ले आए। प्रभाकर रजनी को व्हील चेयर पर लेकर डाक्टर पाण्डेय के कमरे में ले जा रहा था। उसके साथ सभीजन साथ में थे। इतने जनों को देख कर गार्ड ने केवल दो ही व्यक्तियों को अन्दर जाने के लिए बोला। तभी माया केरीडोर में आती दिखाई दी। उसकी नजर रजनी के माता–पिता पर गई, वो नजदीक आई और पांव छूते हुए पूछा, 'चाचा–चाची यहाँ कैसे, किसे दिखाना है। इतने में उसकी नजर व्हील चेयर पर पड़ी। रज्जो अब बहुत कमजोर हो चुकी थी। माया को पहचानने में थोड़ी देर लगी। ''रज्जो, यह क्या हालत बना रखी है?'' माया सारा कुछ समझ गई क्योंकि वो

जानती थी कि रज्जो और सूरज एक दूसरे को बचपन से बहुत चाहते थे। रज्जो की माँ अपने आँचल से अपने आँसू पोछ रही थी। तो माया ने उन्हें सांत्वना दी और कहा चाची मत रोईए, अब रज्जो का इलाज मेरे ससुर करेंगें, वो ठीक हो जाएगी। तभी माया व्हील चेयर पर रज्जो के साथ सभी को लेकर अन्दर कमरे में दाखिल हुई। उन सबका माया ने अपने ससुर डाक्टर पाण्डेय को परिचय दिया और कहा कि ये मेरे गाँव के चाचा–चाची हैं। यह लड़की रज्जो है। डाक्टर पाण्डेय ने रजनी के सारे पर्चे और रिपोर्ट देखी और उसे एक स्पेशल रूम में जाने को कहा। उसके बाद उन्होंने माया को एक इन्जेक्शन को तैयार करने को कहा और बताया कि उसे कब–कब क्या दवाई देनी है।

माया ने रज्जो के माता–पिता का इन्तजाम उसी स्पेशल कमरे में करा दिया और रजनी, जो अवचेतन अवस्था में थी, उसे नर्स की सहायता से पलंग पर लिटा दिया।

माया सोच रही थी कि क्या विधाता की मर्जी एक ही अस्पताल में एक ही कहानी के दो पात्र अपने–अपने जीवन की कहानी लिख रहे हैं।

भाग—20

सुमन को आई0सी0यू0 में रखा गया था, जो कि चौथी मंजिल पर था। जहाँ कोई भी अन्दर नहीं जा सकता था। बस एक वेटिंग रूम था, जहाँ मरीज का एक सहयोगी बाहर बैठ सकता था। इसके लिए दिन भर सावित्री देवी बैठती थी और रात को सूरज आ जाता। परन्तु माया ने सावित्री देवी के लिए एक रूम इस फ्लोर पर करा दिया था। वहीं दूसरी ओर रज्जो का प्रबन्ध पहले तल पर स्पेशल रूम में कर दिया था, जहाँ मरीज के अलावा दो व्यक्ति और रह सकते थे। परन्तु अभी इन दोनों को आए आज दूसरा दिन था, जो अभी तक एक दूसरे के बारे में अनभिज्ञ थे।

माया सोच रही थी कि सावित्री देवी जी को रज्जो के बारे में सारा कुछ बता दे, परन्तु सुमन की गम्भीर स्थिति को देखते हुए वो अभी तक चुप थी। उसकी प्रथम प्राथमिकता थी कि किसी तरह से सुमन की डिलीवरी सही सलामत से हो जाए। समय—समय पर सावित्री देवी को आश्वासन भी देती रहती।

उधर रज्जो को पहले तल पर स्पेशल रूम में रखा गया था। डाक्टर साहब ने दो गोली सुबह, दोपहर और संध्या को देने को बताया था, जो माया स्वयं ही दे देती। डाक्टर के बताए इंजेक्शन, जो पहले मरीज को हर सप्ताह में एक बार दिया जाता है, जिससे उसके अन्दर चेतना जागृत हो जाती है। उसके व्यवहार में भी सामान्य स्थिति को देखते हुए या तो छः महीने तक या साल भर प्रत्येक महीने में एक बार दिया जाता है। इससे मरीज जल्दी ही सामान्य स्थिति में आ जाता है और उसकी मानसिक दशा में बदलाव हो जाता है।

माया यह अपने में आश्वस्त थी कि रज्जो तो एक दिन ठीक हो ही जायेगी, परन्तु सुमन की डिलीवरी के लिए दो और डाक्टरों को बुलाया गया था। तभी माया की माँ श्रीमती आरती देवी का फोन हाल–चाल के लिए आता है। बातों–बातों में माया, सुमन और रज्जों के बारे में माँ को बता देती है। यह सुनकर आरती देवी गहरी सोच में पड़ जाती है। यह निर्णय लेती है कि क्यों न लखनऊ जाकर दोनों को देख आए। रज्जो से उनका खास लगाव था।

आरती देवी अगले ही दिन लखनऊ आ जाती है और सीधे माया से मिल कर दोनों के बारे में पूर्ण जानकारी लेती है। पहले वो रज्जो के कमरे में जाती है। आरती देवी को देख कर रुकमणी अपने पल्लू से आँसू पोछते हुए, रोती हुई, आरती देवी से कहती है, ''देखो यह क्या हाल बना लिया है इस लड़की ने।'' आरती देवी रुकमणी को आश्वासन देते हुए कहती है

''चिन्ता न करो बहन, यहाँ से यह ठीक होकर ही जाएगी। माया के ससुर के इलाज से बहुत मरीज ठीक हुए हैं। थोड़ी देर रुकमणी के पास बैठने के पश्चात आरती देवी बोली, ''चलूं, मुझे अभी आई0सी0यू0 में भी जाना है। वहाँ सुमन और सावित्री जी से मिलने।'' आश्चर्य प्रकट करते हुए रुकमणी ने पूछा, ''क्या हुआ सुमन को, क्या वो भी यहाँ पर एडमिट है?''

तभी माया भी कमरे में प्रवेश हो गई और रुकमणी को सारी स्थिति से अवगत कराया। इतना जानने के पश्चात रुकमणी और आरती को लेकर माया सावित्री जी से मिलने ऊपर चौथे तल पर पहुँच गई। माया उन सबको वहाँ छोड़ कर चली गई। सावित्री उन दोनों को लेकर अपने कमरे में ले गई। सावत्री देवी को आरती देवी द्वारा रज्जो की हालत के बारे में पता चला और आश्चर्यचकित हो गई, कि रज्जो को आये यहाँ दो दिन से ज्यादा हो गये हैं और वो पाँच वर्षों से मानसिक रोग से ग्रस्त है। आरती देवी ने मौका देख कर रुकमणी ओर सावित्री जी को शुरू से अन्त तक की सारी दशा और स्थिति का विवरण बताया और यहाँ तक कह दिया कि सूरज और रज्जो एक–दूसरे को बचपन से चाहते थे, परन्तु रज्जो की प्रसिद्धि को देखते हुए सूरज ने रज्जो से नाता तोड़ दिया और इस पर रज्जो की मानसिक स्थिति में रुकावट होने से अवचेतन मन का स्तर चिन्ताओं, भावनाओं और स्मृतियों को धारण करके उसे रुग्ण अवस्था में पहुँचा दिया। उसकी इस दशा का जिम्मेदार पूर्णरूप से सूरज ही है।

सावित्री देवी यह सब सुन कर आश्चर्यचकित सी हो गई, वह किसे दोष दे, क्या समय को, समाज को या फिर सूरज को। मन को सन्तोष देते हुए वो सूरज को दोष न देते हुए परिस्थितियों को दोषी मानने लगी। हाँ, अगर सूरज उसे एक बार भी यह कहता कि उसे रज्जो से विवाह करना है तो वो जमींदार जी को मनवा लेती और विवाह करवा देती। उसे याद आया कि एक दिन लक्ष्मी ने भी उससे यही कहा था कि सूरज के लिए संगीत प्रेमी जैसी कन्या से विवाह हो तो ठीक रहेगा। परन्तु किन परिस्थितियों में सूरज सुमन से घनिष्ठता कर बैठा, यह तो सब अपने–अपने संस्कार है, जो होना होता है, वही मनुष्य को उस ओर ले जाता है।

आरती देवी ने सावित्री देवी की एकाग्रता को तोड़ते हुए कहा ''बहन यह तो समय–समय की बात है, जो परिस्थितियां करती है, वही हो जाता है।''

तभी रुकमणी यह सब सुनकर अब तक चुप थी, बोली, ''सावित्री जी आप दोषी न तो सूरज को समझे और न ही समय को। यह तो संस्कारों में प्रारब्ध कर्म ईश्वर ने जन्म के साथ दिए हैं, उसे मनुष्य को भोगना ही होता है। आप किसी बात की चिन्ता न करें। अब ईश्वर से प्रार्थना करें कि दोनों बच्चियां जल्दी से ठीक होकर अपने–अपने घर को राजी–खुशी जाए।''

तभी आरती देवी सबसे विदा लेते हुए कहने लगी ''अच्छा मैं चलती हूँ, मुझे अभी घर बछरावां जाना है।'' रुकमणी देवी भी अपने कमरे में एक बहुत ही उहापोह की स्थिति में गईं।

शाम ढलती जा रही थी। सावित्री देवी आज की घटना को लेकर चिन्तित अवस्था में बैठी हुई थी। कभी वो रज्जो के बारे में तो कभी सुमन के बारे में मन को चिन्तित किए हुए थी। भोजन की थाली भी आ गई परन्तु उसका मन भोजन ग्रहण करने का नहीं हुआ। वो सोचने लगी, यदि जमींदार जी को इस बात का पता चलेगा तो उनका मान–सम्मान का अनादर होगा और गाँव में यह बात सबको पता चलते ही उनकी तो अपमान के साथ नजर ही नीचे हो जाएंगी। तभी सूरज कमरे में प्रवेश करता है। माँ का भोजन यथावत पड़ा देख कर बोला, ''क्यों माँ, आज भोजन नहीं करा, क्या कोई चिन्ता में पड़ गई हो। सुमन की चिन्ता न करो, माया ने अभी मुझे कहा है कि डिलीवरी ठीक प्रकार से हो जाएगी। सुमन राजी–खुशी से घर जाएगी।''

सावित्री जी तो गहरी चिन्तन अवस्था में थी। सूरज की बात सुन कर वे निःशब्द सी थी, उनके पास कोई शब्द नहीं थे, जिससे वो अपने सूरज को कुछ उत्तर दे सके। सूरज के बार–बार माँ–माँ पुकारने से उनकी तंद्रा टूटी और उनके मुख से शब्द निकला तो.... तो वह था रज्जो! सूरज, रज्जो!

यह सुनते ही सूरज जैसे चौंक गया हो, माँ क्या हुआ है रज्जो को?''

''तू जानता नहीं है क्या?''

''नहीं माँ, मैं उसके बारे में कुछ भी नहीं जानता। मैं तो उससे करीब पाँच वर्ष हो गए, नहीं मिला।''

''कैसे मिलेगा, जब तूने उसका त्याग ही कर दिया है। जानता है, वो पाँच वर्षों से मानसिक रोग से ग्रस्त, अवचेतन अवस्था में पड़ी हुई है। गणेश और उसकी माँ रुकमणी जी भी यहीं लखनऊ में पाँच वर्षों से है और उसका इलाज में कोई भी फर्क नहीं पड़ रहा है। अवचेतन अवस्था में केवल कभी–कभी तेरा नाम सूरज–सूरज ही लेती है। बता तूने उसके साथ ऐसा क्यों करा। किस जन्म का बदला उससे ले रहा है।''

सूरज यह सब माँ के मुख से सुन कर स्तब्ध रह गया, वो निःशब्द हो गया। उसके पास कोई भी शब्द नहीं बचे थे जो अपनी माँ को प्रमाणित कर सके कि उसने जो कुछ किया वो सब ठीक और सोच–समझ कर किया, क्योंकि रज्जो तो उसके प्यार को छोड़ कर भास्कर के प्यार में पड़ गई थी, उसी से घनिष्ठ सम्बन्ध बना लिए थे।

सावित्री जी ने सूरज को भोजन करने को कहा और बताया जा रज्जो से मिल ले, वो नीचे कमरे में अवचेतन अवस्था में पड़ी है। उसका भी इलाज यहीं पर हो रहा है और हाँ माया से भी मिल लेना।''

माँ की बात सुन कर सूरज ने जल्दी से माँ के साथ भोजन करा और रज्जो को देखने पहुँच गया।

भाग—21

सूरज के कमरे में दाखिल होते ही रुकमणी देवी उसे देख कर अचम्भित हो गई। सूरज ने रुकमणी देवी के पाँव छूकर रज्जो की तरफ देख कर चौकन्ना रह गया। वो स्तब्ध रह गया, उसकी यह अवस्था देख कर। जिस रज्जो को उसने पाँच पहले देखा था, वो अब कमजोर और उसके चेहरे पर उदासीनता के भाव साफ झलक रहे थे। आज और पहले में रज्जो के चेहरे में बहुत बदलाव आ गया था। एक क्षण उसे लगा शायद यह वो रज्जो नहीं है, जिसे वह जानता है। ''रज्जो अभी सो रही है।'' रुकमणी ने बताया।

''बैठो बेटा, सुमन कैसी है।''

चाची वो पहले जैसी है।'' सूरज ने कहा। तभी दरवाजे पर प्रभाकर और छाया ने दस्तक दी। उन्होंने अन्दर आते ही सूरज को बैठे देखा, तो पहले तो चौक गए और सोचने लगे कि सूरज आज यहाँ का रास्ता कैसे भूल गया।

सूरज पहले तो दोनों को देख कर झिझका, फिर प्रभाकर से हाथ मिलाते हुए छाया को नमस्ते बोला। तभी उसने प्रभाकर और छाया को परिणय सूत्र में बंधने पर हार्दिक बधाई दी। रुकमणी देवी, जो पहले प्रभाकर और छाया से मिल चुकी थी। उन्हें देखकर आर्शीवाद देते हुए बैठने को कहा। इसी बीच रज्जो, जो काफी देस से सो रही थी, नींद से जाग गई थी। इंजेक्शन और दवाई के असर से उसमें थोड़ी–थोड़ी चेतना जागृत हो रही थी। अवसाद की स्थिति में भी कुछ–कुछ फर्क आ रहा था। रज्जो की नजरे कमरे में खड़े सब पर पड़ रही थी। माँ, प्रभाकर, छाया और सूरज, जो उन तीनों के पीछे की ओर खड़ा हुआ था, उसे पहचान न पाई। परन्तु अपनी आँखें पुनः बन्द कर ली। अवचेतन अवस्था में सभी बातों को सुन रही थी। सूरज ने जानना चाहा कि रज्जो की यह अवसाद की स्थिति कब से है। इस पर छाया पहले तो आक्रोश में आने लगी, परन्तु उसी वक्त प्रभाकर के इशारे से वो चुप हो गई। पर तभी रुकमणी जी ने सूरज को बताया कि करीब पाँच वर्ष हो गए हैं। जब वो भातखण्डे में पढ़ रही थी। छाया जो अब तक सब कुछ सुन रही थी, वो आज सूरज को सब कुछ सच्चाई बता कर उसकी गलती को उजागर करना चाहती थी। रज्जो के कानों में सूरज की आवाज स्पष्ट रूप से सुनाई दे रही थी। वो उसी अवस्था में सूरज ... सूरज पुकार रही थी। सूरज यह सुन कर चौंक गया। तभी छाया बोल पड़ी ''रज्जो अपनी इस अवचेतन अवस्था में सिर्फ तुम्हारा ही नाम को पुकारती है। उसके अवसाद का कारण तुम समझ रहें होंगें।''

प्रभााकर के इशारे से सूरज और छाया कमरे से बाहर आ गये। यह कह कर कि रज्जो को आराम की जरूरत है। सूरज, प्रभाकर और छाया के साथ नीचे रिसेप्शन (स्वागत स्थल) पर सोफे पर आकर बैठ गये। सूरज भी अब बहुत कुछ जानना चाहता था। वो यही सोच रहा था कि जरूर भास्कर की वजह से रज्जो की यह स्थिति हो गई है। तभी प्रभाकर ने समय और स्थिति को देखते हुए सूरज को विस्तृत जनकारी से अवगत कराने की कोशिश करी। छाया ने उसी वक्त सूरज को भास्कर के बारे उसकी गलत धारणा को बतलाया। रज्जो की घनिष्ठता केवल भास्कर से सिर्फ दिए गए पात्र की भूमिका को कर रही थी। प्रभाकर ने स्थिति की गम्भीरता को देखते हुए, छाया को इशारे से चुप कराया क्योंकि स्त्री की आदत होती है कि वो भावावेश में आकर बहुत कुछ ज्यादा अवांछित शब्दों का प्रयोग कर बैठती है।

प्रभाकर ने सूरज को बड़े प्यार से अपने पास बैठाते हुए पहले सुमन की तबीयत के बारे में पूछताछ करी। फिर उसने सूरज को ध्यानपूर्वक सुनने को कहा कि जो वो कहने जा रहा है, उसे तुम्हें वैसे तो आज से पाँच वर्ष पूर्व हमने बहुत कोशिश करी थी। रजनी भी उस वक्त तुम्हारे छात्रावास आई, परन्तु किसी कारणवश तुमसे न मिल सकी। लेकिन तुम्हारी यह सोच है कि रजनी की घनिष्ठता भास्कर से थी वो तो सिर्फ नाटक में दिए गए पात्र की भूमिका को केवल काल्पनिक रूप में, उस पात्र के संवादों, क्रियाओं और भावनाओं को दर्शकों

के सामने प्रस्तुत कर रही थी और तुम उसके इस प्रस्तुत किए हुए भूमिका को अपने शक के दायरे में एक सच्चाई के रूप में समझ बैठे। भूमिका तो एक पात्र को गहराई में उतार देती है, जिसे नाटक के कथानक का अभिन्न अंग बनाती है। जिससे दर्शक उस पात्र से जुड़ पाते हैं और कहानी को बेहतर ढ़ंग से समझ पाते हैं। परन्तु तुम्हारी सोच इसके बिलकुल विपरीत दिशा में थी। तुमने स्थिति को गम्भीरता से नहीं लिया। अगर लिया होता तो यह स्थिति आज जो पैदा हो गई, न हो पाती।

शक एक गम्भीर समस्या है क्योंकि यह विश्वास और सम्बन्धों में दूरियां पैदा करता है। इसके लिए उचित है कि मनुष्य को अपने संदेह को स्पष्ट करे और परस्पर एक दूसरे को समझे और बातचीत से समस्याओं का निवारण किया जा सकता है। परन्तु तुम्हारे अन्दर तो विश्वास में कमी होने के कारण तुमने अपने बचपन के सम्बन्धों में दूरियां बढ़ा दी। तुम में अज्ञानता की कमी के कारण तुम तनावग्रस्त रहते हुए तुमने अपने शक में नकारात्मकता पैदा कर दी। इस कारणवश रजनी को अवसाद की स्थिति में ला खड़ा करा। तुम्हें तो उस वक्त सुमन का सहारा मिल गया, जिससे तुम अपने प्यार को सुमन के रूप में पा लिया और तुम सामान्य स्थिति में आ गए। होना यह चाहिए था कि तुम्हें अपने आत्म चिन्तन द्वारा उस वक्त रजनी से मिल कर खुल कर बातचीत करके अपने भ्रम को दूर करना चाहिए था। एक–दूसरे को परस्पर समझने की आवश्यकता थी, जिससे एक–दूसरे पर भरोसा बढ़ाया जा सकता। परन्तु

तुमने अपने को इन सबसे दूर रखा। इसका कारण हो सकता है कि या तो तुम अपने स्वार्थ के कारण या फिर अपनी मन्दबुद्धि के कारण।

सूरज जो प्रभाकर के द्वारा दिए गए वचनों को अब तक सुन रहा था। अचानक वो यह सब सुन कर अपने में ग्लानि महसूस करते हुए, अपने को दोषी मानने लगा और अचानक उसके मुख से निकल पड़ा ''बहुत बड़ी गलती कर दी मैंने।''

इस पर प्रभाकर ने कहा कि प्रत्येक मनुष्य को अपनी गलती से सम्बन्ध तोड़ने पर पछतावा तो जरूर होता है और यह स्वाभाविक है। इस भावना से निपटने और अपने आप पर दया करना जरूरी है। जिससे अपनी वास्तविकता को स्वीकार करके अपने भविष्य पर ध्यान केन्द्रित करके अपनी गलतियों को दोबारा न दोहराने की कोशिश करनी चाहिए। जिस रिश्ते को आपने तोड़ा है, उसके बारे में सोचो और भविष्य पर ध्यान देना आवश्यक बन जाता है।

प्रभाकर ने आज सूरज के सामने न जाने कितने दिनों से जो भूमिका बना कर रखी हुई थी, वो आज सब कुछ अपने ज्ञान द्वारा सूरज को कह डाला।

सूरज इन सब वचनों को सुन कर निःशब्द सा हो गया और एक उहापोह मन से प्रभाकर को गले लगाकर उसकी आँखों में आँसू झलक आए। प्रभाकर और छाया के चले जाने के पश्चात सूरज अपनी माँ के कमरे के लिए चले जाने लगा।

प्रभाकर के दिए वक्तव्यों ने उसकी आँखे खोल दी थी। वो अपनी बुद्धि और सोच पर पछतावा कर रहा था। वो अपने को पूर्णरूप से रज्जो का दोषी मान रहा था। वो ईश्वर से यही प्रार्थना करने लगा कि रज्जो शीघ्र ही स्वस्थ हो जाए अपना नया जीवन शुरू कर सके, पहले की तरह।

यही सोच विचार करते हुए वो चौथे तल पर आ गया। आते ही रोता हुआ माँ से लिपट कर फूट–फूट कर रो दिया।

भाग—22

आज सुमन को आए आठवां दिन हो गया था। आज ही उसका ऑपरेशन होना था। एक दिन पहले सारे इन्तजाम कर लिए गए थे। सुबह चार बजे सुमन को लेबर रूम में ले जाया गया। करीब चार घण्टे पश्चात सुमन का ऑपरेशन समाप्त हुआ। डाक्टर शीलवती ने बाहर आकर सावित्री जी को लड़का होने पर बधाई दी। सावित्री जी और सूरज, जो ईश्वर की मूर्ति के पास हाथ जोड़े खड़े हुए थे, उनकी आँखों में खुशी की लहर दौड़ पड़ी। सूरज भी उत्साहित हो गया। रुकमणी और माया ने भी सावित्री जी और सूरज को बेटा होने पर बधाई एवं आर्शीवाद दिया।

थोड़ी देर पश्चात सभी डाक्टर लेबर रूम से बाहर आए। डाक्टर शीलवती ने सुमित्रा जी को इशारे से अलग बुला कर कहा, ‘‘सुमन के बारे में चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं है। बच्चा स्वस्थ हुआ है परन्तु सुमन पर ध्यान रखना पड़ेगा क्योंकि उसको ब्लीडिंग बहुत हो गई है। अभी कुछ दिन कमजोरी रहेगी। पर ध्यान रखना आवश्यक हो जाता है कि यह

ब्लीडिंग जल्दी ही रुक जाए। इसके लिए माँ और बच्चे को कुछ दिनों के लिए अस्पताल में रखना पड़ेगा।''

सावित्री जी यह सब कुछ सुन कर चिन्तित हो गईं और हाथ जोड़ कर ईश्वर से प्रार्थना करने लगी।

उधर रजनी को आए हुए भी करीब दस दिन हो गए थे। अब रजनी कई घण्टों तक पलंग पर बैठे–बैठे चेतन अवस्था में सबको अच्छी तरह सुनने और पहचानने लगी थी। रुकमणी और माया भी अच्छे स्वास्थ्य पर आश्वस्त हो चले थे।

सुमन की डिलीवरी को हुए अभी सात ही दिन हुए थे। उसमें अब सामान्य स्थिति धीरे–धीरे आ रही थी। जमींदार जी आज अस्पताल आए और खुशी के मारे स्टाफ को मिठाई बंटवाई। सभी ने उनको बधाई एवं बच्चे को आर्शीवाद दिया। जमींदार जी डाक्टर शीलवती से मिल कर उनका भी आभार व्यक्त किया और उनसे अनुरोध किया कि वो आज सुमन और बच्चे को घर ले जाना चाहते हैं परन्तु डाक्टर शीलवती ने इस पर अपनी अस्वीकृति देते हुए कहा कि अभी सुमन पर कुछ दिन और ध्यान देना आवश्यक है। घर पर उसकी देखभाल ठीक प्रकार से नहीं हो पाएगी। परन्तु जमींदार जी अपनी जिद पर आ गये और सुमन और बच्चे को अस्पताल से डिस्चार्ज करवा कर खुशी–खुशी अपने घर बछरावां ले आए।

गाँव में सभी जन जो भी सुनता वो जमींदार जी और सावित्री जी को बधाई देने आने लगा। सुमन की

देखभाल के लिए एक नर्स, एक आया, जो दोनों बच्चा और जच्चा की देखभाल किया करती। प्रतिदिन संध्या को एक लेडी डाक्टर पास के अस्पताल में चेक–अप करने के लिए आने लगी। इस सब के बावजूद सुमन का न तो ब्लड प्रेशर ठीक हो पा रहा था और न ही ब्लीडिंग ही रुक पा रही थी। लेडी डाक्टर जो प्रतिदिन आती, उसने भी स्थिति को भाँपते हुए सावित्री से लखनऊ की डाक्टर शीलवती से एक बार चेक–अप के लिए कहा। इस पर लेडी डाक्टर और सावित्री जी के पुनः आग्रह करने पर जमींदार जी ने कहा, ''अभी कल पण्डित जी को हवन पाठ के लिए बुलवाया है और संध्या को सभी को भोजन पर आामंत्रित किया है।'' सावित्री इस पर चुप सी रह गई। परन्तु जमींदार जी के आगे किसी की भी नहीं चली। सावित्री जमींदार जी को जोर देकर कह रही थी कि सुमन को आज ही अस्पताल ले चलना आवश्यक है क्योंकि उसके शरीर में खून का थक्का बनने के लक्षण दिखाई दे रहे हैं, उसके पैरों में सूजन आने लगी है। परन्तु जमींदार जी ने वक्तव्य दिया कि एक दिन में कुछ फर्क नहीं पड़ जाता। लेडी डाक्टर जी को दो दिन के लिए घर पर रख लो। अगले दिन जल्दी सुबह–सुबह लखनऊ ले चलेंगें।

सूरज ने गाँव चलने से पहले सोचा कि वह एक बार रज्जो से मिलता चले। अस्पताल पहुँच कर उसने रज्जो को पलंग पर अच्छी अवस्था में बैठे पाया। उसे देख कर सूरज का मन प्रसन्न हो उठा। उसी वक्त

''कैसी तो तुम'' से सम्बोधित करते हुए रज्जो के समीप आ गया।

''अच्छी हूँ।'' उसी क्षण रज्जो ने कुछ–कुछ उदासी के भाव दिखाई देने लगे। स्थिति की गम्भीरता को देखते हुए, सूरज ने रज्जो की माँ के बारे में जानना चाहा। जिससे उसका ध्यान कुछ और बातों में चला जाए, न कि उन दोनों के सम्बन्धों के बारे में। सूरज अब एक–एक कदम फूंक–फूंक कर रख रहा था। वो नहीं चाहता था कि अब कोई भी रज्जो के मन में आघात पहुँचे। इतने में रुकमणी कमरे में आ गई और सूरज को देख कर सुमन और बच्चे के बारे में पूछ बैठती है। अभी तक रज्जो जो अपने जीवन में पिछले कुछ वर्षों की बाते भूल चुकी थी क्योंकि मानसिक रोग की वजह से उसकी याददाश्त में कमी आ गई थी। अचानक सुमन का नाम आ जाने से रज्जो अपने मन में जोर देने लगी और पूछ बैठी, माँ सुमन कौन है, यह नाम मुझे जाना–पहचाना सा लगता है।''

''कोई है।'', रुकमणी ने बात को सम्भालते हुए कहने लगी। परन्तु सूरज ने सच्चाई को प्रकट करते हुए रज्जो को कहा, ''सुमन मेरी पत्नी का नाम है और उसने एक लड़के को जन्म दिया है इसी अस्पताल में।''

सूरज अपनी सच्चाई के बारे में सुमन के बारे में बताया, जिससे इसकी प्रतिक्रिया उसके चेहरे पर क्या होती है, उसे समझना चाहता था। परन्तु रज्जो यह सब सुन कर कोई भी भाव चेहरे पर नहीं लाई और सूरज रज्जो को धन्यवाद देते हुए और आभार व्यक्त करते हुए,

''अच्छा मैं चलता हूँ, गाँव पहुँचना है।'' रज्जो सूरज को निगाहें भर के सूरज को जाता हुआ देखती रहती है।

भाग—23

अगले दिन सुबह ही से जमींदार जी की कोठी में खूब सजावट हो गई। चारों ओर फूलों से सजा दिया गया। हलवाई सुबह ही से आकर तरह—तरह की मिठाईयां बनाने लगे। कुछ हलवाई तो भोज की तैयारी करने लगे। सगे—सम्बन्धी और गाँव के सभी जन हवन—पाठ के लिए एकत्र हो गए थे। पण्डित जी भी आज नए कपड़े, जो जमींदार जी द्वारा दिए गए थे, पहन कर आए थे। खास शहनाई वादन वाले लखनऊ से बुलवाए गए थे। पण्डाल में बच्चों और स्त्रियों का शोरगुल सुनाई दे रहा था। प्रत्येक आए हुए मेहमान के चेहरे पर एक प्रसन्न मुद्रा थी।

हवन—पाठ प्रातः दस बजे से आरम्भ हुआ, वो कहीं दोपहर को तीन बजे जाकर समाप्त हुआ। पण्डित जी ने आज दिल खोल कर अपने ज्ञान, बुद्धि द्वारा भजन पाठ और कथा वांची। सभी आगन्तुकजन भोजन के लिए पण्डाल में भोज के लिए आ चुके थे। गरम—गरम पूड़ी—कचौड़ी सिक—सिक कर हलवाईयों द्वारा भेजी जा रही थी। सभी साग—सब्जियां बहुत ही स्वादिष्ट बनी

हुई थी। प्रत्येक अतिथि अपनी भूख से कुछ ज्यादा ही खा रहा था। भोजन का स्वाद सभी जन ले रहे थे। तरह–तरह की मिठाईंयां भी टेबल पर रखी हुई थी।

जमींदार जी और सावित्री आए हुए सभी अतिथियों के स्वागत में लगे हुए थे। सूरज अपने सगे–सम्बन्धी और गाँव आए सभी मित्रों के साथ आनन्दित हो रहा था। उसी क्षण घर की आया बाहर की ओर घबराहट में भागती चली आई। वो सावित्री जी की ओर हाँफते–हाँफते बस इतना ही कह पाती है। ''बीबी जी सुमन बहू जी की तबियत ठीक नहीं है, वो बेहोश हो रही है।'' डाक्टर ने जल्दी से आपको अन्दर बुलाया है।'' इतना सुनते ही सावित्री जी घबराहट में जल्दी–जल्दी अन्दर की ओर भागने लगी। उन्हें भागता देख कर सूरज भी अचम्भित होते हुए अन्दर की ओर भागता है। दोनों अन्दर कमरे में जाकर देखते हैं कि सुमन को उल्टियां आ रही है और मूर्छा सी हो रही है। उल्टियों के साथ–साथ थोड़ा–बहुत खून भी निकल रहा है और उसकी सांस भी फूल रही है। उसने हाँफते हुए सूरज की ओर देखा। सावित्री जी यह सब देख कर घबरा गई और जोर से जमींदार जी को आवाज लगाई। उनकी आवाज को सुन कर सभी जन एकाग्रचित होकर कमरे से आई आवाज को सुन रहे थे। जमींदार जी शीघ्र ही अन्दर की ओर भागे और सुमन की हालत देख कर राम अवतार को आवाज लगाई ''अरे राम अवतार जल्दी से ड्राइवर को बोल, लखनऊ चलना है।''

थोड़ी देर में कार लखनऊ की ओर दौड़ रही थी। आए हुए अतिथियों को राम अवतार और जमींदार जी का छोटा भाई उन सबके आदर सत्कार में लगा हुआ था। ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे समय अपने आप में लम्बा होता जा रहा है।

अस्पताल में शीघ्र ही सुमन को एडमिट कर लिया गया। आई0सी0यू0 में सुमन का इलाज शीघ्र ही शुरू कर दिया गया। डाक्टर शीलवती ने सावित्री जी की ओर देखा और माया को ग्लूकोज ड्रिप, इंजेक्शन आदि लगाने के लिए कहा। सावित्री जी जमींदार जी को खोई हुई निगाहों से देख रही थी। जमींदार जी की आँखे नीची थीं और पहली बार उनके चेहरे पर चिन्ता के भाव झलक रहे थे। थोड़ी देर के पश्चात डाक्टर शीलवती आई0सी0यू0 से बाहर आई। आते ही सावित्री जी को देख कर बोली, ''जिस बात का हमें शक था वही हुआ। हम इसीलिए सुमन को यहाँ रोकना चाहते थे, जिससे यह स्थिति न आने पाए। परन्तु आप।'' कह कर वो निःशब्द सी हो गई।

सावित्री जी की आँखों में आँसू झलक आए। सूरज भी चुप सा हो गया। माया भी रुकमणी को लेकर सुमन का हाल देखने के लिए सावित्री जी के पास आई। उसने पहली बार जमींदार जी और सावित्री जी को इतना चिन्तित देखा और उनकी आँखों में आँसू झलक रहे थे। हालत की गम्भीरता को देखते हुए रुकमणी दोनों को सुमन के जल्द ठीक होने का आश्वासन देने लगी। सूरज कोने में निःशब्द होकर निस्तब्ध था।

अगले दो दिनों तक सुमन की हालत में कोई बदलाव नजर नहीं आता प्रतीत हुआ। सूरज भी दो दिनां से अस्पताल ही में अपने माँ–बाप के साथ ही रहा। प्रत्येक दो घण्टे में कोई न कोई डाक्टर आकर सुमन को चेक–अप करने आ रहा था। सुमन ने इशारे में सूरज को अपने पास आने को कहा और इशारों–इशारो से अपने बच्चे के बारे में पूछा। सूरज सुमन के इशारों को समझ गया और उसके माँ से बेटे को यहाँ बुलवाने को कहा। कहे अनुसार राम अवतार बच्चे को आया और नर्स के साथ बच्चे को लेने घर चला गया।

रुक्मणी द्वारा रज्जो को जब सुमन की हालत के बारे पता चला, तो वह अपनी माँ से उसके पास चलने के लिए आग्रह करने लगी। परन्तु रुकमणी किसी भी प्रकार का जोखिम नहीं लेना चाहती थी, जिसके द्वारा रज्जो के मस्तिष्क में असर पड़े। परन्तु रजनी में अब तक आत्म विश्वास में दृढ़ता आ चुकी थी। मानसिक रूप से सोचने–समझने मे स्थिरता बन चुकी थी।

माया द्वारा रज्जो ऊपर तल पर सुमन को देखने के लिए जाती है। वहाँ पहुँच कर माया और रज्जो, सुमन के पास आई0सी0यू0 मे आकर उससे बात करने की कोशिश करती है परन्तु सुमन इस स्थिति में नहीं होती कि वो कुछ बात कर सके। माया, रज्जो को लेकर वापस उसके कमरे में ले जाती है। जिससे रज्जो के मस्तिष्क में कोई असर न पड़े।

अगले दिन सुमन की स्थिति में गम्भीरता को देखते हुए डाक्टर उसे वेंटीलेटर पर रख देते हैं। आया,

नर्स के साथ सूरज के बेटे को अस्पताल में ले आते हैं। जमींदार जी उसको देख कर रो पड़ते हैं। सावित्री भी बहुत उदास हो जाती है। सूरज अपने पुत्र को सुमन के पास लेकर जाता है। पुत्र को देख कर सुमन की आँखे झलक आती हैं और वो सूरज को कुछ इशारा करती है। सूरज उसके इस इशारे को समझ नहीं पाता। तभी रुकमणी जी सुमन को आई0सी0यू0 में देखने आ जाती है। उन्हें देख कर इशारे से अपने बेटे और उनकी ओर इशारा करती है। तब वहाँ खड़ा सूरज सुमन की यह बात समझ जाता है। उसी वक्त माया द्वारा रज्जो को ऊपर कमरे में लाने के लिए कहता है। माया रज्जो को ले आती है। सुमन इशारे से रज्जो को अपने पास बुलाती है। सूरज अपना बच्चा सुमन की गोद में लिटा देता है। सुमन द्वारा किए इशारे से सूरज अपने बेटे को रज्जो की गोद में दे देता है और उसी क्षण सुमन चिर निद्रा में चली जाती है।

जमींदार जी और सावित्री जी यह दृश्य देख कर निःशब्द होते हुए सुमन के सिर पर हाथ रख कर दिवंगत आत्मा को ईश्वर से प्रार्थना करते हैं। रजनी कभी बच्चे को तो कभी सूरज की देखने लग जाती है।

(समाप्त)

लेखक

चन्द्र शेखर कपूर

''भूमिका''

'रजनी एक कथा' एक अत्यन्त ही रोचक एवं ज्ञानवर्धक कथा है। इसमें रज्जो एवं सूरज का बचपन ही से संगीत एवं नृत्य में शौक होने से उनका बचपन का प्यार कैसे सुदृढ़ हो जाता है। पता ही नहीं चलता। परन्तु रज्जो यानी रजनी अपने हुनर (नृत्य) की वजह से भातखण्डे, लखनऊ द्वारा प्रसिद्धि पाकर, एक उच्च कोटि की कलाकार बन जाती है। उसका नाम एक उच्च कोटि के कलाकार के रूप में लिया जाने लगता है। परन्तु सूरज जो उससे अत्यधिक स्नेह करता था, उसका रजनी का सहपाठी भास्कर का रजनी की ओर आकर्षित होना अच्छा नहीं लगता क्योंकि दोनों सहपाठी अपनी–अपनी भूमिका को नृत्य–नाटिका में बहुत अच्छी तरह से प्रस्तुत कर रहे थे। यहीं से सूरज रजनी से अलग हो जाता है और रजनी अपनी मनःस्थिति की वजह से मनोरोगी हो जाती है। सूरज का सुमन से विवाह भी उसकी मनःस्थिति को कमजोर कर देता है।

रजनी की मनोरोग दशा में किस प्रकार से उसके सहपाठी छाया और प्रभाकर उसका साथ देते हुए उसकी बचपन की सहेली माया द्वारा, जो एक प्रसिद्ध मनोचिकित्सक डाक्टर डी0सी0 पाण्डेय, जो उसके ससुर है, से उसका इलाज करवाती है।

रजनी अपने जीवन में किन–किन मोड़ से गुजरती है। यह सब इन उपन्यास को पढ़ने से ज्ञात होगा।

अन्त में यह कहना उचित होगा कि यह कथा अपने में एक प्रेम एवं घृणा लिए हुए है, जो कि प्रभाकर अपने उच्च विचारों द्वारा सूरज के जीवन में बदलाव लाते हैं और सूरज एवं रजनी को अपने जीवन में एक नया मोड़ मिल जाता है।

चन्द्र
शेखर कपूर